

कम्पूनिस्

कमूनिस्

शंकर बसु

हिन्दी अनुबाध
रघुन कुमार



साध्याकुलका

वर्णना, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित
बगला पुस्तक 'कमूनिस्' का अनुवाद

1980

©

राघव वद्योपाध्याय, कलकत्ता
कचन कुमार, नई दिल्ली

प्रथम हिन्दी संस्करण 1980

राधाकृष्ण प्रकाशन

मूल्य
21 रुपये
8 रुपये 40 पैसे

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2, असारो रोड, दरियागज,
नई दिल्ली-110002

मुद्रक
भारती प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

विष्णुय, कप्रजल,
गोविन्द और पश्चि की स्मृति में

हंस का पख और पर्वत की कथा

फिर एक दुश्मन ।

बिलकुल गभीरे मुकड़ पर । पीये लत्ते-सी पंख नू समत एक टांग हसके से बमीन को छूती हुई । हाथ की पाँचों उँगलियाँ कुछ करने के लिए कुमकुमा रही हैं । मामीपाड़ा से यत्रि की चिमन का कामा टीका कपाल पर लिये विगु पलक झपकते ही हबियार निकालकर पट्ट के भीतर ही काम तमाम कर देगा । सामा । जान साँसत य पड़ी हुई है । बदन पर उगे बालतोड़ फोड़े की-सी बक्रीली अनुभूति । धातु की तरह जमकती हुई दोनों आँसों से मोत को साऊ-साऊ सामने बेराकर वह मेंढक की तरह बड़बड़ा छोड़ रास्ते पर कूद पड़ने की तैयार रहता है । गौरा असल धातु का बना है । सड़क के गड्ढ छोटी-मोटी छमाँमें में पार करत हुए, पानी-कीचड़ को साँघरर जसकी भार बढ़ता जसा गया । गुल क बाए सये दाँतों और पापटिया स फूले मगूड़ों के भीतर बुधमन की पत्रनी हँसी घायब होने लगी । बुधमन का बेहरा अब साऊ हो रहा है—तराज के पीये की तरह नाटा, जपटा शरीर । तोंव के ऊपर रोषों से डँकी अँधेरे कुर् के तरह नाभि । नम बदन कमर के नीचे घारीदार मुँधी की माँठ ।

वह नजर सजसाइट से गोल की तरह घूमती हुई आकर गौरा के बेहरे पर बिरी थी । गोल छलनी की तरह गौरा को घेरकर बुधमन की नजर नाचने लगी । हू ऊ रोड से तेइस नम्बर बस्ती तक आने में गौरा अब तक तीन बार बुधमन के सामन पड़ा था । पहला नम्बर बुधमन एक बामपंयी

था। गोरा ने उसके सीधे-सपाट चेहरे की गैस कम्पनी की खजैली दीवार के पीछे सरकते देखा। उसके बाद दस-वीस कदम जेब में मुट्ठी डाले आगे बढ़ते ही, नारान के खड़े वालों को देख ठिठक कर खड़ा हो गया। कान के अन्दर गला हुआ गर्म सीसा डाल दिया है नारान ने सुकु को उठा ले गया है।

“कौन, बल्टू गिरोह ?”

“हाँ।”

“बूडो वगैरह को खबर की है ?”

“नहीं। मैंने नहीं देखा, ज़रा पता लगाना पड़ेगा, सुनी हुई बात है।”

“तू पता लगाकर सुकु के घर चला जा और एक-डेढ़ घंटे के भीतर फालतू ममाचार होने पर सब मिलकर, जाकर।”

“ठीक है।”

उमके बाद ह्यूज रोड के मोड़ पर और एक। गोरा का नाम-पता रटा होने पर भी वह गोरा का चेहरा नहीं जानता था, नहीं पहचानता था। इसलिए गोरा खोचर¹ की वगल में शान्त निरीह कदमों से निकल गया। खोचर इम समय भी पान चवा रहा है। और अब यह तीन नम्बर। तीन नम्बर के बीच की उँगली में स्टील की एक अँगूठी। अँगूठी में इसान के कटे हुए मिर की वनावट का नग।

ज़रा फुरसत थी। दो कदम पीछे हटकर, खोका की नज़र से नज़र मिलाकर वह दबे पाँव आगे बढ़ सकता था। वैसे दूसरी ओर से हवा भी हो सकती थी। गोरा को अब सब-कुछ जल्दी-जल्दी करना है। खुकु से भी भेंट करनी है। उसके बाद एक बार सुकु के वहाँ पता लगाना है। ए० बी० के लिए वक्त पर हाज़िर होना है। हाथ का काम निवटा लेना ही बेहतर है। तब गरम है तो रोटी मँक लो। वस। खोका की मिचमिची आँखों की पलकों झपकने से पहले ही गोरा की मगज़-मशीन ने क्षटपट हिसाब लगा लिया, एक बार सामने जाकर खड़े होने से ही भडक जायेगा। इससे बेहतर दवा और नहीं है।

1 गुप्तचर विभाग का आदमी।

गोरा हँसने लगा। खरा झुककर दो-तीन हाथ के छामने पर गड़े होकर। और बुझमन पस्त होन लगा 'मखे में हो न ?' फिर गोरा की हँसी। हँसी के झमाके के साथ उसके हाथ की उँगली मुड़ी और मुट्ठी लुमी। फिर बेतरतीब बीभी उँगलियाँ अपने आप उसके सीने और बने के सामन हिमने लगीं। पोटाम साफ़ कर देने वाली पुरानी दुबयनी बुझमन के नाक के मन्के बासों में से होते हुए उसके भीतर घुस गयी।

"बाय मँपाळ ?"

"न। रहने दो।"

एकदम जसा सोचा जा बीसा ही निकला। तेहन मन्बर बस्ती के नामे के ऊपर, बिरे बासों की मजान पर आबाड करते हुए गोरा उसके सामन लड़े होकर बाऊई हँस पड़ा। बुझमन ! यह भी भसा कोई बुझमन हुआ ? लोका की बाँधों उस समय तिलपट्टे के परों की तरह पड़कहा रही हैं। और इन बाँधों में ही एक दिन बाबल के बोरों के गोशाम में सामी घूम चट्टी बैली है। पोटाम की बैपुछ बदल्य बीबार !

समाचार भी जबरन जा साठ मन्बर बस्ती के अन्दर लोका ने बोशाम बमामा है। बाबल का गोशाम। तराब की भट्ठी के साथ यह नया ब्यापार शुरू किया है ! भरी चुपहरी में जाग मापक कर बना नेताओं के साथ चठना-बैठना बड़-बड़ों के साथ बास्ता रखना—लोका के उस समय पी-बारह थे। साठ मन्बर बस्ती के पेंबी को जबरवस्ती एक रात पकड़ कर बन्द रखा था। कामूदा के मोती शीम बस्ती के एक मन्बर कँडर दुकाईबा को पीटकर मलू बना दिया था। अब फिर से कामूदा के बिरोह के माब गहरी बोस्ती छन रही है। और उनरी माहन उस समय कटि में पीटा निबामन की थी। सब-कुछ जागबुस कर भी नारायदा में जॉक की तरह पकड़ लिया था। सब उस समय एक झण्डे के नीचे थे। सकल एक झण्ड के नीचे होन से क्या होमा ? गोरा के दल की आबसियत ता नारायदा के दम में ही है। एक पार्टी में रहकर भी नारायदा का एक दल या मोना बड, गोरा मन्दू को लेकर। खबर पाते ही बन्धियों में साथ झटपट निकलन आ। सारे-सारे आ गये। इड घटे में मोशाम साफ़। उचिन धूम्य मन्बर बाबल बिचकर गोरा ने कँड बस्ती लोका की हॉद पर रख

पुलिस के आते ही वहाने वाजी के लिए गोरा आगे बढ़ा था, “सौज करके तो आप लोगो को तार रहे हैं। अब यहाँ बखेडा खडा करने पर लाइन देखी है न, वस खिसक जाइये।”

समाचार पाकर होमियोपैथिक दवाओ का बक्सा छोड गोरा का वाप दीडा आया था। रिटायर होने से चार-पाँच साल पहले से ही उस आदमी ने बक्से को कसकर पकड लिया था। धुआँसे चश्मे के भीतर से फटी हुई आँखो से, छोटी-छोटी शीशियाँ टटोलते थे सिना थर्टि यह रहा उसके बाद कागज की पुडिया, नाखून के किनारे से बनाया हुआ मोड। सामने के दाँतो से कट-कट की आवाज करते हुए बीच-बीच में हिसाब-किताब करते थे बी० ए० पास करना वाप की ड्यूटी है, अब लाल झण्डा लेकर सडक पर घूमो मेरा क्या जाता है? लाल झण्डे से पेट तो नहीं भरेगा। दोनो हाथो से अपने छोटे ससार को ओझल करते हुए ब्रजेन वावू का आधा चेहरा ढँक कर मरजूवाला के दोनो सफेद होंठ उस समय हिलडुल उठते थे, “लो फिर शुरू हो गया।” सरजूवाला के चपटे माथे पर लगे सिन्दूर की ओर देख वे फिर कट कट की आवाज करते हुए दोनो दाँत बिठा लेते थे, “ठहरो तनड्वाह आधी होने दो—उम समय समझोगी।” गोरा के वाप की पेंशन का बकत आ रहा था।

वह आदमी गुस्से से लाल-पीला हो रहा था, “लैम्पपोस्ट से बाँधकर कोडे लगाने की जरूरत है। नेहरू ने कहा था न कि मुल्क आजाद होने पर।” भीड के अन्दर से टुकाईदा गर्म हो उठे, “हू आजाद। देख नहीं रहे है मुल्क का हाल।” धुएँ रग के चश्मे का शीशा हट गया। मिचमिचाने लगी ब्रजेन वावू की आँखें, “इस आजादी के लिए सात-सात साल जेल में काटे हैं, एक साल इनटर्न रहा हूँ। और देखता क्या हूँ, जिस आई० वी० अफमर ने टेररिस्टो पर जुल्म किया, वही अब डिप्टी-कमिश्नर बन बैठा है।”

सात दिन के अन्दर ही पार्टी ने नारान दा को चार्जशीट थमा दी थी। मुना, फ्रट का इमेज इस घटना में मक्खन की पुतली की तरह पिघल गया है। आखिर में पुनिस के साथ बस्ती के लोगो ने ज़रा दिल्लगी शुरू की थी। उसके बाद पुलिस ने तडातड, दनादन लाठी बरसायी। नारानदा को ओ० सी०

वान खींच कर ल जा रहा था। तभी सिगकल के मजदूरों ने भीप धेर सी। नारानदा उस समय दौ-चार मुमियनों के प्रेमिडेंट न। ओ सी० की रंगबाजी तक आपस आप बम गयी। और पुसिस की हुरकत देखकर सात नम्बर और तेहम नम्बर के पुराने बासिन्दो ने पुरानी कहानी सुनकर कुहरायी जा लडा गया वही राबन बना। यह तो वही का मुम है। और लोका वह तो अभी तक भी लार लाता है। अब मङ्कना छोड़ दिया है। लेकिन किसे पता फिर घाम में झोन कर दे। फिर तो बेमौक नकद पैसा भी पा जायेगा। रुपया और कार मिटान म लिए जाव का रिस्क क्या लेगा? बग्न मुट्ठी जब क अन्दर लाम्बी-पीसी हिमा बुलाकर खोला को ठंढा करके तेहस नम्बर की बस्ती क माने को मोरा ने एक छलान में पार किया। वसत में उसकी जेब में सिक्क पाँच मजदूर उँगलियाँ थीं। एक मुट्ठी। वानसट¹ सोना के पास न।

टेबि छिर पर गुडली का जाव और उस पर नीसी बवाई लगाये जमीन पर झाड़ू मगा रही थी।

सुखिया की बीमारी स मङ्की के होना ह्राव जमीन पर सटक बेजान हो गय है। ठंडी मिट्टी। बहवी की पीठ के ऊपर टेबि का पेट टैर रहा था। कद्दू के खोल की तरह पन् मानो इन्तारा बना रहा है। बिजय मिस्त्री की मङ्की का पेट देखते-देखते सुझाँदार स्लाई की बाबाब मुनते मुनते गोरा तेहस नम्बर बस्ती की ऐनिमिया मार्का मूय का बासिरी कतरा सुबिकर बसा गया। बपटा और लीडा रास्ता सीक-कबाब की तरह पतला और लीसा होकर तेहस नम्बर बस्ती की कतराबब सुगिनो स माँस के टुकड़ की तरह गुबा है। बीवार पर पीठ सटाए, बाड़-तिरछ पाँच फेंकते हुए कच्चे नाले से सटा लुका छिपा रास्ता पकड़कर आग बढते हुए पारा बमजाने में खोका की बास भूल बैठ। वह खोका जेस पुरमन की गिनती में नहीं लेता। डर मय बास उघेड़न वाली बिन्या बाक के पेट की तरह कपाम की बोनों नसाँ का फङ्कना—सब गुडू क लिए। बस्टू क्या बाकई उसे भुजासी बिखाकर उठा सँ गया और उसक बाब ठीह पर कीमा बना डाला? चोट चोट, चोट। मानो गोरा की परबन कुचल दी हा। ना

चुकु को फंसाना उतना आसान नहीं है, उसके सिर के पीछे भी एक जोड़ी आँखें हैं। अफवाह है, बिलकुल अफवाह।

नाले के किनारे का ही रास्ता चुना। रास्ता ही है। दोनों पाँव जोड़ते ही नाले में धुस जायेंगे। सावधानी से लम्बे-लम्बे कदम उस रास्ते पर पड़ने लगे। गन्दे कारखाने के सिर पर चढ़ी हुई अछूत धूप उस समय भी कच्चे नाले के किनारे हिचकियाँ ले रही थी। बिलकुल टेवि की तरह। सिर पर घाव नहीं हैं। घाव पर नीली दवा नहीं है। इतना ही फ्रक है।

गोरी-चिट्ठी एक विल्ली लत्ते की तरह लुढ़क गयी। लात जमाने को तैयार गोरा ने पाँव खींच लिया। विल्ली के वदन पर धीरे से छुआ-भर दिया। बेरग उंगलियों के नाखून हलके रोओ में घँस गये। अचानक लगा, बल्टू है? नहीं, इसे क्या कहते हैं, रस्मी से साँप का भ्रम या साँप से रस्मी का भ्रम? असल में विल्ली की आँखों की जोड़ी दीवार की दरार में से जल रही थी। जुगनुओ की तरह दमकती हुई। छुरी के फाल की तरह धूप झिलमिला उठती है। बल्टू की याद धक से आते ही शायद छुरी की चमक दौड़ आयी मनसनाती हुई विल्ली की आँखों में। बल्टू होता तो छुरी की आँखों से बोल फूटता, "क्या डर लग रहा है? याद है पचु की लाश गिरायी थी तुम लोगो के बाबू ने? यहाँ, ठीक इसी जगह।" वस, उसके वाद एक आवाज, उसके वाद दो टाँगें हवा में उछली।

ना। वह सब-कुछ नहीं। सिर्फ एक गोरी-चिट्ठी सफेद दिल्ली धिलाडी मिजाज से हट गयी। गोरा मन-ही-मन बड़बटा उठा, "धुस्म।" दीवार से सटकर, कन्नी खाती हुई पतंग की तरह एक तरफ़ गोता लेकर आगे बढ़ने लगा। बेलियाघाटा के घुएँ से स्याह आममान से ठीक उसी समय उतर आयी भूखी साँझ, गोरी विल्ली के पाँव के नाखूनो में छिपी नरम चमड़े की राल के भीतर से।

और एक वार फिर चमक उठा बल्टू का गोरा चेहरा। नाली के पानी में बल्टू की काली आँखें। एक जोड़ी भाँहे। वर्ग—दुश्मन। बाबू होता तो यही कहता और कटक उठी फ्रातिकारी हिंसा। पवित्र गभीर ढग से। अगर बल्टू का गोरा चेहरा अचानक वह अपनी पहुँच में पा जाये तो वाकई चमकती छुरी का फाल बल्टू में घँसा कर खुशी से क्या हिचकियाँ आयेंगी,

हाथ-पाँव के जोड़ लुप्त जायेंगे पार्टी के नारे लगाते हुए ? या एक के दुश्मन को दूरत कर वह सम्झे-सम्झे डग भरते हुए, आगबर की तरह घोषार के छेन् में स बम लाकर निकल जायेगा ? चुपचाप । अपनी आम बचात हुए तइस साम का घोरा सतरहु साम के उस राइक के सीन पर किसी भी तरह चुटना नहीं टिका सकगा । अँधेरी कितान कोमकर बही सइका ही ता पारा की जुठी चाय की प्यासी से चुस्की लेकर कहता वा 'निबन्ध लिख नहीं पा रहा हूँ गोरा वा । लिख बो न । साब ही उसके फूसे हँडों पर एक ठिरछी मुसकान जाय उठती थी ।

गोबरपट्टी क अन्दर से आता पड़वा । मुकु क लिए एक बैबनी । मन कुड़कुड़ा रहा है । इस इसाक की एक नम्बर जगाम की सात ईटों के बड़े छंद में से होकर वह गोबरपट्टी के भीतर से जाता । द्यूबबल क टूटे चकूतरे पर टेढ़ी कमर लिय कोई औघा गिरा हुआ है । एक-दूसरे को काट जाने गन्दी नानियों और झीरतों-मखों की हो-हो हँसी की यत्नाफाड़ आवाजों से निकलत हुए कोरा न मुकु के घर पर दोनों जायें उठान की हैं ।

मुकु क घर के छर्र पर सौंवी यंघ लिय कच्ची मिट्टी खिलसिजा कर हँस रही है । मुकु की भीबी की बोव में अन्दर के बच्चे की तरह बेसमुंडा । बच्चे क मुँह पर सदी की पपड़ी । उस पर बासी रोटी का साया कासा चकता । कामव रोटी अँधिरक बल गयी थी । उस असी हुई रोटी का चकता बच्चे के पेहरे पर । मुकु की भीबी क भोल पेहरे पर मरम अंका आपस मुसाकात मही हुई ?

भुरभुराती चारदीवारी । नाले के किनारे-किनारे मुकु के घर की दीवार बनी है । उससे जाये दीवार मानवाही की साइत तक चली गयी है । आधी-अँधेरी सीजनदार मिट्टी से ठंडी भाप उठ रही थी । धुँससा-धुँससा । मुकु के इसे गाल और बस्ट की भोंहें बनी काली आँखों की पुगली लेकर जाग उठीं । भू-गोबर, उपसे पनी दीवार क बरम पर मात पाड़ी की बुम्बुम् आवाज सुनते-सुनते मुकु का पुबसा शरीर मागो बेमान हो गया । उच्छ्वी । और इम बिसाम बेत के बीमार सीन पर बाकई कोई पबंत नहीं टूटा । यबर चुनकर ए० बी० निवारण और बाडू की बाँडें भट्टी की तरह जल उठेंगी 'यह मोय एक पबत के सपान है । इंस के पंघ

की तरह हलकी नहीं है। वीमारी भुगतकर या खून की कं से हुई मौत नहीं, या आत्महत्या नहीं। शहीदों की इज्जत ।" उसके बाद दांतों को भीचकर की गयी कठिन प्रतिज्ञा—खून का बदला ।

वाकई सुकु को वे उठा ले गये या नहीं, पता नहीं। ले गये होंगे तो निश्चय ही खात्मा। जब से बाबू के दोस्त को सी० पी० एम० वालों ने पीछे से लोहे की छड़ मारी थी और उनके पचु की गरदन की मज्जा एक भोथरी कटारी से निकाल फेंकी थी, तभी से ही राम्ता बहुत फिमलन वाला बना है। और दुश्मन जितनी तादाद में बढ़ रहे हैं, खून की गर्मी भी उतनी बढ़ रही है। चेहरा चमक उठा है। जुवान पर तेजी आ रही है। हथेली पर चूजे के नरम पेट की तरह चिन्दगी तिरभिरा रही है। एक छलांग के लिए। छलांग लगाकर गिरना चाहता है सड़े-गले रास्ते पर। सुकु के भैया मदना की औरत ओढ़नी ओढ़कर तिरछी होकर बैठी है। वच्चे के मरने के बाद से ही वह जाने-जाने को कर रही थी। फिर एक आ रहा है। सुकु की अम्मा ढिवरी की काली-सी लौ घुमा-घुमाकर बीडी जला रही है। बुडिया के दोनों गाल घँस गये हैं। महादेव झोला लेकर सोनं के घघे में निकला है। झोले के अन्दर चष्मे की डही, शीशा, तांबे का टुकड़ा, तार वगैरह हैं। रोजगार कुछ भी हो, लौटेगा एक पाइंट देशी चढाकर। ज्यादा-से-ज्यादा हाथ में आधा सेर आटे की एक थैली रहेंगी। मदना के दो-चार पैसे देने पर भौजी दाल लायेगी। आटे की पिढी उसी दाल में उबलकर पकेगी। इसे वे लोग कहते हैं पिट्टली। महादेव सोनार रात के डेढ वजे तक गाना गायेंगा, चिल्लायेगा, भैया-त्रापू को पुकारेगा। नहीं तो मार-पीट करेगा, दगा मचायेगा। एक वार गुस्से पर काबू न रहने पर सुकु ने बाबू को पीटा था। सुकु को लेकर शुरू-शुरू में बूढी अम्मा और भौजी छाती पीटती थी। मरद के नाम पर तो बही है। उसे यह कैसा नशा। पार्टी का नशा। अब अल्लाह के नाम पर छोड़ दिया है। सुकु भी दिन-भर पार्टी के काम में जुटा रहता है। रात-विरात आकर कलई वाली टूटी कटोरी लेकर नहीं बैठता, "दे भाभी, बहुत नीद लागा।"

"और एक वार भी नहीं आया?"

"ना, वेटा।"

बुढ़िया को बंभला भाती है पानी की तरह। कभी-कभार घरेसू बातचीत में बंभौके हिन्दी बोलती है। बर मं एण भी पैना नहीं है। मुकु की भी उस ओर मखर नहीं है। दिन रात पार्टी और पार्टी। इससे क्या पेट भरेया ? यह सब बड़े आत्मियों को फजता है जिनकी जेब में पैस हों। इधर बर में एक भी बाता नहीं है इस बात पर वह जान भी नहीं धरता। गोग की जब में चारमिनार के चूरे क असावा कुछ भी नहीं है। रहन पर विजयवा की सड़की को पकीड़ी खरीव देता। टबि की हियकी की आबाज बंभी भी सन पा रहा है।

फिर भी बकरंग उँवभियों की निकोटिन से पीभी पड़ी पारा म कमीज की जेब को बेमतलब खूँडन लगा। हाथ म उठ आयी पसीज कामर की एक कुगवी फ्ले-से काहज का टुकड़ा। अस्पष्ट म कई नाम सारीक। गोय भीर नहीं ठहरा। कामी टप मयी हवाई चप्पल पहन तखी से बस पड़ा। पीछे मुकु की माँ का कर्दा-पसी-सा चहरा लुसा ही रह गया ताज्जुब।

कटक लमा आज सोमवार ही है न। मोरा के लिए आजकल दिन सारीयें बहुत बढ़बढ़ जाती हैं। फिर कोई काम मेल-मुसाक़ात निपकर रखना मना है। एसा करने पर एकसाथ बहुत लोग कैम जायेंगे। कागज पत्तर पार्टी परताबेक कतई साथ नहीं रह्या। अब सभी कुछ पाव करक रखना पड़ता है। इसी लिए मन-ही-मन बुहरा रहा बा सोमवार रात के नौ बज ए० बी० आयेगा। बैठन को जमहू का बंबोबस्त मुकु करेगा। नीम सन के मोड़ पर चार सोगों के मिसन की बात है।

ए० बी० ठीक नौ बज आयेगा। पदम आयमा या बन के मुड़त ही उसमें स टप स उतरेगा कौन जान ? या पाइपगुमा गमी से थुपथुप निकल आयेया ? कुछ भी तय नहीं है। दुबमे-मतमे हाथ की कसई पर स्टोल की खंवीर से बँधी पड़ी के डायल में छाटी मुई के नौ के छीने पर लप म चुमने और बड़ी मुई के हसकी चाम स बारह पर सवार होने पर ही ए० बी० आयेया। स्की, जमरी हुई नाक और धुंमरासे बासों बासा चहरा उधर आयमा। खमीज फाड़कर। उस समय नौ बजेंगे पनके नौ।

आयमा मोड़ क मुहाम पर। जमहू बुरी है। जब-तब हमला हाठा रहता है। पूर बैसबाटा के तरह-तरह क गसी-कूपों म मुखर कर चार

रास्ते इस मोड़ पर आ मिले हैं। दूर से वही मोड़ दिख रहा है। खाली। अजीब तरह से खाली। पीछे विहारी मजूरों के फगुआ के मर्दाना नाच की तरह टेढ़ी शील लेन। और बायी ओर कीड़े की लम्बी टांग की तरह पतली गली। दायी-बायी नाक में रबड़ की वदवू आ रही है। धूल-कालिख-घुएँ के दाग। दो-एक आदमियों की धुंधली-सी छायाएँ सरकती जा रही हैं। बीरु, सुकु अवश्य ही आ गये हैं। लैम्पपोस्ट के नीचे मानो कोई फँलके बैठा हुआ है। सिगरेट की आग की चिनगारी जल रही है। अतहीन समुद्र में तैरते जहाजी सकेत की तरह।

एक-एक करके चारो ही इकट्ठे हुए हैं। आते समय इस गली उस गली से घूमते हुए आये हैं। आम सड़क से चलना भूमिगत जीवन से खारिज है। नाला, गली, दीवार और रेल-पटरी आने-जाने, चलने-फिरने के रास्ते हैं। आकर भी चट से जाहिर नहीं किया। गोरा ने चापाकल से चुल्लू भरकर पानी पिया था। उसके वाद कमीज के किनारे से चेहरा पोछ-पाँछ कर सारे इलाके पर अच्छी तरह से नजर डाली। दुश्मनों की तो कोई कमी नहीं है। झट से गरदन मोड़कर ब्रिज के नीचे की लोहे की बीमो को देखा। छाया की तरह कुछ जैसे सरसराते हुए हटा। तुरत पाँव के तलुए से सीने तक, नस-दर-नस खींचकर अपने को सख्त बना लिया। दो कदम पीछे हटकर मुकाबले के लिए तैयार हो गया। उसके वाद फालतू आवाज जान कर आश्वस्त हुआ। एक-एक करके वे चबूतरे पर आ बैठे। सीने का पिंजरा खाली करके साम छोड़ी। पहले इधर-उधर की बातें हुईं। बुडबुडाते हुए उदलने लगा।

भापणवाजी का दिन खत्म।

स्वर में एक स्फूर्ति का भाव था। गाल पर एक उँगली रखकर बैठा। गड्ढा पडा। हँसते ही उसके गाल पर गड्ढे पड़ेंगे। शांत पोखर के पानी में पत्थर फेंकने पर जैसा होता है, ठीक उसी तरह गाल का गड्ढा धीरे-धीरे भरता जा रहा है। चेहरे पर एक विजयी भाव जाग उठा। सचमुच आदमी अगर भापण और बहसवाजी से गुमराह न हो तो उसे कौन ठग सकता है? ऐसी एक निश्चितता लेकर ही उसने यह बात कही। बहसा-बहसी, भापणवाजी ढेरों हो गयी हैं। मूँह से फेन निकलने लगा है। और

फायदा हुआ है घंटा। सब अपने अपने जीने का धंधा कर रहे हैं। धंधा करत-करते ही आँस की पुतली छाड़ी रह गयी है। बिलकुल निरचल निस्पन्द। और जीना नहीं हुआ। हरी-सी नयी मूर्छे पास की तरह कँपाकर एक और न कहा 'बह बमाना जसा मया है।'

'हाँ। अब जान का सबास है।

"जान शब्द बहुत ही विचित्र है।

"बाऊँ।"

'बाहू नहीं मिलती।'

"अच्छा तू सोचा है क्या ?"

तब स कहीं कुछ कँस पया और बह उसे उगल नहीं सका। पत्नी काली आँखों की पुतली बहुत कोसिय से मानो कुछ खोजती है। मड़का सटीक लब्ध सोच रहा है जबकि बह उसे छू नहीं पा रहा है।

"क्यों रे कह तो ?

'न।

'क्या नहीं ?"

'कुछ नहीं यों ही।

बीसाडाला सुस्त रास्ता। मुहन्ते का रास्ता। साँस के झोंकों में कभी-कभी इक्के-दुक्के आदमी गुजरते हैं और दो-तीन स्लेप में सिगरेट पैस कम्पनी और एबर क्रीकटरी के मजूर साब झुण्ड में रोटी के लिए दौड़ते हैं या बहुत ही बेरम होकर डरे की ओर सीटते हैं। सीटत हुए मोड़ की दुकान से बो-पाँच पैसे की बालि छरीर मठा है कोई-कोई। हाथ फरत हुए बुझार मवाठा है। मोड़ के मोम खबूतरे के बदन स सटकर सभी को जाना पड़ता है। वे लोम पहले सुबह साम वहाँ बैठते थे। धुम्बक की तरह यह खबूत मभो भी जन्हे सीखतो है। फिर भी वे सोम पहले की तरह बह-उब नहीं जात। उतना समय नहीं है और फिर वे कालतू जोड़िम उठाने को तैयार नहीं हैं। अब जान का सबास है। आज आये बगैर चारा नहीं है इसी लिए। फिर भी गौरा ने बार-बार मना किया था "मरने की इच्छा हुई है ? जबाब में सोना हँसा था, वही विचित्र हँसी, "ए० बी० और कई ठीया नहीं आमत।

“इसी लिए ।”

“वह कुछ नहीं होगा ।”

इस आधे घंटे में ही पान की दूकान के बटू ने तीन-तीन बार होशियार किया है—मुझे जाने क्यों ठीक नहीं लग रहा है। सरक जाओ सब। बटू को डराने के लिए वे गला खोलकर हँसे हैं। और बटू जुबान सी कर बैठा है। गुस्सा आने पर उसके मुँह से वात नहीं निकलती। और आज बटू ने फोकट में सिगरेट भी नहीं माँगी।

चौरस्ते के मुहाने पर लक्ष्मीकातपुर और कैनिंग लाइन की पैसेंजर ट्रेन की रोशनी छिटकी। उसके बाजू में लाइन। बीच में इस चौरस्ते का तिरछा मोड़। और साथ चिपकी हुई वस्ती। मोड़ पर बस का रास्ता और यो ही एक रास्ता आड़े आ मिला है। मोड़ पर गैस-वस्ती नहीं है। डिवरी वस्ती का जमाना कब का बीत गया है। अब ट्यूबलाइट। ट्यूबलाइट के खम्बे के नीचे सीमेन्ट का पलस्तर किया हुआ गोल चबूतरा। वहाँ खड़े होकर पहले स्ट्रीटकानॉर मीटिंगें होती थी। भँदा मछली की तरह प्रणवेश ‘मुल्क में सेपिटपिन बन रही है, लिहाजा उद्योग में हम पीछे नहीं हैं’ कहने के बाद नकियाते हुए चिल्लाता था ‘बदे माताराम’ और टिप्पणी चर्चा करने की कोशिश करता नाटा मास्टर, “तो फिर चूतड में सेपिटपिन चुभोकर ही मुल्क आगे बढ़ जायेगा, क्यों ?” कोई कुछ नहीं बोलता था। कुछ कहने की किसे गरज है। चुनाव से पहले इस तरह का ज़रा कांप्रेस-कम्प्युनिस्ट होता ही है। अब सब चूहे के बिल में घुसे हैं। यहाँ तक कि भेडी¹ के किनारे तोड़कर घोर वर्षा में गरीब-गुरवा पर दुख-दर्द की गाज बनकर तोप की तरह जब बाढ़ आयी थी तो रिलीफ की एक बूंद भी उन्हें नहीं छू सकी थी। जो भी ज़रूरत पड़ी, गोरा के दल वालों ने ही ज़ुटाया।

ट्यूबलाइट की हलकी रोशनी उनके चेहरे पर गोल होकर गिर रही है। लैम्पपोस्ट को चारों ओर से घेरकर वे लोग फैलकर बैठे हैं। रोशनी घुंघली-सी। कँसा माया का-सा भाव। माया का जाल। उनके शरीर का

1 छिछली तलैया, जिनमें मछलियाँ पाली जाती हैं।

बुछ हिस्सा स्पष्ट निकाता है। बाइनी घुँघसा-सा। हमकी रोजगारी में दिखायी नहीं पड़ता। सोना के सपनीस बेहरे पर सपन का जास बिछा है। गुनगुनाते हुए कोई पंक्ति गाता है।

हवा गोरा क भूर बासों पर हमसा कर रही है। कपाम पर कटे का लम्बा बाघ फ्रीकी रोजगारी में जमक रहा है। पतली जमकी लंबई रग। बाघ एक मखर में तबि के फाम की तरह जग रहा है। गोरा टॉर्न मोड़कर घेठा है। पयसी हवा की हृज्जत जम रही है। कमीज के बटन पुर चुसे हैं। घास की तरह रोएँवार सीन से पसीना सोख रहे हैं हवा के झंके। घोंकनी की तरह सीना ऊपर-नीच हो रहा है। एक पम्पिक-बस बुजरी। मानो बेमम स। दोनों आँसु से रोजगारी का छम्बारा छोड़ती हुई। उसके पीछे चूना-सुरखी की दुकान की ह्टिँ ठर आयीं। और बीबार पर योसिमो के नइके। कई दिन पहले बीछारें बरसी थी। हटते-हटत घोरा बीबार पर पीठ टिकाकर लड़ा हो गया था। मिनामा ठीक ही सबाया था। बुबो ने हाँक सपायी थी। आसी आबाज। उधी से चीक उठा। गटे बहता था "कंपसून। एक नियसन से ही साफ़। गटे अभाय की आजकल जय-तब याद आ जाती है। सीना भारी हो उठता है। आँसु बसती है। मन में मानो आम का गोसा जेँस जाता है। घोरा का उस समय होसा नहीं रहता। उदास हो जाता है। छाठी जँवसी के पोरे पर सुरसुरी पीटी की तरह मीस बसती है।

'मुस मे बर्ग-यूणा नहीं है।

'कैए समसा ?

बेख नहीं रहा किम तरह बँन से बीठा हूँ।

'इसका नाम बँन स बीटना है ?

'गटे की बात सोच।

'गट ?

'हाँ गट। उस तरह गौँहिँ सिकोइन की बजा बात है।

'गट का साहस म्यान से बाहर हा पया था।

बेस ! एक बात याद रखना बारम-बादम से इमान हो जा होता है।

“तुम खुद जानते हो, कह क्या रहे हो।”

“इसका मतलब ? नन्टे हठी था ?”

“गोरादा।”

“क्या ?”

“तुम माथा ठडा रस नहीं पा रहे हो।”

“नहीं, जल रहा हूँ। इतना होने पर भी ठडा रहे तो वह इसान का माथा नहीं रहेगा।”

“तो ?”

“मुर्दे की सोपडी हो जायेगी ?”

बायी तरफ कॉर्डे लाइन। टिकिम-टिकिस करके एक मालगाडी चली गयी। ओवर ब्रिज की बीमे कराह रही हैं। जाने कैसी मरोडने की आवाज है। और ब्रिज की फाँक से इस्पात के फाल की तरह पटरियाँ आधे-अधेरे की केंचुल उतार हिंसा से चिलक उठी। मन्टू ने मुँह पर रोक लगायी। अचानक वह चुप मार गया। मन्टू का हाथ ठुड्डी की दाढी छूते हुए खेलने लगा। उसने सोचा—वात न बढ़ाना ही बेहतर है। ताजा कच्चा घाव अभी भी कम नहीं हुआ, सूखना तो दूर की बात। कभी सूखेगा या नहीं, किसे पता। कही एक आवाज हुई। दबी हुई। वीरू और मन्टू ने कान खड़े किये। वीरू खम्बे पर बदन छोडकर रख जानने की कोशिश करने लगा। सोना ने कोई घास नहीं ढाली। यो ही वह कम परवाह करता है। असल मे वह सूँघकर समझ लेता है। वीरू की बडी आँखें गहरे ध्यान मे बन्द होने लगी हैं। जरा कुछ जानकर ही ढीला होकर बैठा, “कुछ नहीं।”

“वाँस ?”

“हां।”

सोना का मुँह चिडविडा उठा, “कही अन्त राखाल की गाय के झुड की तरह न हो।”

“यानी। राखाल तो झूठमूठ लोगों को इकट्ठा करता था।”

“इतनी उच्चपिच करने पर ऐसा ही होगा।”

वीरू की पतली मूँछो की रेखा विरक्ति से एक ओर छिटक गयी। गरदन उछालकर वह उठ खडा हुआ। दोनो हाथो से पैट के पीछे लगी धूल

भाड़ी। तहर धीरे धीरे धूम-भाबकड़ से घँटता जा रहा है। चीन के पिन्गरे भर हवा भी नहीं खींची जाती। बीरू थप्पस बसीटते हुए सिगरेट खरीदने के लिए ओड़िया की दूकान की ओर चला। दूकान के सामने काई लगे हुए चबूतरे की तरह कल्प धुन के साथ लगे जिसे पत्थर पर अशोक स्तम्भ छाप उस पैसे का सिक्का चट-से फँका। अशोक स्तम्भ के पहिये के नीचे कुचली जाकर, कर्लिय राज्य का रक्त मज्जा सड़-भाबकर इतने दिनों में ओड़िया की दूकान के पत्थर की तरह सक्त मऊरत से जम गये हैं।

ओड़िया की दूकान के कबूतरखाने की बीवार पर शरीर के सारे उमारों को बिलाठी अभी-अभी नहायी औरत की लसधीर बासा एक कैनेडर मूक रहा है। सिगरेट निकालते हुए बगटू ने कहा 'बीरूवा !'

'क्या ?'

'बरा सरक बाबो न।'

'क्या ?'

'कम माया था इती टाइम।'

'उसके बाद ?'

'पूछवाछ कर रहा था।'

'अच्छा।'

'पयादा देर तक मत रहो।'

हॉटों के बीच सिगरेट घुसेड़कर बीरू की गियाह ने आसपास चारों ओर देख लिया। पानी की मुमटी पर बसती रस्ती मुभावै हुए मूक रही है। रस्ती की ओर एक नजर डाल बीरू ने चसना शुरू किया। यहाँ से चसाने पर सिगरेट चटपट खत्म हो जायेगा। रास्ता बहुत ही खामी-खामी भग रहा है। रह रहकर दो-एक रिक्शों की टुंगटीय भी आबाब जम रही है केवल। बीरू बदन झाड़कर चल रहा था। द्यूबसाइट के नीचे सैम्प पोस्टर के पसस्तर किये घोस-से चबूतरे के पास जाकर ठेकता हुआ चाड़ी के तीन जनों के बीच बैठ गया 'मगटू बियासलाई दे ! सिगरेट को दोनों टैबलियों के बीच खींचन मया।

मगटू ने झुककर केब से दियासलाई निकाली 'दे।'

सोना ने एक बड़ी जम्हाई ली। दो आँकें अपने आप बन्द होन समी

“तुम खुद जानते हो, कह क्या रहे हो।”

“इसका मतलब ? नन्टे हठी था ?”

“गोरादा !”

“क्या ?”

“तुम माथा ठडा रख नहीं पा रहे हो।”

“नहीं, जल रहा हूँ। इतना होने पर भी ठडा रहे तो वह इसान का माथा नहीं रहेगा।”

“तो ?”

“मुर्दे की खोपड़ी हो जायेगी ?”

बायी तरफ काँड लाइन। टिकिम-टिकिस करके एक मालगाडी चली गयी। ओवर ब्रिज की बीमे कराह रही है। जाने कैसी मरोडने की आवाज है। और ब्रिज की फाँक से इस्पात के फाल की तरह पटरियाँ आधे-अधेरे की केंचुल उतार हिंसा से चिलक उठी। मन्दू ने मुँह पर रोक लगायी। अचानक वह चुप मार गया। मन्दू का हाथ ठुड्डी की दाढी छूते हुए खेलने लगा। उसने सोचा—वात न बढाना ही बेहतर है। ताजा कच्चा घाव अभी भी कम नहीं हुआ, सूखना तो दूर की बात। कभी सूखेगा या नहीं, किसे पता। कही एक आवाज हुई। दबी हुई। वीरू और मन्दू ने कान खडे किये। वीरू खम्बे पर वदन छोडकर रख जानने की कोशिश करने लगा। सोना ने कोई घास नहीं डाली। यो ही वह कम परवाह करता है। असल मे वह सूँघकर समझ लेता है। वीरू की बडी आँखें गहरे ध्यान मे बन्द होने लगी हैं। जरा कुछ जानकर ही ढीला होकर बैठे, “कुछ नहीं।”

“बॉस ?”

“हाँ।”

सोना का मुँह चिडविडा उठा, “कही अन्त राखाल की गाय के झुड की तरह न हो।”

“यानी। राखाल तो झूठमूठ लोगो को इकट्ठा करता था।”

“इतनी उचपिच करने पर ऐसा ही होगा।”

वीरू की पतली मूँछो की रेखा विरक्ति से एक ओर छिटक गयी। गरदन उछालकर वह उठ खडा हुआ। दोनो हाथो से पैट के पीछे लगी धूल

झाड़ी। शहर धीरे-धीरे धूल-मसकड़ से ढँटा जा रहा है। सीन के पित्रे भर हुआ भी नहीं खींची जाती। बीरू चप्पल घसीटते हुए सिगरेट खरीपन के लिए ओड़िया की बूकान की ओर चला। बूकान के सामने कोई मने हुए चबूतरे की तरह कल्प बूने के दाग मये बिसे पत्थर पर अशोक स्तंभ छाप दस पीसे का सिक्का चट-से फेंका। अशोक स्तंभ के पहिये के नीचे कुचली जाकर, कसिय राज्य का रक्त मन्त्रा सड़-मलकर इतने तिनों में ओड़िया की बूकान के पत्थर की तरह सकून नकरत से जम गये हैं।

ओड़िया की बूकान के कबूतरकान की बीबार पर शरीर के सारे उभारों को दिखाती अभी अभी नहामी औरत की उसबीर जामा एक कनेण्डर झून रहा है। सिगरेट निकालते हुए बटू ने कहा बीरूया !

“क्या ?”

“जरा सरक आओ न।

क्या ?

“कल आया था इसी टाइम।

उसके बाद ?

“पूछनाछ कर रहा था।

“अच्छा।”

“बयादा देर तक मत रहो।”

हॉटों के बीच सिगरेट घुसड़कर बीरू की निगाह ने श्रावपास चारों ओर देख लिया। पानी की गुमटी पर जलती रस्सी सुभाते हुए झून रही है। रस्सी की ओर एक नजर डाल बीरू न चमना शुरू किया। यहाँ से चलाने पर सिगरेट चटपट खरम हो जायेगा। रास्ता बहुत ही ख़ासी-ख़ासी लग रहा है। रह रहकर दो-एक रिक्शों की टूँटों की आवाज जग रही है केवल। बीरू बदन झाड़कर थल रहा था। द्यूबलाइट के नीचे सैन्य पोस्ट के पसस्तर क्रिये गोल-से चबूतरे के पास जाकर ठँसता हुआ धाड़ी के तीन जनों के बीच बैठ गया ‘मग्टू दियासलाई दे।’ सिगरेट को दोनों रँगमिर्नों के बीच कोंसने भवा।

मग्टू ने झुककर खेव से दियासलाई निकाली भे।

सोना ने एक बड़ी जम्हाई ली। दो आँखें अपने-आप बग

थी। उसने पलकें खीच रखी हैं। वीरू का गला अचानक तेज हो गया, “जानते हो न पचाननतल्ले के उस ओर झमेला हुआ है, हम लोगो के सुकु को वेधडक पीटा है।” सोना ने अकुश के साथ गरदन झुकाकर कहा, “हाँ।” वीरू की बात का सिरा मन्दू ने पकड़ा, “इसी लिए केलो दा ने मुझे बुलाकर कहा, ‘अरे भाई हम निरामिथ मध्यम वर्ग के हैं। यही मव सात-पाँच वड-वडा रहा था।’ अमल मे पचाननतल्ले का एक्शन अगर यहाँ हो, खाल बचाने का घधा।”

वे लोग वारी-वारी से हाथ बढ़ाकर सिगरेट पी रहे थे। मन्दू ने अत मे ली। वह सूट्टा मारने मे उस्ताद है। मन्दू ने राख झाडी। वीरू ने झपट्टा मारकर सिगरेट का टुकडा ले लिया, “सुकु को कुछ हुआ तो बल्टू की लाश।”

सोना “अपनी बकबक ज़रा बन्द कर।”

मन्दू “मुहल्ला अभी तक ठडा था, अब।”

गोरा “वर्ग-सघर्ष बल्टू मेरा छात्र था, शात निरीह लडका।”

वीरू “अब देखो न जाकर। पाँव मे हर्टिंग शू, जेव मे छह गोलियो वाला पिस्तौल।”

मन्दू “हैजा, चेचक और महामारी की तरह यह सघर्ष फैलता जा रहा है।”

गोरा “उन लोगो ने तो हमारे घर तक हमला किया था। किताब वगैरह खीचकर ले गये, पिताजी को धमकाया।”

सोना “वैमे कुछ भी कहो, नाले के पार की उनकी लाइन्नेरी मे आग लगाना ठीक नही था।”

वीरू “वैसे ठीक है।”

गोरा “नही, यह कतई ठीक नही हुआ। इसे सैद्धांतिक लडाई नही कहा जाता।”

वीरू कुलबुला उठा “मशोधनवाद अभी भी मुख्य दुश्मन है। उनके साथ बहम बन्दूक की नली से होगी।”

सोना “ठहर। देखो गोरादा, हम लोग तो उनके साथ लडना नही चाह रहे हैं। मगर सुकु को वे वाकई उठा ले गये हों तो ?”

बीरू 'तो क्या, मोस पार्क की तरह एक्कल स्वर्गोंड बायेया बस ।"

मन्दू अचानक सीधा होकर बैठ गया । आँसू धीरे-धीरे मुँह में घाय की पिनपारी । बायें हाथ से नाक की छोर और ठोड़ी से पसीना पोंछ लिया 'बाकई । मोसपार्क की बात याद है । भास झंके को माँ-मीसी की गन्धी मासियाँ निकल गयी थीं । हिम्मत देख सब टाजमूब में आ गये । अपने आप कहा 'हैं सोना ने माँ का दूध पीया है । काँचिरी मस्ताम लोग तीन हफ्ते तक मुहम्मद म घुस नहीं पाय । अंत में क्षमा वही रह माँकी तभी न । बीरू के मुँह से फूलझड़ी फूट रही है । हुस से एक तिरपास डंकी जारी निकल गयी ।

कमोबा के साथ सोना की पहले बहुत प्यार-दोस्ती रही हैं । रिस्ता भात्र का तो नहीं । बही सोना जब हाछरीट पहनकर रेल की पटरियों पर पाँव रखते हुए स्कूल जाता था तभी से कमोबा के साथ उसका मारना है । उसी दूँते पर सुबह शाम बाय के बक्त सोना धार लगी बीबार पर पीठ टिका पाँव कँसाकर बैठा रहता था । ब्यामला पतली-दुबली मीनू सोना के साथ बसकर एक दिन ह्यूब रोड के मोतिया की बीबी के पास आयी । सोना मोतिया के साथ पोकर के किनारे बातचीत कर रहा था । वे दोनों बरत म होने वाली बातों का सिफसिमा जारी रखते हुए हवा की तरह बस्ती की पतली गली में लौ गयीं । घोर को तभी लगा था 'बाह ! बहुत अच्छी है ।" उसने पीछे से नहीं पुकारा । उन दोनों की धुँधली छाया आँखों से ओझस हो गयी । उसके बाद एक दिन खिदिरपुर के बुनूस म जाते हुए पहला मास' बार्ज करने से कुछ पहले सोना ने कहा था 'जानते हो मीनू पाँव जाना चाहती है ।"

हुस से एक जारी निकल गयी ।

'साला स्मगलिंग का मास ।"

"तिरपास से डंका हुआ है इसलिये ?

'बिसकुल नहीं ।"

"फिर ?

“ड्राइवर को मैं पहचानता हूँ। मैंकनामारा के कलकत्ता आते समय मैं पकड़ा गया था न।”

“तो क्या?”

“तभी इस ड्राइवर से बातचीत हुई थी। वे लोग नकली दवा का कारोबार करते हैं।”

“इसी लिए इतना सीना तानकर निकल गया।”

“जैव मे पूरा मन्त्रिमडल जो डाल रखा है।”

सोना ने जीभ निकालकर होठ गीले किये। उसके वाद मुँह के दोनों तरफ से होठो को खींचने लगा। जाड़ा है। गर्मी के दिन पूरे हो गये। असल मे सोना की यह आदत बन गयी है। जब-तब होठो पर जीभ फेरता है, मुँह विकृत करके। सोना की जीभ ने चक्कर लगाया, “पहले कहने से क्या हो रहा था?”

“क्यो?”

“बन रहा है?”

“रोकता?”

“जरूर।”

“फायदा?”

“स्कूल मे वम मारने से अधिक ही होता।”

मुट्ठी हिलाकर सोना ने बात कही। मन्टू का खयाल है, वूर्जुआ शिक्षा-विक्षा उठा देना ही ठीक है। मगर तर्क से मुकाबला नहीं कर सकता, इसी लिए चुप रहता है। सोना की बात उसके सीने पर छन से लगती है। साथ-ही-साथ चेहरे का भाव बदल गया। गोरा ने दवे स्वर मे डाँट लगायी, “मोना।” सही डाँट नहीं, ज़रा अपनेपन का पुट लिये हुए थी। असल मे उन लोगो ने उसे मानर खा है। कामरेड गोरा, कहते-कहते चुप। दो हाथ जमा देने पर भी कोई आपत्ति नहीं है। सोना तो कहता है, “गोरादा गलती नहीं कर सकते। मन्टू इतनी ज्यादाती पसद नहीं करता।” गुरुडम। डाँट खाकर वह चुप मार गया। गोरा का चेहरा साधु-सत की तरह हो उठा, “तू कमुनिम है न।” वाकी आगे कहना नहीं पडता। गोरा की आँख की पुतलियो में सोना बात को तैरते देखता है—हमें धैर्य रखना चाहिए।

'67 के बाद नारानदा ने उस कबूतरखाने में बैठकर कहा था, "यह मजदूर पार्टी नहीं है। दुनिया-भर के घघेवाजो का अड्डा है।" थोड़ा-बहुत सभी लोगों को ऐसा लग रहा था। नारानदा की बात का खुलासा हो रहा था। दुख-दर्द और विपत्ति में आगे बढ़कर छाया की तरह जिसने साथ दिया है, उमी की बात याद आयी थी नारानदा को। वह है बूडो। नारानदा गुरु-गुरु में डेरो इशतहार वाँटने के लिए कहते थे। या सिगकल के गेट पर जाने के लिए कहकर चलती हुई बस का हैंडल पकड़ कर झूल जाते थे। राम्ते के बीचोबीच अचानक हाँक लगाते, "बूडो, फेलू की माँ को एक बार अस्पताल ले जाना।" और '67 के बाद हिलते दाँतो जैसे लाल मकान के कबूतरखाने में रात-भर अगरवत्ती जलने लगी। वर्ग-परिचय पाकर लटते गये दो जवरदस्त इसान। मोमवत्ती गलकर फटी हुई दरी पर गिरने लगी। नयी लडाईं गुरू हुई। और सान पर चढ़कर दिन-ब-दिन बूडो की धार सामने आने लगी। वह कोडा बन गया। फिर भी इतने बड़े काड के बाद भी बूडो 'कम्युनिस्ट' शब्द उच्चारण नहीं कर पाया। जीभ के मिरे पर आटे की पूरी की तरह वह शब्द गोल-मटोल होकर जाने कैसे 'कमूनिस' बन गया और बूडो के मुँह से यह बात सुनते ही उन्हें ठीक सीने के बायीं ओर हृत्पिंड की धडकन का पता लगा। दोनो आँखें ठहर जाती हैं। उस समय वे गहराई से मानो कुछ सोचने लगते। फिर भी कोई धाह नहीं मिलती। पाँव की सफेद चमटी पर बड़ी या छोटी कँटिया की तरह काँटा चुभ जाता है। जगली वेर की तरह खून की बूंद उभरती है। देखते-देखते वे त्रिदिया फूल की कली की तरह हो जाती हैं। उसके बाद पत्तियाँ खुलती। उसके बाद सुशायू।

"वीरू ।"

"बोल ।"

"कितना बज रहा है, देखा है?"

"ना ।"

मन्टू ने दोनो उँगलियाँ होंठों से दबाकर, आखिरी कण खींचकर, सिगरेट फेंक दिया। मुँह में शायद तम्बाकू घुस गया था। थू-थू करके उसे निकाल दिया। पीछे की काँड लाइन पकड़कर फिर एक डीजल गाड़ी

काँसती हुई चमी गयी। एक झमक रोजनी की बाढ़ से थार तरोतावा चेहरे पीके आसमानी रंग की धूमिल रोजनी से उबर कर, साऊ-साऊ उभर आये एक बार फिर। मट्टू की बँठी हुई नाक ठामे की तरह चमक उठी।

कितने बड़े भान की बात है ?

नी के लगभग।

मट्टू और बीक बकबक करते जा रहे हैं। चिड़चिड़-पिड़पिड़ करके चुबान से बातें निकल रही हैं। सोना निर्बिकार है। होंठ सी कर बँठा है। अपने दोनों पजे बिछा दिये हैं। कलाई मोड़कर तिरछा होकर बँठा है। गोरा सिगरेट क लिए उतावला हो रहा था। किसी न उस पर ध्यान नहीं दिया। मट्टू गोरा की ओर देखा रहा था। सोचा आसमी उतावला है। पीठ नहीं पा रहा है। उतावला होने के अलावा चारा ही क्या है? ए० बी० क भान की बात है ठीक नो बज। अभी कितना बज रहा है कौन जाने। ए० बी० को तो होम भी नहीं रहता। बिना देखे चलता है। मिट्टी से भँटे पैजामे पर रास्ते की धूल चढ़ाकर एक-सा बन जाता है जैसे कोई कुश्मल है ही नहीं। एक बार फँस जाने पर फिर कोई बचाव नहीं रहेगा। मजबूत संमठन बनाने का सपना सँबोए मजबूर बस्ती में बिहरा कुबोमे रहता है। धूल के चाँद की तरह हमेशा आसमान पर ही लटकता रहेगा। और हाथ स इशारा करेगा। यहाँ इस जगह यही तो मैं हूँ।

बिजयदा अब हँसरी नहीं कर रहे हैं ?

'ठीक-ठीक नहीं पता।

'नीकरी चाकरी तो खत्म हो गयी।

'कलोजर और लान-माउट का बड़ा ताला तोड़ना चाहिए।

बिजयदा की लड़की को दिग्गा सड़क पर मुकुक रही है।

कितने दिन से घर नहीं आते ?

उह-साठ महीना हा रहा है।

पेट की तरह शीतलातस्ले पी बस्ती माँकों क सामने उभर आयी। और बिजयदा का चपटा चहरा। रंगरस में काम करत समय चूम्हे पर केतसी चढ़ी ही रहती थी। गोरा का चुस्म सबसे अधिक था। कहीं भी

गोरा का पता न पाने पर विजयदा के घर पर वे लोग उसे खोजने जाते थे। खाट पर नगे बदन, विजयदा की काली-कलूटी सूखियाग्रस्त लडकी को गोद में लेकर पुचकारते देखा जाता। आखिर में विजयदा को थाने ले जाकर एक हाथ तोड़कर ही छोड़ा गया। काम से हाथ धोना पड़ा। अब हाँकरी कर रहा है। वह हारने वाला नहीं है। गोरा अचानक बड़बड़ा उठा, "कल जाऊँगा एक बार।" सोना सुन्न मारे था। उसने अचानक बात को रोक लिया, "मैं साथ चलूँगा।" गोरा ने प्यार में सोना की ओर देखा। सोना ने गरदन हिलायी। इसका मतलब—अकेले जाकर बखेड़ा खड़ा करो। जान तो तुम्हारी अकेले की नहीं है कि जो चाहोगे वही करोगे। गोरा उसके होठों की टेढ़ी रेखा देख हँस पड़ा। अचानक दस वैटरियो की रोशनी उसके पाँव के पास आ गिरी। गोरा के सीने के पास घक-से जैसे कुछ रुक गया। हाथ-पाँव के तलुए सनसना उठे। तभी एम्बुलैम झट-से आगे निकल गयी।

"बाढ़ का पानी घुस रहा है।" मस्टू का हाथ ठुड्डी तलाश रहा था।

"तपसे की आखिरी मीटिंग की बात तुझे याद है। डोगी से चलकर हम पहरेदार के शैल्टर पर पहुँचे थे। चारों ओर मिर्फ भेडी¹। भेडी का छिछला सीमानुमा पानी। बीच में टापू की तरह जमीन का टुकड़ा। आसमान पर पूरा चाँद। उस नाव पर बैठक, चीनी पार्टी की मीटिंग की तरह। वह दिन कैसा व्यस्त दिन था। उस दिन ही बात शुरू कर चुका था। यूँ फर्क रहने पर भी ए० वी० की बात दिल में बैठ गयी थी, लोकल कमेटी के सदस्यों को कैसे भी वर्कर वैल्ट में अपनी पनाह बनानी पड़ेगी। चबूतरे पर बैठकर कुछ पेटी-दूर्जुआ लडको के साथ गरमागरम बातें झाड़ने से नहीं चलेगा। यहाँ अगर अपना गढ़ मजबूत न बना सके, तो फिर चाहे कितना ही छात्र-युवा वगैरह-वगैरह करते रहो, सब दो दिनों में खत्म हो जायेगा। अभी-अभी लाइन पकड़ रहा था। और यह लाइन एक बार दिमाग में घुसने पर उसके बाद सभालने में कुछ भी नहीं लगता। मगर मौका नहीं मिला। जिस गति में पुलिस झपट रही है

गोरा की आँखों की पुतली में एक अनजान पछी मृत्यु-यत्रणा में पख

1 छिछली तलैया, जिममें मछलियाँ पानी जाती हैं।

फड़फड़ाने लगा। भासपास भयस-भयस गारा भी झींसे भूम रही है।
 बसे के स्वर में भी बेधनी बनी नहीं रही 'कितना बज रहा है, मट्ट ?

“पकी कही है ?

अम्दाह स ?

दस तो होगा ही।

‘क्या कह रहा है ?

‘परेसान मत हो। बहु भायेगा जरूर।

ना। ए० बी० तो टाहम का पायम्ब है।

‘घापद खोबर’ पीछे मया है।

अशोक बसु का नाम बे सोय न जाने कब के भूस यथ है। यहाँ तक
 कि उसका नाम भी याद नहीं रखा। अब संधप में ए० बी० कहते हैं। इन
 खोबर सोय भी जान मये है। बही तो उस दिन आबसपट्टी स बिराम
 करके एक बड़ई को उठाकर से बये बे और उसस पूछा था—ए० बी० का
 नहीं पहचानता। फिर एक मया नाम बेना पड़ेगा।

कपास के सन्ने फटे हुए बाग पर बोरा हाथ फेर रहा था। वह जपह
 बीच-बीच में सरसराती है। बचपन में एक बार पुस पार करते समय बीच
 मुँह गिर पड़ा था। बीच से चोट लगकर माया कट गया था। समातार छह
 महीने मुगता था। पबादाक स कोई क्रायण न देखकर टोटका पकड़ा।
 केंचुए का तल। खोबर का नाम सुनते ही बोरा को केंचुए का तल माद आ
 जाता है और वह जमह सरसरा उठती है। बेगते-बेगते उरतना गाथा गरग
 हो गया। कान स भाग-नी नू बहने मनी। तागतहन के सड़ मुहम्म का
 कमरतोड़ राम्ठा बाँलों के सामने उभर आया जो बई दैव बना गया था।
 और नगटे बीच मुँह गिरा था। खामी हाथ तीग खोबर भी नगट क पाब
 मुकाबला नहीं कर सकते थ। सब यहीं में मुक हुआ।

तीन आबमियों का एक दस आबरत्रिज के नीप में धीरे-धीरे आ रहा
 है। जगह अँधर में है। अहरा बिगारी नहीं पड़ता। गाथा बिकस हो रहा
 है “आज टिठ हयियार गाब में मही है।” किमी नि जुबान मही हिमापी।

सब खिच-से गये। गोरी ने झट-से पीछे देखा। नहीं, ठीक है। मन्दू खुद-ब-खुद उठकर चारों ओर पगला चक्कर लगा रहा है। गोरी ने तब तक उनके हाथ में स्टेंसिल का टीन देख लिया है।

“वैठ।”

“ठहरो न।”

मन्दू में हमेशा ही बेचनी ज्यादा रहती है। बहुत अधिक चौकस रहता है। कॉलेज के चुनाव के समय भी इसी तरह बेचन रहता था। मन्दू ज़रा धीरे निर्भिचत होना चाहता है। छिपकर तीनों के धुंधले दल को निशाना बनाकर आगे बढ़ चला। सोना के चेहरे पर विरक्ति की छाया, “घत्, डरपोक कहीं का।” और मन्दू पान-बीड़ी की दूकान से सटकर खड़ा है। कमीज के भीतर हाथ डालकर रिवाल्वर का बहाना बनाया। चट से गले की आवाज़ बदल ली, “कौन ?”

“मैं।”

“बूडो।”

“हू।”

मन्दू आड से निकल आया। बूडो का दल खड़ा हो गया था। ग्वालपाटे का बूडो। बूडो का ग्रुप। ब्रश और स्टेंसिल लेकर वॉलिंग करने निकला है। वे लोग इधर और नहीं बढ़े। बूडो ही उन्हें चक्करदार रास्ते से ले चला—फोर्यक्लास स्ट्राक क्वार्टर के भीतर से होते हुए। यही नियम है। वरना नौसिखुओं का दल चारों को एक जगह बैठा हुआ देखकर कहीं कुछ और न समझ ले। कोई वैसा टैम्प्टिड भी नहीं है। यह सब अंग्रेज़ी अब बूडो ने भी सीख ली। स्प्रिंग फ़ैक्टरी का बूडो। उसकी वीची का कभी-कभी अचभा होता है, “यह तमाम अंग्रेज़ी-वंग्रेज़ी कंसे सीखी।” बूडो हँसता है, “हाँ, लिखने को कहते ही सारी विद्या निकल जायेगी। सब-कुछ सुन-सुनकर सीखा है। हाँ, मगर मतलब जानता हूँ। टैम्प्टिड का मतलब है, सीता की अग्निपरीक्षा।”

चूने की बाल्टी उतारकर चेचक के दाग-भरे चेहरे वाले लडके ने ज़रा दम लिया। फिर चलना शुरु किया। सिगकल के निवारण के हाथ में कूंची। छँटाई मज़दूर निवारण की फटी खाकी पैंट पर कतला मछली की

तरह घेस बन गया है। और बूढ़ों के हाथ में माखो का छेन्निन फाड़ने
 तरह हिस रहा है।

‘मात्र रेत क्वाटेंर भर बये।’

‘बहुत जस्ती निकसा है।’

‘महीं पोर रात को मुखर क बच्चे पोंछन बाउ हैं। लन्ने-ऊ नर
 सीढ़ी और बही-सी एक बून की बास्नी लेकर।’

‘बचठा मन्नाक बना है।’

‘हां।’

बूढ़ों का उप धूमिल साया की तरह बँधरे न कोन्न ह रत्न। मन्टू
 ने इस्तिम के दुसरी ओर लड़ होकर उन्हें विन्दी की तरह लाने का
 देला। काफ़ी देर पहले पम्पिक बस का ही यपी है। एम्प का ह
 बकरी के बमड की तरह तना हुआ-सा लय रहा है। मन्टू मँगल
 पोस्ट के बीच बैठ गया। जब से रेजबारी निकालकर हर्नरी नर मन्टू
 बिन रहा है। सोना फिर होंठ बाट रहा है। मोरा बगाम क ह रत्न
 पर हाथ फर रहा है।

‘कुल साठ पैस है।’

सोना ने बहूत मोड़े बगैर कहा ‘काफ़ी है।’

‘तू तो मनेसे ही भी उबलरोटी निकसया।’

‘भाब्री देना।’

‘फिर दोषर के काजर पकड़ सेने पर छद्मन की भा मन्डन नर
 खेनी।’

‘बिन लामे भी साठ बिन तक जूस सखूना।’

‘बक मठ।’

‘बाना साठ पैस में गाने का मसला निपटबायेगा।’

इस पर और बाउपीठ नहीं हुई। कमाबक होन पर मन्टू का इनशान
 करता है। भात-रोटी और सँस्पर की डिम्बेबारी जान कम उमी पर का
 पड़ती है। मोर की इन पीसों पर कोई मजर नहीं है। मिक्र बाय पीकर
 ही बिन काट मठा है। पैसा मुबल कटता है ‘मोरा तो जज-जब धूमों रह
 बाटा है।’ सोस के समय मंगा मुबल से उबली भेंट होनी थी। मन्टू ज रोठ

के कच्चे नाले से सटा, तारकोल के टीन से घिरा छोटा-सा बबूतरा । बीच में बड़ी इमली के पेड़ का बड़ा-सा तना । और वैंटरी का बक्सा । तारकोल के टीन से नटी रवर फैंक्टरी और खुले टट्टर में खुदो की चाय की दूकान । ओवरटाइम में पहले ज़रा बक्त मिलता है । ठीक उसी समय गोरा हाज़िर होता था । गेंठी हुई गजी उस नमय रवर की कालिख और मशीन के तेल से तर है । सुबल हाथ मोड़कर ऊपर उठाता । लाल सलाम । गोरा का हाथ भी मुट्ठी बंधकर ऊपर उठता था । इसी को लेकर एक दिन तूलकलाम हो गया था । ब्रजेन वावू के जूते के तले की तरह सूखे पिचके चेहरे पर इस बात ने सिरिज से सुर्ख जून दौड़ा दिया था और काले रवर की गेंद से पम्प करके प्रेशर नापने की सीसे की गोली रेस के घोड़े की तरह दौड़ रही थी, "नमस्कार कहने में क्या आदर्श सड़ जाता है ।" पुराने पायो की टूटी खटिया ने गोरा के बाप की गठिया के दर्द से खोखली हड्डियों के चरमराने की-सी आवाज़ की थी । और गोरा हँसा था । निर्मल, सरल हँसी । फिर भी भाले की फाल की तरह उद्वत, "यह मामूली बात नहीं है, समझे ।"

गोरा को कोई बात कहने की फुर्मत दिये बग़ैर ही सुबल पूछता था, "खाया है कुछ ?" उसे ज़ुवान खोलने का मौका ही नहीं देता था । फिर तो हडहडाकर मेलगाडी चल पडती । रवर कारखाने के यूसुफ और नाटे अली को गोरा के बारे में खूब पता है । इसी लिए ज़वरदस्ती टिफिन से रोटी निकालकर उमें एक-आध रोटी खिला देते हैं ।

हज़ार रोड पर एक के बाद एक झंझा फहरेगा ।

आज ही तो स्प्रिंग फैंक्टरी की चिमनी के माथे पर बाँध दिया है । फड़फड़ करके उड़ रहा है । नीचे एक पोस्टर लगा दिया है । गोरा ने कोई दाघा नहीं डाली । कोई और बक्त होता तो इसे लेकर गज़ब का कांड होता । आज मिज़ाज ठीक नहीं है । कमज़ोर ट्यूबलाइट अँधेरे के साथ मुक्कावला नहीं कर पा रही है । घुँघला, अघमरा अँधेरा पाइप की तरह टूटे-फूटे और कच्चे नाले में कराहते हुए उठकर आ रहा है । वीरू वेचन हो उठा, "अब वैंठना ठीक नहीं है ।"

"ऊँ हैं ।"

"इसी बक्त राउड पर आते हैं ।"

‘हम सोचों के बने जाने पर ए० बी० मुद्रिकस में लँड जायगा ।

“अब नहीं आयेगा ।

“उसको बात कभी भी इधर उधर नहीं होती ।”

बीक ने कुछ कहते-कहते बात को बीच में ही निगत लिया । बेवैनी कदी ही आ रही है । ए० बी० के परिव को लेकर दो-एक बातें हुए । बोड़ी बंद चुपी । मन्दू ने आवाज करते हुए पीठ सुजमायी । मुँह बिलगत किया । और रात बढ़ रही थी । मोड़ और भी मुना होना आ रहा है । आबरटाइम पुरा करके दो-बस की सिफ के अन्दर भाव भी एव-एक करके मौन था । अब यह खूब खूब खनन को तर करने वाली ठही हवा बढ़ रही है । बसंत की हवा । धोरा की कमीठ का कोना फड़फड़ आवाज करता हुआ बढ़ रहा है । सोना बाँके छोटी किये ठहरने रहा था । हवा की ठंडक । मन्दू पाँव का टकना बसा रहा था धीरे-धीरे । मँकनामारा ने आसमन पर पुमिस की लाठी खायी थी । अब कभी-कभी दोनों टकने फुन उठते हैं ।

बाँकों के सामने मँकनामारा का मित्र के पीछे का रास्ता उभर आया । नारे का विचित्र छत्र और भवि अभी भी खोजते हुए अनुस को तख्त उमकी स्मृतियों में ला गये—‘मक मँक मँकनामारा—गो, गो गो मँक ।’ कंधे के साइडिंग में पबिक जासकटिया बढ़ भास’ लेकर अनुस से खरा हटकर बन रहा था । अनुस के आगे-पीछे गाढ़ा कासा रंग । आठ-दस बँक बन रही थी । मँकनामारा हैसिकोटर स सहर का चक्कर मचा रहा था । कमकता सहर । अनुस विरवविद्यालय से सटी हुई पठनी यती ने मुहाने पर पहुँचते ही अपने को और नहीं संभाम सछा । तीन बँक अनुस के सामने थी । हैसिकोटर से मँकनामारा हम अजब सहर की जाँच-पड़ताल कर रहा था । और नगटे बहुत ही बिबलत से होकर भावे यवे ‘याम’ के इच्छे माम क सिफ दौट पीस रहा था । सामने वाली बँक उस बनसा रही थी । विरवविद्यालय से सटी हुई यती पर आते ही किसी ने कास्टेबुस की टाल छोड़ ली । और एक में सटी । कासी-दुबसी-यतसी एक लड़की ने एक पुमिस वाले का हवा टोप छीनकर आसमान में उछाल दिया । उसके बाद ही भीयरसँस-दुकड़ी न चार करना शुरू किया । और बन । और मारा

कलकत्ता शहर का सीना चीरकर आसमान की ओर दौड़ा। हेलिकॉप्टर उम वक्त भी चकराधिन्नी खा रहा था। मन्दू खड़ा हो गया था, एक मनि-हारी की दूकान के शेड के नीचे। सादा कपड़े पहने दो-तीन पुलिस वालों ने आकर उसे खींचकर वैन में ला विठाया। जेल से निकल आने के बाद से ही बीच-बीच में दर्द चिलक उठता है।

उसी दिन की ही तो बात है, जब खोचर के दीडाने से गोवरा तेजी से झुगगाह की दीवार लाँच गया था और उसके पाँव में मोच आ गयी थी। ज़रा-मा चूकते ही काम तमाम हो जाता। सुकु दीवार के एकदम उस पार था, इसलिए। उसने झट से उमे खींचकर उठा लिया। अत में न सभल पाने के कारण दोनों ही गदे नाले के भीतर आँधे गिर पड़े थे। कीचड की सड़ी बदबू फिर भी नाक में नहीं घुस सकी थी, पुलिस वाले की गालियों की बजह से। पागल साँड की तरह वह गालियाँ बक रहा था।

मन्दू टखने की मालिश करते-करते हवा की नभी से खुश हो उठा। 'समझे' गौरा को सम्बोधित करके उसने बात को खींच दिया। गौरा ने अनमने भाव और चितित आँखों से मन्दू की ओर देखा। मन्दू के गालों में गड्डे पड गये थे। भरे हुए चेहरे पर गड्डे। पहले शरीर भी भरा हुआ था। अब धूप-पानी-तूफान सहने और पेट के घँसने से शरीर खिच गया था। मगर चेहरा अभी भी फूला-फूला-सा है। पाण्डु रोग में ग्रस्त रोगी की तरह।

"जेल में एक बड़ा जबरदस्त गाना सुना था। खूब याद हो गया था।"

"सुना दे।"

वीरू ने होठ टेढ़े किये।

मन्दू ने गला खखार कर गाने की कोशिश की। दो-एक टूटे-फूटे शब्द। हिन्दी और बँगला मिली-जुली।

कँदी बोले वीमार वीमार, डागडर, बोले वीमार नहीं।

कम्पाउण्डर को दिया चवन्नी भर्ती से इनकार नहीं

घोड़ी चुप्पी। वीरू का मुहासेदार, विरक्त, निर्विकार चेहरा। मन्दू बैचैन हो रहा है। गौरा खुले गने से मजाक करता है।

‘तू अब कबिताएँ नहीं लिखता ? जमनी बास, नयी रेखा और जान
बया-बया ।

“युस्त ।

मट्ट म उवास हाने का सहामा किया ।

और ठीक उस बदन लमके कान की लभे मुरसुरा उठी । मोरा और
बीरु तब भी कबिता को लेकर मजाक कर रहे थे । मट्ट खाधा हाथ सरक
गया । कान की लभे कँपकँपाते हुए धीरे-धीरे एक समसनाइन् छोटी-सी
सहूर की तरह सार बदन में फैलती जा रही है । लम्ब लंब उसे कोड़ा
मगाकर सीधा कर रहे हैं । बीसेपन का भाव उँगठा जा रहा है ।

आज की मीटिंग बहुत जरूरी थी ।

सोना ने अफसोस के साथ कहा ।

और बात सुनते ही मोरा मीठा हो गया । वह अचानक रुका हो उठा ।
आज की मीटिंग में ए धी० के साथ मामला रखा-दफ्त हो जाता । इस
तरह सटके रहने से तो चलन में रहा । मिट्टी में दाँत गढाकर कुछ-न-कुछ
करना चाहिए । शुरू के दिनों में इतना समसा नहीं था । बसा फाटकर
नारे मनाता था । रात रात जागकर इस्तहार मनाता था । और दस-बीस
सोप मिसकर बीच मैदान में इकट्ठ होते थे । वा-सीन सामो में सब कुछ
जान बसा उलझ गया है । अब बीवार पर इस्तहार मनाते समय अचानक
पीठ में कप्पूम घँस सकता है और पोस्टर के सखेव कामब पर सास घबरे
मग सकते हैं ।

रात महुरान के साथ-साथ सन्नाटा पूरे इलाके पर छा गया था ।
मेहनतकश और आधे भूखे लारों का इलाका । टोफरी की तरह बस्ती ।
घुमा । इतारबंद चिमनियाँ आसमान में कामिल पोठ रही हैं । सबके
नस से छर छर की भावाव निकल रही है । जोड़ी बेर पहले एक खरिसा
कुत्ता नस के पास वृँछ हिमा रहा था । जिधी लराबो का लकियाया स्वर
कानों में बज रहा है—जिन् व् पी इ इ । रात भर सारे इलाके में
सड़सड़ाते लरावियों लाराविस कुत्तों और लोचरों का राज चलता है ।
और मोरा का बल रात रात जागकर बीमारों पर आग के टुकड़े की
तरह एक-एक शब्द सटका बेटे हैं । सोना ने अपनी गरदन कुबसाई

“घत्तरे की !”

“क्या हुआ ?”

“इम तरह बैठे रहना भला अच्छा लगता है ?”

“क्या करेगा ?”

“तुम्हे तो पता है कि घोडे के अड की तरह पोसाना मुझे अच्छा नहीं लगता । और वहस-मुवाहिसा मुझे आता ही नहीं । मार्क्स का इस नम्बर का वाल्यूम, लेनिन के । इससे बेहतर है वावा, मुझसे पहरा देन, पुलिस का घिराव तोडने, आग की चिनगारी बिखरने के लिए कहो । सोना का एक पाँव ठीक है ।”

सोना आग लगाकर रास्ता बनाना चाहता है । वह लडाई को समझता है । युद्ध । कोई खेल-कूद नहीं है । जरा-सा चूकते ही जान मरे हुए मेढक की तरह चपटी होकर पडी रह जायेगी । इसीलिए झमेले की बूपाते ही इकहरी चोटी का रिवन हवा मे उडाते हुए लम्बी गली से मीनू दीडी आती है, “सोनादा कहाँ है ?” पिछली बार उसके सवाल के जवाब मे उसकी ओर देखते ही गेरा की आँखो मे वारिश की बूँदो की तरह पानी पकडा गया था ।

वीरू ने पतले बालो को माथे से हटाकर हिस्-हिस् आवाज करते हुए कहा, “मेरा मन कह रहा है ।”

“क्या ?”

“क्या कह रहा है ?”

“वे तीनो ही झुक पडे ।”

वीरू तुतला रहा है—“ए० वी० पकडा गया है ।”

“फालतू बक-ब्रक मत कर, वीरू ।”

गेरा का विगडा मूड टुकडे-टुकडे होकर बिखर गया । मन किसी तरह की लगाम नहीं मानता । कहीं काँटा चुभा रहता है । एक-एक करके भी कम नहीं पकडे जा रहे हैं । फिर ए० वी० की चालढाल बहुत ढीली है, जैसे दुनिया मे उसका कोई दुश्मन ही नहीं । पाजामा-कुर्ता लटरपटर करते हुए चलता है तो कोई होश नहीं रहता । इसके साथ प्यार । उसके साथ गले लगना । जरा-सी भी मावधानी नहीं बरतता ।

'कम रेड हुई है।

कहाँ ?

बी० सी० में।

'बामुखर में ?

'हाँ।

तीनों का सिर एक-दूसरे से भिड़ गया है। वे एक-दूसरे के पास सरक आये हैं। गौरा के मुँह से कोई बात नहीं निकल रही है। ऐसी हासत त्रिम्बगी में पहले कभी नहीं आयी। जैसे-जैसे दिन गुजर रहे हैं जैसे-जैसे सब-कुछ हाथ से बाहर झाँका जा रहा है। कोंच-कोंच कर पुनिस ठंभ कर रही है। संभासत हुए भी आन कोयला बनी जा रही है। गौरा बाँधी का चेला नहीं है कि कहे 'पड़े-पड़ पिटाई कराते रहो मगर। सामने झूल रहा है बबसुरत-सा एक 'मगर'।

ऐसे समय गौरा का मारानवा की बात याद आयी है। हाल ही में मजदूरों के बीच घुसा था। बातचीत चम रही है। वो-एक सेक्टर भी बनाये हैं। वो चार लोगों के रखन सायक। ऐसे समय यह हुजमत। देर बरदास्त नहीं हो रही है। लोगबाग हृषियार बरीरुह छोड़ अपने अपने इसाहों में जाना चाहते हैं। मढ़ने। मौका देसकर सरकार ने जोपर लवा बिय है। यही सोचत हुए गौरा चिन्ता पड़ा "साता जरा सुस्तान का टाइम भी नहीं दे रहा है।

देसो आज की मीटिंग।

गौरा न भी साब-साब सिर हिमाया हाँ आज ही साइन सेकर इस पार उस पार कुछ भी हो जाता। हाथ बाँध कर भीर झुला बनकर अब बैठा नहीं जाता। बिखा तब न करने पर कौन से जहन्नुम म जाबोने। इधर जोपरों की चौकरी के सामने टिकना मुश्किल। सचमुच जबर शे-बस का गिरा देने का काम होता तो वह पीछे नहीं रहता। मगर इससे कुछ होने वाला नहीं है। इस साइन में एसती है। खबर जरा बग़ मिसता।

'मगर ए० बी० क्या यह सब माम सेगा ?

'देसा जायेगा। आदमी तो समयवार है।

ए० बी० की बात उठते ही सोना ने गरदन मोड़कर फिर रास्ते की ओर देखा। वीरू की बात याद हो आयी। वीरू की ओर सुलगते कोयले की-सी दहकती आँखों से कई क्षण स्थिर देखाता रहा। वीरू बेचैन हुआ, “क्या ?” सोना ने आँखें फेर ली। गोरा भी कुछ देख नहीं पा रहा है। फिर सोना ने वीरू की ओर सीधे देखा। जलते हुए कोयले के टुकड़ों—दोनों आँखों से हवा टकरा कर चिनगारी बिखेर रही है। वीरू चिल्ला पड़ा, “मामला क्या है ?” सोना ने दाँतों की खट की आवाज़ के साथ जोड़ा, “ए० बी० को अगर कुछ हुआ तो तुझे ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा। यह नारी अपशकुनी बातें निकाल दूंगा।”

“सस्कार !”

“कतई नहीं।”

“फिर क्या ?”

“क्या भला, ऐसा उसने क्यों कहा ? घर पर एक बार पुलिस नेकुड़ी हिलायी थी कि बेहाला ननिहाल में हवा। ऐसी बात कहते समय।”

मन्दू ने एक हाथ से सोना का चेहरा अपनी तरफ मोड़ा। हलकी-सी मुस्कान है मन्दू के होठों पर, काली आँखों की पुतलियों में, ‘तेरा कुमस्कार अभी तक नहीं गया।’ सोना ने और नहीं छेड़ा। नाराज होकर बैठा रहा।

“क्या करोगे ?”

“हाँ, क्या करोगे ? कब तक और बैठे रहोगे ?”

गोरा ने इन बातों का जवाब दिये बगैर वीरू ने फिर सिगरेट माँगा। वीरू ने अनमने भाव से सिगरेट थमा दिया। हुस-हुस करके कश खींचने लगा। सोना खभे पर भार टाले एक स्पष्ट-सी आवाज़ को पकड़ने की कोशिश कर रहा है। ट्यूबलाइट को घूमिल रोशनी में अब कुछ भी चलता नजर नहीं आ रहा है। अधकार गाढा होता जा रहा है। रास्ता बिलकुल ज़ाली है। कोई नहीं है। वीरू फुसफुसाया, “चलो, निकला जाये।”

“ठहरो।”

निवारण को लौटने देखा जा रहा है। फटी हाफपैट देखकर उम

पहुँचा गया। घुटने तक पैट उठार आयी है। धीरे धीरे कदम रखता हुआ आये बढ़ रहा है। पतली-पतली टाँगें। आँख साधारण पट में बाँगा नहीं पड़ा है। लड़खड़ाते पाँवों को देख गोरा सोच रहा था। बीबी को समुदाय भेज दिया है। बच्चा जानेयी। अस्सल में अल्ल के सामने मरेयी उसे देखना नहीं चाहता निवारण। उसकी छाठी घँस बयी है। ठीका चेहरा। सिगरेट की मौकरी पर खाने के बाद चेहरा और लीसा हो गया है। अब दिन रात काम मिलने पर राक्षस की तरह पिल पड़ता है। मगर ही यह सब पोस्टर मिलना-उलना उसे रास नहीं आता। अब निवारण का शरीर छाछ बिलन बना है। चेहरा का मस्सा तक। हालाँकि उसके दोनों पाँव ही नजर को चौँचट हैं। पकी पीसी-सी हुईियाँ। वेन पी हुई साठी की तरह। पाँव क रोम तक नजर आ रहे हैं।

‘हो मया ?

‘नहीं।

‘तो ?’

‘बूढ़ो ज़ोय अभी भी कर रहे हैं मेरी तबियत ठीक नहीं है।

‘क्या हुआ ?

‘जाने कैसे बनकर आ रहा है।

बाठ कहते-कहते निवारण बैठ गया। निवारण का बड़ा चेहरा उसके बीमड़ बदन से मेल नहीं आता। जैसे उसे हलके से किसी ने उमर लगा दिया हो। हाथ की मसँ बिट्टे में उभरी हुई है। उनके सिरों के ऊपर आसमान जरी के सितारों की तरह झिलमिल कर रहा है और ठंडी हुआ बह रही है। गोरा न प्यार से पूछा ‘यूनिजन क्या कह रही है ?’

‘भेड़ों का दस। क्या कहेंगे मसा ?

बाठबीठ जरा झोंका जा ययी। निवारण पहले की बात का सुन चौँचता गया ‘काशी बाबू का कारखाना तो सासा मेरी आँखों के आय लड़ा हुआ है। शुरू-शुरू के दिनों में हम कुल तीन ज़ोय थे। इमाई का काम होता था। और लेव एक थी। काशी बाबू उस समय बीनापाड़े में एक औरत के साथ रहते थे। घर से कानी कौड़ी नहीं लगायी। घुमर की तरह खटे तक तीन खेड बने। और अब सासे ने मुझे ही साथ मार दी।

समझे गोरा दा, कारखाने में आग लगा दूंगा। जरूर लगाऊंगा, साले किसी की भी नहीं सुनूंगा।” तभी गोरा को लगा कि वह एक ऐसे विशाल-काय मजदूर को देख रहा है, जो अपने सख्त मजदूर हाथों से मशीन तोड़े डाल रहा है। उसके चेहरे की सिलवटों, हाथ की मछलियों में गुस्से की आवाज गर-गर कर रही है।

गोरा निवारन के स्वर का उतार-चढ़ाव ध्यान से सुन रहा है। बात करते-करते आक्रोश की तेजी में निवारन का गला गर्-गर् करने लगा है। निवारन का रग-ढग गोरा अच्छी तरह जानता है। काम गंवाने के बाद से वह और भी अधिक चिढ़ा हुआ है। शुरू-शुरू में गोरा या मन्दू के साथ वह थोड़ा-बहुत बहस-मुवाहिजा भी करता था। अब वह हर रोज़ गरम हो उठता है। उसकी बीबी ने पहली बार एक मरा हुआ बच्चा जना था। तभी से निवारन बहुत टूट गया है। दूसरे को दूध-बालि नहीं दे सका, वह भी गया। दो बार के दवाव से बीबी कुवड़ी हो गयी थी। कमर टूटने और शरीर सूखने के बाद भी किसी तरह ज़िन्दा है। फिर इस बार तो कोई बात ही नहीं है। निवारन ने बीबी को इस बार मरने के लिए भेजा है। तीन दिन में एक वफत ज़रा-सा खाना देने की ताकत भी उसके वाप में नहीं है। निवारन का अब आगे-पीछे कोई नहीं रहा।

“खाया है ?”

“कब ?”

“दिन-भर में एक बार भी खाया है ?”

“हां। आज दोपहर को बूडो ने खिलाया है।”

“तू कमूनिस है ना !”

“सच कह रहा हूँ, खिलाया है।”

“अच्छा।”

निवारन को यही एक बीमारी है। भूख से सूखकर मर रहा होता है, फिर भी जुवान से किसी को कुछ नहीं कहता। गोरा ने हजार दफा उससे सिगकल के टिफिन की घटी के वक्त गेट पर जाने के लिए कहा है। मजदूरों का मन-मिजाज समझकर, छोटार्ई के खिलाफ ज़वरदस्त लड़ाई शुरू करने का मौक़ा तलाशना चाहिए। ऐसी बातें निवारन नहीं छूता। जबडा

हिमाकर उसने जम्हाई भी। पयादा कोंचने पर बिगड़ जाता है वे सासे पुतामों की बात के हैं सब। शिशु को पिछमी बार पीट-पीट कर मार डाला था। यह बात थोड़ी ही याद है। सब सासे निगस रहे हैं बच्चा पैदा कर रहे हैं और गरदन मोड़ सिनकस में बसकर खूनी पानी की बाढ़ ला रहे हैं।”

निवारन ने काँस-काँस कर साँस छोड़ी। बसस में धीम नहीं छोड़ी एक आवाज की। खोर बेंकर बात करने से पहले ही निवारन ने यह आवाज की थी। पहले की बात का संवार बुहार कर हटाता है। उसके बाद ही आवाज निकसती है सु सु सु। चपटी नाक सु-सु आवाज से झूल जाती है। 'सासा धूं भी मर रहा हूँ (निवारन के कपाल पर बूँद जमर रही हैं। एक-बो करके) आँधी-तूफान की चोट खाया चेहरा सफ़्त हो उठा।) इतनी तुक-तुक करके क्या होगा ? सभी आसार्ण छोड़कर सड़ बाँटेंपा फिर जो भी रहे किस्मत में।

‘किस्मत में ?

हाँ उसी में।

वह फिर टेढ़ी से निकल गया। ओवरब्रिज के नीचे से निवारन का लम्बा मरीर छाया की तरह ओझल हो रहा है। उस खोर देखते हुए फुसफुसा कर मन्दू ने कहा ‘अब वह बिसकुल मारने-मरन कर उतरा हो उठा है।’ मन्दू की बात झग गयी। कोई बोल नहीं रहा है। सिर भारी भारी-सा है। ए० बी० के बारे में सोचकर उसने रास्ते के गुकील मोड़ की ओर देखा। आँखों में जलन। दो रातों से पलकें भी नहीं बाढ़ सका है। अब बोल कर नहीं रख पा रहा है। मन्दू ने गौरा से पूछा “पिछले हफ्ते खीतसातस्ना गय थे ?

‘क्यों ?

‘कुछ पूछ रही थी।

हँ।

“एक बार मियने में क्या जाता है तुम्हारा !”

क्यों ?

“मीसी छो पानी भी नहीं से रही हैं।

“माँ जैनी ही है।”

“तुम भी भला कैसे हो।”

“इतना जो बक रहा है—तू घर गया था एक बार ?”

“वाह।”

“क्यों ?”

“जाकर पकड़ा जाऊँ, क्यों ?”

“ओफ। और मुझे भेजकर पहरा बैठेगा, यही न ? उसके बाद सब मिलकर।”

नीद भगाने के लिए सोना उठकर चक्कर लगाने लगा। वीरू चुप है। गरदन कटी हुई मूर्ति की तरह लटकी है। यून भी लडका कमजोर है। इतनी ज्यादाती बरदाश्त नहीं हो रही। वीरू का सिर गोरा के कंधे पर आ टिका है। गोरा अनमने भाव से वीरू के बालों में उँगलियाँ चला रहा है, “मुझे कोई दिक्कत नहीं होती, तुम लोगों के साथ हूँ न। आजकल क्या होता है, जानते हो ? दिन-भर में एक बार ज़रा बकत बचाकर, तुम लोगों के साथ जमकर बैठ न पाने से, जाने कैसा सुन्न-सा हो जाता हूँ। पुलिस का झमेला बढ़ने के साथ-साथ लगाव भी बढ़ रहा है, देख रहा हूँ। सब जब एक साथ रहते हैं, तब कुछ याद नहीं रहता। उस समय लगता है, बाकई दुनिया को तोड़ना-गढ़ना कोई बड़ी बात नहीं है। अकेला होते ही तरह-तरह की बातें मन में आती हैं। कमजोरी महसूस होने लगती है।”

अब वे चार हैं—मन्दू, वीरू, सोना और गोरा। और तारकोल की तरह अँधेरा। अँधेरे में चार मूर्तियों के हाथ, पाँव और होठ हिल रहे हैं। फिर भी चारों जैसे खो से गये हैं। कितनी देर से बैठे हैं, खयाल ही नहीं रहा। चूंन्क की तरह यह मोड़ उन्हे खींचे हुए है। या एक मकड़े के मुँह से निबली अँधकार की तार से बुने जाले में चारों ही फँस गये हैं ? सोच रहे हैं। चाहने पर उठकर जा सकते हैं। उठूँ-उठूँ करके भी बैठे हैं। अब चाहूँ, उठूँ। सोच रहे हैं, यह तो हाथ हिला रहा हूँ, पाँव हिला रहा हूँ। उठने में अब कितनी देर ? जबकि वे फँस गये हैं। शायद किसी के सीने के भीतर छमछम घुंघरू बज रहा है, डर की मुद्रा लिये नाच की धुन पर। दाव लिया है डर ने गला। सब डरपोक समझेंगे, इसलिए साँस बंद किये

हुए हैं ऐसा भी नहीं है। असल में मन के अन्दर बातचीत चल रही है। तुम्हें माँ जाय तो भी क्या ! सोना का वानसपत्नी है न। चट स डीङ्ग जाऊँगा बसपदास के मैदान में हार्डवैर जाकर वो बमहाय में सेकर लड़े होन पर बस। इसके अलावा ए० बी० का ही तो रिस्क अधिक है। क्या हुआ, वह आ क्यों नहीं रहा है ?

जो कुछ बातचीत चल रही है वह आपस में ही है। इनका कोई लक्ष्य कोई उद्देश्य नहीं है। बात-बर-बात निकल रही है। असल में चारों तरफ का भावे एक बड़ा-माँ आ सगन क कारण बूबे हैं। जाने कौन-सी भातका ? तेइस नम्बर बस्ती की उस सछे बिल्डी की तरह गौरा की नाक जान कौन-सी एक बू मुँधन के लिए घास पर बैठी है। साङ्गे बाठ के समसग चारों इकट्टा हुए। वो घंटे बीन मय। कभी भी कितने मिमट-सैकिड गुब्बरे आ रहे हैं बतक बचन के रोमों पर स। सुरमुराठे हुए। जबकि इतनी बेर में एक बार भी याद नहीं आया कि असल में वे पाँच सोच हैं। और उस पाँचवें नम्बर भावनी का पता नहीं जिसे मेस्टर का इंतजाम करना था वह ह्यूब रोड में सी पी० एम० के बस्टू विरोह के हाथों पड़ गया था। बाऊई बस्टू का विरोह उस उठाकर भ मया है या नहीं इसकी भी कोई चारंटी नहीं है। मे गवे होंगे तो अब तक उस सङ्ग जाने की कीचड म बाड़ दिया होया। इस पयाम न एक बार भी मन में सरार पैदा नहीं की। लाइन पर गाड़ियाँ गुली हवा और द्यूबसाहन की स्वप्निय नीमी रोसनी के नीचे वे सोन मूर्तियों की तरह पड़े हुए हैं।

अचानक सोना धीरे धाकर गर्म हो उठा।

‘नहीं !

‘क्या ?

‘अब उठ।

ए० बी० ।

‘इसस ।

ताजु में भीम टिककर मस्टू म आबाब की। सोना का हाथ भावत के मुदाबिक डेड सं असा गया। हिनियार भरकर चलने की भावत है। आज

“मां जैमी ही है।”

“तुम भी भला कैसे हो !”

“इतना जो बक रहा है—तू घर गया था एक बार ?”

“वाह !”

“क्यों ?”

“जाकर पकड़ा जाऊँ, क्यों ?”

“ओफ ! और मुझे भेजकर पहरा वैठायेगा, यही न ? उसके बाद सब मिलकर ।”

नीद भगाने के लिए सोना उठकर चक्कर लगाने लगा । वीरू चुप है । गरदन कटी हुई मूर्ति की तरह लटकी है । यूँ भी लडका कमजोर है । इतनी ज्यादाती बरदाश्त नहीं हो रही । वीरू का सिर गोरा के कंधे पर आ टिका है । गोरा अनमने भाव से वीरू के बालों में उँगलियाँ चला रहा है, “मुझे कोई दिक्कत नहीं होती, तुम लोगो के साथ हूँ न । आजकल क्या होता है, जानते हो ? दिन-भर में एक बार ज़रा बक्त बचाकर, तुम लोगो के साथ जमकर बैठ न पाने से, जाने कैसा सुन्न-सा हो जाता हूँ । पुलिस का झमेला बढ़ने के साथ-साथ लगाव भी बढ़ रहा है, देख रहा हूँ । सब जब एक साथ रहते हैं, तब कुछ याद नहीं रहता । उस समय लगता है, बाकई दुनिया को तोड़ना-गढ़ना कोई बड़ी बात नहीं है । अकेला होते ही तरह-तरह की बातें मन में आती हैं । कमजोरी महसूस होने लगती है ।”

अब वे चार हैं—मन्दू, वीरू, सोना और गोरा । और तारकोल की तरह अँधेरा । अँधेरे में चार मूर्तियों के हाथ, पाँव और होठ हिल रहे हैं । फिर भी चारों जैसे जो से गये हैं । कितनी देर से बैठे हैं, खयाल ही नहीं रहा । चुम्बक की तरह यह मोड़ उन्हें खींचे हुए है । या एक मकड़े के मुँह से निकली अँधकार की लार में बुने जाले में चारों ही फँस गये हैं ? सोच रहे हैं । चाहने पर उठकर जा सकते हैं । उठूँ-उठूँ करके भी बैठे हैं । जब चाहूँ, उठूँ । सोच रहे हैं, यह तो हाथ हिला रहा हूँ, पाँव हिला रहा हूँ । उठने में अब कितनी देर ? जबकि वे फँस गये हैं । धायद किसी के सीने के भीतर छमछम घुंघरू बज रहा है, डर की मुद्रा लिये नाच की धुन पर । दाव लिया है डर ने गला । सब डरपोक समझेंगे, इसलिए साँभ बंद किये

हुए हैं ऐसा भी नहीं है। असल में मन क अन्तर बातपीठ बस रही है। बुद्ध भा जाये तो भी क्या। सोना का धानसट है न। चट से चौड़ बाऊँमा अस्पताम के मैदान में हार्डवैण्ड खासकर दो बम हाथ में सेकर लड़े होने पर बस। इसके अलावा ए बी० का ही तो रिस्क अधिक है। क्या हुआ वह आ क्यों नहीं रहा है ?

जो कुछ बातपीठ बस रही है वह आपस में ही है। इनका कोई मक्य कोई उद्देश्य नहीं है। बाठ-बर-बाठ निकल रही है। असल में चारों बंका क भागे एक बड़ा-भा आ' लमने क कारण डूबे हैं। जाने कौन-सी आलंका ? तइस मन्बर बस्ती की उम सफ़ेद बिस्मी की तरह गोरा की नाक जाने कौन-सी एक बू सूँघने के लिए घाव पर बीठी है। साइ बाठ के लगभग चारों इस्टूटा हुए। वा घटि बीग मय। अभी भी कितने मिमन्-सैकिड गुबरे बा रह हैं उनके बदन के रोमों पर से। सुरमुराठे हुए। बबकि इतनी डेर में एक बार भी याद नहीं आया कि असल में वे पाँच सौब हैं। और उस पाँचवें मन्बर आदमी का पता नहीं जिसे मेस्टर का इंतजाम करना था वह ह्यूज रोड में सी० पी० एम० के बस्टू गिरोह के हाथों पड़ गया था। बाकई बस्टू का विरोह उसे उठाकर ले गया है या नहीं इसकी भी कोई गारटी नहीं है। से बये हंगि तो अब तक उसे सड़ माने की कीचड़ मे गाड़ दिया होगा। इस क्षयात ने एक बार भी मन में बरार पीसा नहीं की। साइन पर पाड़ियाँ लुसी हुआ और ट्यूबसाइन की स्वप्निस मीली रातनी के नीचे वे सौब सूतियों की तरह मड़े हुए हैं।

बचानक सोना धैर्य छोकर गर्म हो उठा।

'नही !

'क्या ?

अब उठ।

ए० बी० ।"

'इस !

ताजु में भीम टिकानर मन्टू ने आवाज की। सोना का हाथ आदत के मुताबिक खेप में बसा गया। हबियार सेकर बसने की आदत है। आज

छोड़ आया, यह खयाल नहीं रहा। एक दर्द चिलक उठा। दोनों हाथ मलने लगा।

और एक आवाज उठ रही है। अस्पष्ट दवा हुआ एक शब्द पहले रुक-रुककर, फिर सिलसिलेवार लगातार। भो-ओ—ओ-भो-ओ-ओ। सर-सराता हुआ। वरं की आवाज की तरह शब्द। सुना है, वरं एक वार पीछे पडने पर सात हाथ पानी के नीचे जाकर भी डक मारती है। जहर उड़ेलती है। आवाज धीरे-धीरे तेज हो रही है। झुण्ड-दर-झुण्ड वरं मानो मोड़ निशाना बनाकर दौड़ते हुए आ रहे हैं। मन्दू उस समय भी कान लगाये है। अन्दाजा ले रहा है। गोरा और सोना ने आँख मिलायी। वीरू उठ खड़ा हो गया है। मगर हिल नहीं पा रहा है। सोना ने इसी बीच ह धुमाकर सिगरेट का कश लिया। थोड़ा तम्बाखू निकालकर आखिरी ः खीचा। कश खीचकर टोटा फेंक दिया। फुटपाथ से टकराकर रोशनी हलकी-सी फुलझडियाँ खिली। वरं की आवाज की तरह शब्द उस स मिट्टी कुतरकर खा रहा है। डक चुभोते हुए आगे बढ़ रहा है। उसके ही ब्रेक लगाने की आवाज। फिर धूल का भँवर।

“खोचर !”

“ढेला !”

ट्यूबलाइट का खभा अपनी जगह खड़ा है। गोल-सा सीमेट चबूतरा खाली पड़ा है। सूखा हुआ एक झालपत्ता भँवर में गिरा है। भर में सारा इलाका खाली हो गया। सोना ने बायें हाथ से ढेला मारा ट्यूबलाइट को निशाना बनाकर। खवे हिलाकर ढेला गेडे की तरह बँन चपटी नाक पर लगा। आधे अँधेरे में फिर एक पत्यर दौड़ा। मोना ने ः फँलाकर फेंका था। झनझनाहट की एक आवाज उठी। पतले शीशे टुकडे अँधेरे की फोख में खवे के हर तरफ छिटककर विखर गये। अन्ध में दौड़ते हुए तलुओ में एक छरछराहट की आवाज हुई। चबूतरा व फाउ-फाडकर देस रहा है। चारों ओर जलेबी की तरह पेंचदार गली वाए बँठी हैं निगलने के लिए। एक-एक करके वे सभी घेरे के अन्दर गये।

अँधेरा जाग रहा है। घोती-कमीज पहने हुए छह-मात सडमुस्टड ः

स उठते। जैसे के पी पर पसा डंड-बैठकी बदन। फिर भी बदन पर भरोसा नहीं। कामी रिवास्वरो को साँप कं फल की तरह निकालकर आम बढ़ रहे हैं—'भाबो मत। भागो मत। मिरबीक' रोगी की तरह मज्जसरो के बेहरे बिकृति म तुड़-मुड़कर एक स बन पये हैं। कामे-कामे बढ़े दाँतों की छतार बाव निकल आयी है। फटे बाँस-सा बसा चढ़ रहा है "हैइस अप।

वे चारों छिटक पय। पनबाही की बूकान का टट्टर झट-से गिर गया। कामी रास्ते का सीना चीर रहे हैं पुमिष्ठ के बूट। जोपर क पीछे-पीछे सी० भार० पी वाले बंभूक सेकर तीनों पलिया के मुँह रोककर लड़े हो बये। बिबिन्न-सा सन्नाटा। उसने बाद ही मयबड़ की आबाज। हृत्पिण्ड की छड़कन। चीराहे का मोड़ रथधान म बरबन की प्रतीजा म कातर। टाक-भाँक करके जोपर सोप गमी म घुम पड़। बिन म हैइसाइट बुसा दी है। जमा हुआ खँधरा। बिन का हँडन चामू रहने के कारण जान कीसी आबाज हो रही है। सीने म दबो हुई आबाज।

बसेही की तरह पेंचदार गमी क भीतर स एक आबाज चरकर मबाकर उठ रही है 'जोपर।

घोबं म्सास स्टाक बबार्टस के भीतर से बूड़ो अपना संड मकर घात ममादे निकल आया। उनकी धुँधली छायाएँ चमक उठी। छाया का निताना बनाकर जोपर और सार्जेंट के रिवास्वर म आम उगमी। माओ का स्टेंसिम चरचराते हुए काँप उठा। साय-ही-साय बूड़ो न हाँक मबाकर हाथ का माल फेंक दिया। ब्रमाके के साय हुआ मे माल सानी की घूँत र मयी।

घाबे की तरह फँसे बसियार और रेलब बबार्टस के भीतर म बूड़ो के मयी-साबी भीम पटरी पर चढ़ पये। जोपर सोप इयम-ब-करम पीछ हटने मने। पचास-साठ पड़ की बूरी पर दो बल—जोपर पुमिष्ठ, सी० भार पी० और पटरी पर हाथों म पल्पर मिये गोरा का बल। गोरा मझाई बचाया जाहुता है। मकर जोपरों ने घँस आम बी है। चारों भार स बरा है। बम रहता तो बह क्षण भर में रास्ता निकाल देता। चारा मरन रहा है 'सामे काँच-काँचकर रास्ता बना रहे हैं। साना मनमाने

मे हथियार की कमी भूल गया है। बूडो के दल के पाम भी कुछ नहीं है। उधर मे आग उगलती हुई गोलियाँ इधर-उधर दौड़ रही हैं। लाइन के पीछे का हिस्सा घिराव मे नहीं आ सका। एक बार गली पकड़ने पर सीधे ह्यूज रोड पर निकला जा सकता है। वस ज़रा वक्त चाहिए। वरना पीठ छेदकर फोडी भी जा सकती है। सोना वार्यो हाथ से जादू खेल रहा है। सी० आर० पी० और खोचरो के दल अधाधुध गोलियाँ चला रहे हैं। सोना को निशाना लगाने का मौक़ा नहीं दे रहे हैं। पाँच मिनट उन्हे रोक सकने पर ही वे भाग सकते हैं। किमी भी तरह मौक़ा नहीं मिल रहा है। पाँच हाथ सामने गिरकर गोलियाँ इधर-उधर छिटक रही हैं और फटाश-फटाश की आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर रही हैं। गड्ढे बनाती हुई। दो कदम आगे बढ़ने के लिए बढ़क लेकर झुक रहे हैं, अपने को सभाल नहीं पा रहे हैं। और लाइन के पन्थर तीरो की तरह दौड़ रहे हैं, साँव-साँव आवाज़ करते हुए।

गोरा की छोटी-सी निहत्थी फ़ौज सभाल नहीं पा रही है। लगातार पसीना चू रहा है। हाथो से टपक रहा है। हवा भी गर्म हो उठी है। वसत की हवा। जाल की तरह मौत का फदा धीरे-धीरे उन पर घिरता आ रहा है। दाँतो को भीचकर गोरा ने अपना होठ काट लिया, "दोनो ओर मरको।"

दूसरी तरफ खोचर लोग भी लाइन पर चढ रहे हैं। लाइन से वे लोग माँप की तरह लिपटे हुए हैं। इस बीच पाँच-छह लोग बूडो के साथ शिवतल्ले से खिसक गये हैं। सिर्फ़ सोना का वार्याँ हाथ चल रहा है। गोरा लाइन के किनारे झाड़ियो के भीतर मन्टू को लेकर आँधा गिरा। खोचरो को नज़र नहीं आया। वे लोग चुपचाप पडे हुए हैं। सोना को घेर लिया गया है। मन्टू चिल्लाने जा रहा था, गोराने मुँह पर हाथ रख दिया।

वे लोग हाँफ रहे थे। धुकपुकी चल रही थी। काला, तेल चुपडा, चेचक के दागो से भरा खोचर का मुँह थरथर काँप रहा है। फटे वाँस जैसे गले से निकलती आवाज़ तक काँप रही है, "अभी तक ज़िन्दा है क्या?" सोना को दोनो हाथो से खोचरो ने जकड लिया है। वह काँप रहा है। सोना अगल-बगल ताक रहा था। उसका हाथ शायद नीचे दा गया था।

छाय ही-साय रिवाल्वर की ठडी नमी कपास की तस पर आ मयी । सोना न हाय ड्यर उठाये । बह ताक में है । भचक के गह्वेनुभा दागों स भरे बहरे बामे जोपर क मुँह स गम्भी पासियों का फन बिलर रहा है । इसके बाद ही सोना का समाना शुरू किया । जाते-जाते सोना की आँखों ने मुड़कर न जाने क्या एक बार देख लेना पाहा । झाड़ियों क भीतर स सोना की दोनो आँखें गारा को बड़ी-बड़ी मयी । बड़ी-बड़ी दो आँखें । अमानक जाने कैसे सोना की दो आँखें और बड़ी हो गयी ।

“मस्ट ।

“कोई चारा नहीं है ।

‘ता-ना ।

सोना का आँसों भरा सिर जब तक ओसल न हो गया मोरा एकटक उधर देखता रहा । घायब बालोपाड़ी तक पहुँचने से पहल ही एक झटका मारकर सोना मसी के रास्ते की तरफ मुड़ जाये । खबरदस्ती सोचने की कोशिश की, ‘सोना को ले नहीं जा सकया किसी भी तरह नहीं ।

और औराहे के मोड़ पर आते ही राइफल का कुम्बा सोना के सिर पर आ मिरा । छाय ही टारकोस की सड़क पर हॉठ सट गये । खीर डीला हो गया । सड़क पर एक शक्ति साम रेखा रिबन की तरह लुप्त मयी ।

‘सादा हथियार कहाँ है / हथियार ?

‘पता नहीं ।

‘हथियार का नहीं पता ?

ना ।

‘पाह ?

‘नहीं पता ।

बूट की थोट से सोना क हॉठ कुचल गये ।

‘मैस्टर ?

‘ना ।

मऊसर का फूला हुआ बदन सूस्ते से भरभर काँप रहा है । इस-बाएँ जोपरों के बूटों और बंधुन के लंबों ने सोना की दोनो आँखें में पाहा

अघकार फैला दिया। वह और सिर नहीं उठा पा रहा है। बड़े-बड़े वालों वाला सिर भारी हो गया है, शरीर में कोई जान नहीं। होठ भी बेजान होते जा रहे हैं—न-न-न-न-ना। धीरे-धीरे खोचरो के चेहरे बहुत लम्बे-लम्बे हो आये, हाँडियों की तरह। उसके बाद अपने आप आँखें बंद होने लगी थीं। और ठीक तभी सोना को गाल के नीचे ठंडा-सा स्पर्श मिला। नली को गाल के नीचे की नरम गद्दीदार जगह टिकाकर उन्होंने फायर किया। आँखों की पुतलियों में दर्द की एक सूक्ष्म रेखा जगाकर सोना ने आखिरी बार होठ हिलाया, 'न-न-ना।' फिर आँखें ही नहीं रही। सब-कुछ पत्थर हो गया है। खून के परनाले टेढ़े-मेढ़े होकर गरदन पर से बहने लगे, पशमीने की तरह मुलायम वालों के सिरों से। अफमर का झूला हुआ होठ किलविला उठा, "जल्दी, एकदम। वक्त बरबाद मत करो।"

खून के बाद वे लोग आतंकित हो उठे। जल्दी-जल्दी सब-कुछ झटपट पूरा किया जाने लगा। सोना के बेजान शरीर को उठाकर बैंक के पेट में डाल दिया। सी० आर० पी० का गिरोह झट से बैंक में चढ़ने लगा। दरवाजा खींचने की आवाज हुई। बैंक ने धुएँ का गुवार उगल दिया। इजन की आवाज रात के सन्नाटे को तोड़, धरती पर बरक का डक मारते हुए सामने की बस्ती को निशाना बनाकर दौड़ने लगी।

मोड के लैम्पपोस्ट के नीचे अघकार गला दावे हुए है। बारूद की बू उस समय भी नाक के सिरों को जला रही है और बैंक का धुआँ दायरे बना रहा है। धुएँ की गाढ़ी मलाई फट गयी है, धुनी हुई रुई की तरह बिखर रही है। अत में धुआँ घागे की लच्छी की तरह बिखर रहा है। तभी गोर, मन्टू और बूडो खम्बे के नीचे आ खड़े हुए। अँधेरे में उनके शरीर नजर नहीं आ रहे। मन्टू के कंधे पर साइडवैंग। खम्बे के नीचे धीरे से उसने वैंग रखा। और तभी उसके पाँव के पास खून चिपचिपा उठा। अँधेरे में लाल रंग नजर नहीं आया। वे तीनों झुक गये हैं, खून के थक्के को घेरकर। फलस्वरूप वे उस गड्ढे को देख पाये। गोली का दाग पहचानने में आजकल उन्हें चारा भी तकलीफ नहीं होती। तकलीफ होती है सीना लेकर, सीने का असहनीय दर्द देकर।

जानते हैं। लोकनाथ गार्डन लेन के किराये के कवूतरखाने के ताले में एक पतली चाभी लगाकर गोरा हाथ घुमायेगा। उसके बाद रग, कागज, 'देशव्रती' पतली-पतली किताबें—इन सबको ढकेलकर तीनों शरीर टूटी चौकी पर, सीनातोड आर्त्तनाद के बीच चूर होकर गिर पडेंगे। चाय के कुल्हड पर सिगरेट की राख गिरेगी। मन्टू शायद कागज पर कूंची से 'कामरेड सोना' लिखकर कई वार काट-पीट करेगा। उसके बाद झट से उठ खड़ा होगा। तब सुबह होगी। साइडवैंग को झूलने के लिए एक काविल कधा मिलेगा और वैंग के भीतर एक प्रतिज्ञा कठोर हो जायेगी, वूडो या सुकु की उँगलियों के स्पर्श की उत्कठा में।

'कल' के भविष्य ने ही मन्टू को रोके रखा है। वूडो ने हाथ खींच लिया है, इजन के पिस्टन की तरह। ठीक ऐसे समय, जब उनके कानो में एक ओर पर्वत के गिरने की आवाज उभरी है और उन्हें एक ज़बरदस्त शपथ का झडा खडा करने की ज़रूरत है। बहुत ही ज़रूरी है। फिर भी उस शपथ के खोल में जो उत्तेजना घुस गयी है, उसमें गोरा का कोई हाथ नहीं है। कल उनके सामने पुराने हमलावरो को लाना चाहिए। यूँ गोरा को पता है कि यह बड़ी बात नहीं। गोरा चाहता है, कल तमाम वेलियाहाट्टा शोक में सीना पीटे। समझे उनके वीर योद्धा को, युद्ध के अर्थ को। पूछें, घेर लें और उनकी पूछताछ की वरिष्ठियों से सारे शरीर विघ्न जायें।

गोवरपट्टी के पास आकर गोरा ने जेव से चाभी निकाली। "तुम लोग चलो, मैं जरा बाद में आऊँगा।" मन्टू और वूडो की आँखों में विचित्र उद्वेग, "क्यो?"

"सोना के घर जाऊँगा।"

वे दोनों किसी कुशल मूर्तिकार की छेनी से घड़ी मूर्तियों की तरह क्षण-भर के लिए स्तब्ध खड़े रह गये।

अज्ञातवास

मरे नामे की बटवू और हृद्बीकस की चिमनी का धुबी हृद्बिबों का चूरा, तून बेनियाहाट्टा के अँधरे को पाहा कर रहे थे। एक प्राणी की छाया मृत्यु के लोक में डूबी बेनियाहाट्टा की रात। छतर का बेनियाहाट्टा बारूब की डू सीने में मिय आँख की पुतली में नाचून गड़ाये पड़ा है।

त्रिज पार करन के बाद फूसफूसाकर दो बार बात हुई थी। उसके बाद बे चट से शामब हो भये। शीतसातस्मा के सास पसस्तर बाने मोड़ की बगल से मोरा ने फिर वस का रास्ता पकड़ा है। अब अकेला है। बिराहुन अकेला। और अकेले रहने से ही वो राखसी सुनापन मोरा को नियमने सपता है जमका बड़ा पेट अब बर्षे स भरा हुआ है। बलन और बर्द सीने की हृद्बिबों के पिजर को ठसकर कसे एक टाकठ को जगम दे रहा है। सीने के भीतर अजीब-सी एक टाकठ पैदा हो रही है और दोनों हाथों स अँधेरा चीरकर मोरा जमा जा रहा है। चल रहा है या बोंड़ रहा है जानने का कोई पैमाना नहीं है। रह रहकर एक आवाज आग रही है— हन्-हन्-हन्। और साँस आम क भभके की तरह पस रही है जैसे वह कच्ची आम नियम रहा हो अँधार। होंठ नहीं हिसते। जीभ नहीं हिसती। एक अिबाबिल सङ्क का नाम मन में गाचता है। मोरा बड़बड़ा रहा या सोमा सो ना।

सोमा नहीं है। नहीं है। यह बात मोरा स बेहतर और किस पता है? कई बटे पहले तक जिस सङ्क में इंसान की भसाई के लिए अपना शरीर

सँरात किया, जो लाइन से पत्थर उठाकर हाथ में लिये आसमान फाड़कर हँसा था, उसे पीट-पीटकर, कुचल-कुचलकर खत्म किया गया है। गढ़े पोखर की उपलो से पाथी दीवार और तारकोल के टीन से घिरी वस्ती की बगल से सटकर चलते हुए गोरा बात हज़म नहीं कर पा रहा है। इसान की आँतों में हाज़म की इतनी ताकत नहीं है।

राव की तरह लसदार, वेवकूफ, बेहोश नींद इसानी लोथड़ों पर धपड़े लगाकर उन्हें वेसुघ किये हुए है। और अँधेरे की कँचुल तोड़कर, गूंगे रास्ते के सीने पर बुडबुडाता हुआ गोरा चला जा रहा है, शोक-सवाद लेकर। बूड़ों पहले ही कह बैठ था, "काट डालने पर भी नहीं जा सकूँगा। अपना यह जिन्दा चेहरा अब जिन्दगी-भर सोना की माँ को नहीं दिखाऊँगा।"

गोरा ने भी ज़बरदस्ती नहीं की। वाकई सोना की माँ को वह कैसे समझायेगा? और गोरा? शोक-सतप्त, गरीबी से मारे जिन्दा इसान से वही भला क्या कहेगा? हाँ, अगर सारा देश फट पड़ता, लाखों लोग लड़ते हुए मर जाते, धक्का सभालकर फिर हथियार हाथ में लेकर दौड़ पड़ते तो कोई बात नहीं होती। फिर तो बदले की घघकती हुई आग दौड़ती होती—आग।

बाजू की दीवार जैसे आँसू निकाल लेगी। ऐसी ही दीवारों का सिलसिला। और दोनों आँसू जल-जलकर खाक हो गयीं। दीवार का सीना फाड़कर अक्षर उभर आये। आँखें धीरे-धीरे झुलसकर राख होती हैं। लाल और काले रंग के मोटे धक्षर दिन-ब-दिन आग बनते जा रहे हैं। 'आँसुओं की ताकत में. ब-द लो।' और आगे बढ़ने की ज़रूरत नहीं। सब-कुछ याद आ गया। अच्छा, यह सब कुछ क्या उन्होंने जनता के लिए लिखा था? या कि जनता के सीने के टूटे पज़र को जोड़ना होगा? पता था, नन्टे के बाद और एक। उसके बाद.। गोरा के सीने में बात गड़कर बैठ नहीं सकी। ऐसी ही एक बात गोरा ने रामायण में पढ़ी है। वही बात, जब सुग्रीव के साथ राम का साक्षात्कार हुआ था—सीता रावण द्वारा अपहृता—वैदेही को फँकी हुई निशानियाँ इधर-उधर विसरती हुई हैं—श्री-राम वैदेही के चिह्न देस शोकाकुल। श्रीराम को उत्साहित करने के लिए सुग्रीव ने कहा था 'शोक को शक्ति में।' सिर्फ उद्दीप्त करने के लिए।

बरता बाऊई क्या शोक सन्त में क्यातरित होकर काफूर हो जाता है ? शायद रामायण या बीबार की बात में यह मही समझाया गया । फिर फिर भी योरा को शोक की बात ही याद आयी । सिन्धे हुए बरित एक वमभौंदू शोक । यह शोक लकर अब यह कहीं जायया ? मन्टे दपदपावर बसा मया उरके बाब सोना । योरा के सोने में भीत की स्थिर बसम अब मानो बिदगी भर सिपटी रहेयी । मन्टे शोर सोना मे खबरबस्ती योरा के शरीर पर अधिकार कर लिया है और व उसे सामने की ओर ठेस रहे हैं बसो योराया भाग बसा ।

अब रात के अंतिम प्रहर का सीना चीरकर योरा सोना की माँ के पास जा रहा है । आकर क्या कहेया और कहने के बाद सोना की माँ पर क्या बटेयी, यह सब-कुछ यह साब नहीं पा रहा है । उसे सिर्फ पता है इस असे शरीर का किसी तरह चींचकर सोना की माँ के सामने ले जाना पड़ना । उसके बाद सब खरम । उसके बाद जैसे गौरा मुद ही खरम हो आयेया । सोना की माँ वृत्त में गौरा क सिर के बाल नोब डालना चाहे तो भी उसे कोई एतराब नहीं होमा । असल में गौरा विमोचन से कुछ एमा ही चाह रहा था । एक प्रबंड शारीरिक प्रताडन—ठीक वसा ही जैसा पिछले घाम मेहठर गृही के लड़के को यहुँवन के कायम पर हुआ था । बहर उठर आया था सारे बदन पर । होठो की जोडा मरुडी होकर नीली पड़ गयी थी । आँखें अपजपा रही थी । अने बालो वाला ओसा बडबडाकर मंतर पड़ते हुए बसबिछुटी से लडके को कोडे लगा रहा था जगाये रलने के लिए, लपकी भमान के लिए । जहर की लपकी । लडके की दंहु फूल उठी थी । फिर भी दोनों आँखों मे लपकियाँ आ रही थी । भावपर्यजनक लपकी ।

सोना का घर । अब लगी टूटी फटी पीसी टीन का छाजन घन्ना से धरी बीबार सायन में काई । सब मिलाकर एक जीबस्त तसबोर योरा की आँखों के आगे धर रही थी । ओर यह सामा के तर की दीवार में उन पीपल के नन्हू पीचे की ओर सीधे सिखा बना जा रहा था । मन्टे बुरो—
श्रीक—सब बलम-बसम दिशा में छिटक गये हैं । सारे बैसियाइए

समाचार फलता जा रहा है। भोर होने से पहले ही सब तरफ़ समाचार फैल जायेगा

“पुलिस के साथ मर्घर्ष मे सोना नामक युवक मारा गया—युवक के पास रेडबुक—और रिवाल्वर। और आपत्तिजनक पत्रों..।” कमल मे यह सब पहले मे ही कम्पोज किया हुआ रहता है। निर्फ युवक का नाम बदलता है। और सारे बगल की माँएँ अपने अभागों, बेकार, जिंदादिल लडकों का नाम खोजती हैं छापे के अक्षरों में, अखबार में, अखबार की खबरों में। गोरा को पता है कि भोर के अखबार की इम निर्भीक, निरपेक्ष, निरीह पक्षि पर आँखें फिराकर बेलियाहाड़ा के चायखानों में सत्र गुस्से में गरजेंगे—सालो ने कत्ल किया है, क्रल्ल ! और ह्यूज रोड से हवा की रफतार से खबर दौडती हुई रवर फ़ैक्टरी के नाटे अलों के चपटे मुँह पर लघपथ होकर ब्रेलाग गुस्से को जन्म देगी—सूअर के बच्चे हरामी लोगों ने सोना को मार डाला। तपसे की बाढ में लोकनाथ गार्डन लेन ने लॉदि जैसी जिस बुढिया को कचे पर लादकर सोना ने आम रान्ते पर तिरपाल के नीचे ला बिठाया था और जाढा भगाने के लिए आधा कुल्हड चाय उसके मुँह के आगे लगा दी थी, वह अवश्य ही बहुत कातर होगी। पेट मे न पाला तो क्या बेटा नहीं होता ? बुढिया को पुत्र-शोक जगेगा। उफन पडेगा। माठ साल की फ़जीहत के बाद एक सवाद मुँह फाडकर छिपकली की पूँछ जैने कठ के काग को उखाड लायेगा—कौन सोना वही जिमने गले तक पानी मे डडे होकर मवका उदार किया था—वडी-वडी काँखो वाला वही काला छरहरा लडका। अहा हा-हा ! बुढिया दतहीन मसूडो और पिचके हुए गालों में से सारी जिंदगी के दुखों को समेट लम्बी सांस छोड़ेगी एक बार। और फिर उसका सिर सीने के ऊपर झुक आवेगा।

अचानक गोरा के भीतर अभी-अभी पैदा ताकत ने ऐँठन-सी पैदा की, जैसे कान के पाम बडबडाकर कोई कह रहा है, ‘डटकर मुक़ाबला करना पडेगा। डटकर। तू कम्बुनिस है न। डरपोक कहीं का !’

यह बात कौन कहता था—तू कम्बुनिस है न ? ओहो, बूडो कहता था। अकसर कहता था। और सोना जरा-नी चूक होने पर कहता था—डरपोक। और इन तमाम बातों के टुकडे मिलकर एक बडी बात बन जाते हैं। एक-

एक बात में खतरनाक ताकत होती है। आदमी भूल नहीं सकता। कभी नहीं। जैसे कि पोरा नहीं भूल पा रहा है। बातों के भी हाथ-पाँव निकलते हैं। बच्चा-खासा जिंदा आदमी बन जाता है। एक इंसान। हाइ-मांस का इंसान।

भोर होने से पहले ही बैठना पड़ेगा। बैठकर सारी बातचीत खत्म करनी पड़ेगी। तपसे के करिया मुकु के घर पर मीटिंग। अपने-अपने खतरे की बीमार जाँचकर सब हाज़िर होंगे। योरा पर फिर एक इरतहार लिखने का उत्तरदायित्व था पड़ना बीसा मन्टे के मामल में हुआ था। तासतना का मन्टे। क्या था हैडिंग अहा याद आ गया सहीरों का आरम्भबसिदान खर्च नहीं जाता। मन्टे और सोना दोनों एक जैसे थे उनमें आश्चर्यजनक समानता थी। सोना को हज़ारों खतरों में भी योरा ने हुसमुन होते नहीं देखा। खतरा उठाने में उस्ताद। गोबर-पट्टी के बिराब को तोड़कर भागते समय योरा ने सोना का हाँस-स्विर भाव देखा है। बीमार जाँचकर जब वे दूसर-उधर ठेकी से आगने में व्यस्त थे सोना सीधे-सारे आदमी की तरह धीरे-धीरे बसते हुए खोबर की आँखों के सामने से निकसा था। जाने क्या कहा था गोराने। ठीक याद नहीं आया। असल में उसे धम काया था बहुत अहादुरी दिखायी? जबाब में लड़का हैसा था अरुद इसक दिखाकर—धत! अभी भी मानो हैस रहा है—ध त! यही तो हैसा था अभी कुछ घंटे पहले। सीने में एक दर्द उभरा। बीच-बीच में सीने में दर्द उभरता है। साब-ही-साव मीनू की बात भी याद हो आयी। पतली पीठ पर एक चोटी झुकाठी हुई जैसे गमी के सुनसान में से खड़ी आयेगी, मोरादा सोनादा कहाँ है? और आखिर 'कहाँ' शब्द पर आँखों की पुतलियों से छसकेवा, योरा दा।

तपसे की बाँस-गुमटी के पास ए० बी० सियालरह है। बाठी हुई बसती पाड़ी से उतरगा। कमलियों से ही सारे इसाके को जाँप लिया। झट से। उसकी आँखों पर उस समय हाई पावर का चरमा नहीं होया। रास्ते में उसे नहीं पहनता। मुकु के घर चरमराती चारपाई पर बैठते समय चरमा सगाएमा। ए० बी० की बात याद आते ही कहीं से सोना की बड़ी-बड़ी आँखें सामने पौड़ आयीं। कम ए० बी० अवर समय से आठ

ए० वी० पर गुस्सा आने लगा। वैसे इस गुस्से की व्यर्थता वह नहीं समझता हो, ऐसी बात नहीं है। सब-कुछ समझ कर भी एक दर्द सालता है, अपने हाथों की उँगलियाँ काटने को जी चाहता है।

मालीपाडे के नीम के पेड़ की सूखी टहनियों को छूते समय गौरा ने भैंस के पेट की तरह फँले मेघ को देखा। फिर आँधी आयी, देखते-ही-देखते। दुनिया-भर की धूल उड़ाकर, पाँचू कुम्हार की जग-लगी टीन को धड़धडाते हुए। आसमान काला करके। तूफान उठा। तूफान उठा गौरा के दुबले-पतले सीने में, बदले के भाव से हड्डियाँ कंपाते हुए। 'बदला' शब्द जैसे गौरा के दिमाग के भीतर खौलने लगा। वेलियाहाट्टा के गाढे अँधेरे को फुलायी हुई साहरन की-सी एक आवाज सारे इलाके में गर्-गर् कर रही है। आँखों की पुतलियों पर धूल के थपेड़ों के तीखे हमले को हाथों से काटते हुए गौरा को ए० वी० की बात याद आने लगी। और वह तेजी से चलने लगा। गरम भाप के भभके-से चल रहे हैं अब। ए० वी० के हाई पावर के चश्मे के भीतर से निकल कर आती हुई दोनो आँखें जाग रही हैं। गौरा को पता है कि कल सुबह ए० वी० क्या कहेगा? उसकी नाक के कोने पर पसीना उभर आयेगा। बहुत देर तक बोल नहीं सकेगा। उसके बाद भिंचे दाँतो से बदले की ख्वाहिश उसकी दोनो आँखों को और ज़रा बाहर धकेलेगी, वायें गाल के धूप से जले हिस्से में एक विचित्र-सी थिरकन होगी, 'कामरेड, हत्या का बदला चाहिए एक्शन।' और भी बहुत-सी व्याख्या करेगा। रह-रहकर उँगलियों को चटकाने के अंदाज में हिलायेगा। एक्शन की बात अचानक याद आते ही गौरा की आँखों के सामने रथ का पहिया उठाये, पसीने से तर, कर्ण का असीम माहसी चेहरा तैरने लगा। और रक्षा-क्वच। जैसे यह कर्ण का रक्षा-क्वच है। एक्शन। सोना होता तो क्या कहता? वह अवश्य ही पगला जाता। उसके मुँह से बोल नहीं निकलता। फिर ठंडा होता धीरे-धीरे सारे इलाके के इसान इकट्ठा होने पर। और ए० वी० हलके-हलके मुस्कराता, 'तुम लोगों को चुनावी पार्टी में जाना चाहिए था।'।

गौरा और आगे नहीं सोच पाता। गौरा को अब कुछ भी महसूस नहीं हो रहा है। नीम के पेड़ के माथे पर अटके भारी मेघ की ओर देख

घोरा और कुछ भी नहीं सोच पा रहा है।

बाड़ी रात छंटती हुई साफ़ हो रही है। साफ़ हो रही है धीरे धीरे। पंजर ठेलकर वह बेग फिर से चाम रहा है। उफन-उफन कर। वह बेम घोरा को खींचते हुए चलाने लगा। पुतलीकम का भौंपू बजने से पहले ही यह शोक-समाचार पहुँचा देना पड़ेगा। उसके बाद जैसे उसका बाह बाहई उसे छूट्टी मिलेगी। घोरा के होठों की बरार के बीच धनखिसी हँसी की एक छोटी-सी सहर उठी। घोरा पायल की तरह बड़बड़ाया "ससास।"

नारायणदा के भास-भास रहने पर घोरा को धरोसा रहता है। समझता है, जानता है वह आवमी। उस विश्वास आवमी को देखते ही जाने कौसी हिम्मत बँधती है। आस्था उपबती है। उस एक आवमी न ही तो यहाँ रक्तबीज की भाड़ियों को जन्म दिया है। घोरा कहे या मट्टू या सोना—बिछना भी नाम क्यों न जो सभी उसे आवमी के हाथों टालीम पाये हुए हैं। प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में होने की बबह से घोरा और बूढ़ो साथ-साथ रहे हैं। साथे की तरह। आवमी का साथ। वेन का साथ। और कितना कुछ मन में आता है। तीन बच्चों को लेकर मिनती घामी पेट पर रस्ती बाँध कर एक और ही हिस्म की सड़ाई लड रही है। बिहार के मोतीहारी जाने पर हुई अम की कुरार सुनने के लिए मिनती घामी के कान में कान खूबलाता है उत्कंग में उम्मीद में। हाँ देबरवी कुसी में सुना है इस बार बाड़ आयी है। 'मिनती घामी की पलकों पर स्निग्ध छाया। बरा मंभीर हो कर घोरा ने मुँह लीसा, 'हाँ बाड़ आ रही है भयंकर बाड़।' एक बार नारायणदा के रहते घोरा को बहुत टाज्जुव हुआ था। उस दिन भाँ से सगड़ा करके घोरा उधर चला आया था।

पिताजी उसी दिन रिटायर हुए थे। ए० बी० बेंगल के बहो-भाते में बिन्वनी के चासीस सास मक्ली जैसे हरफों में थफि कर वे हाथ मल रहे थे। सबसे छोटे लड़के की गरदन की बापी खोर की नसें मूज गयीं हैं। ग्रीड टी० बी०। चार बनों के मुँह में घाना डालने का रास्ता विसकुम बंद हो गया। उस समय विश्वविद्यालय का छप्पा घोरा के शूतड़ों पर टाबा-टाबा लगा था ठीक वैसे ही जैसे मूजरपट्टी के बिबह किये सुभा

की जाँघ पर गुणा का निशान लगाया जाता है। क्षगडा अचानक किस बात पर शुरू हुआ था, गोरा को याद नहीं। खटपट चल ही रही थी, “और कोई तो पार्टीवाजी नहीं करता, पार्टीवाजी करने पर नौकरी नहीं मिलती।” ऐसी बातों की धुन ने उस दिन अचानक सुर बदला, “तब पार्टी ही करो, मेरी गरदन पर बैठकर खाते हुए शर्म नहीं आती ? यह कौन-सा आदर्श है ? शोषण की बातें बढ़ कर बकते हो, क्या यह शोषण नहीं है ?” उसने बात को आगे नहीं बढ़ाया था। चुपचाप चला आया था। उसके दिमाग को केवल एक बात ताकत दे रही थी सिर्फ, नारानदा की बात, “एक पेट भला कोई सम्म्या है ? पगला कही का !”

आगे से घर पर खाना नहीं खायेगा। रात को नारानदा के घर पर ही खा लिया करेगा। घर से निकलते समय मिनती भाभी ने किसतो में कहा था, “मझली की दवादारू किये वगैर चल नहीं पा रहा है। लगातार छह दिन से बुखार चल रहा है। घटने का नाम नहीं। वदन से आग छूट रही है, बकसक रही है, दवा न मिलने पर ।”

दिन-भर गोरा नारानदा के साथ रहा। लौटते समय मोतीझील बस्ती के पीछे युनाइटेड मिल के हसन भैया के साथ मुलाकात। व्यास ब्रिज की सीढियों पर ही बैठ गये। हसन भैया ने खैनी मल और फूँककर नारानदा की हथेली पर रखी। होठों को खोल लैनी मसूडे के नीचे ठेलकर नारानदा ने शका। “अमल मे यालिक लो” और नमन भैया के मकलन

और वही आदमी जब हसन के साथ होता है तो विश्रुत असन । मोरा को बीच-बीच में जलन होती थी । कैसी विविध असन ?

‘तुम मुझ पर बिश्वास नहीं करते ?’

‘निसने कहा ?’

‘नहीं । यूँ ही ।’

फिर सुनो मरी माँ कहती थी—मरती है मारी उड़ती है राक उस मारी की बनती है साख । हुम सोपों की बहती बना है ।” हसन भैया के ऊपर बासी दंत-पक्षि में सोमे का बिन्दी की तरह न जाने क्या बमक उठा । सींग के पिन्डरे में हँसी की प्यार पालकर छह साल तक भवाहार प्रेम करने के बाद बदली-हँके दिन जिस सड़की को पर साया था और बगस के कमरे बानी भाभी के कहने पर उसके मांके पर सिन्दूर मया दिया था गारानबा को उसी के घुँघ पेट की बात या नहीं रहती बीमार सड़की की बात याव नहीं रहती । और यह सब याद न रख पाने का दर किटना पहरा है, इसे गारा अच्छी तरह जानता है । सफ़्त आदमी । वह और एक तरह की बंध । अधोपिठ युद्ध । गारानबा के मुँह से ही सुना है ‘साठव बनेबाटा उस समय पार्टी की सबसे कमजोर बगहू थी । पार्टी का उस समय बँटबारा नहीं हुआ था सिगल पार्टी थी । ज्योति बाबू तो हाल में बैरिस्टरी पास करके लौटे हैं । भोलाबा उस बमाने का व्यापमी है । कहा जाये तो हमे अपन हाथों बनाया था उन्होने । पर-द्वार नहीं है कहाँ से बहते हुए जाये थे किसी को पता नहीं । मुँह में लून बूक-बूक कर रबड़ फ़्लैटरी में दूँटे मांके थे धुँकों रह कर बदन पर कुल्म सहकर सीना छलनी हो गया । अंत में तपेविक हो गयी । कटोरी हिसाकर साल कपड़ा बिछाकर गाना गाकर भी जिमाया नहीं जा सका । यह दधीचिर्मों का बेश है समझे मोरा । इस तरह के किताब है ? किताबे ?’

आम की सड़ाई असन है । लून-कराबा । मन्टे और सीना । बाँकों के सामने बिछा दिया गया उन्हें । हुबली पर जान लेकर आम में हू है । कौन बड़ा है मोरा समझ नहीं पाता । धीमपोस्ट के पीचे बरे की फँस ताजा मर्म लून को देखन के बाद स मोरा संभल नहीं पा रहा है ।

उनी बक्त ही पेटो! चार्ज करके कुन्धेन बनाना चाह रहा था। नायद युद्ध नहीं होता, और होने पर एक कच्चे धाव का दर्द ही उगना गया होता। लेकिन उगलकर मोना तो हलका होता।

यहीं से ही रेल-नाइन की बगल से नटा हुआ जहरीला झाड़ उसकी आँव की पुतली में उभर आया। वह क्यों मन्दू के पंज खींचकर छिप रहा था? जाने की बात तो गोरा की ही है। उसी ने तो उन्हे रास्ता बताया था। गोरा ने सोना कम-से-कम पाँच साल छोटा था। और गोरा दा पर कितनी आन्या थी उनकी। गोरा ने भी तो उसे नाय पकड़-पकड़कर कम नहीं चलाया। सारे नमाज की खाल उधेड़कर सब-कुछ पहचनवाया था, "यह देख, देख कैसे मुँह से खून घूकते हुए आदमी जीता है क्यों क्यों?" और मोना नाम के उन बड़े-ने लडके की आँव में और भी जानने की राक्षसी भूच जगती है। तपना है वह। लडके ने पागलों की तरह हाथ लगाया। पोस्टर लिखना सीखा। शुरू-शुरू में हाथ की लकीरें अच्छी नहीं खिचती थीं। उलझ-उलझ जाती थीं। धीरे-धीरे एक घसीट ने लिखना सीखा। मन्दू ने ही धँस के साथ उसे सिखाया था। हाथ पकड़-पकड़कर। मामूली बात के लिए सोना ने पोस्टर बहुत ही कम लिखे हैं। अक्षर-दर-अक्षर सजाकर वह इमान के मन में झटका देना चाहता था। बातों को जड़ देना चाहता था। पोस्टर नहीं, जैसे कविता। पोस्टर लिखने को बैठते ही वह कविता कर डालता था। ऐसी बहूत-सी बातें लिख डालता था, जो कविता बन जाती थी। पहचानने का कोई रान्ता नहीं रहता था। और पोस्टर से जिन लडके ने तुरन्त अभियान शुरू किया था, कपाल की रगों में एक छेद बनवाकर उसने विश्राम किया। अनन्त विश्राम!

पुतलीकल बायें हाथ छोड़, कच्चे नाले को लाँघकर सेइम नम्बर की बन्ती। यहाँ बस यही एक उनझन है। बन्ती की कोई इज्जत-आवृत्त नहीं है। टीन के छाजनों और चार दीवारों से बने बूढ़त-जानों की घनी घन्नी। फलस्वरूप गिनती से बाहर चली गयी बन्ती। तत्र नम्बर लगाये

यम हैं। पंछी की चोंच की तरह मुँह खुला पाते ही मम हुआ साँ करके बोल उठी। मासीपाड़ा की बुरी क्रिस्मत् पर चक्कर काट रहे मेब इस ओर अभी भी बड़े होकर दूटे नहीं हैं यह सच है। ममर पुतलीकस के इर्दगिर्द एक जजीब बमपोटू बातावरण बिर रहा है। पाँच-दर-पाँच धीरे धीरे। और मस की तरह मेब को जब सीम उग रहा है। जब बीसा नहीं। बिसकुल एक मस। सीम टेढ़ा करके आसमान क सीने को निहाना बनाकर बौड़ रहा है। प्यङ्ग बासन क लिए आसमान का सीना। इतने दिनों में आसमान का भी जान का समय आ गया है। और कितना कितना समय। जना हुआ सीना पुल की भाप के बमते-बमते आसमान अब कुरम होने के इरोब है।

पुतलीकस की सञ्जेशी हुआ में उड़ाते हुए हुआ सपट्ट मार रही है। पुतलीकस की आसमान छूती बिमनी साँप की तरह बल खाता धुम्राँ उमल रही है और सारा इमाका भेरकर मोतियाबिब बिर रहा है।

सोना के घर क दरवाज को धक्का बैठे हुए घोरा पसीम से तर-ब-तर हो रहा था। भोर गयी रात के छेपम स भी मरमी छँट नहीं रही है। भीतर की आम। आम की गरमी। रात क सन्नाटे को पुर पुर करती हुई बरबाजे पर धक्के की आबन्ध आम उठी। घोरा और देर नहीं रुक पा रहा है। वदन में कोई दम नहीं है। सुन्न। और बरबाबा जोसने में उतनी ही देर हो रही है। भीतर से कोई आवाज नहीं। सैपपोस्ट के तबदीक से मोसी जैसे तेइस नम्बर की बन्ती के दुपी मकान का सीना फाड़कर बनी गयी है। दरवाजे का धक्का नसे की तरह बड़ रहा है। अंत में साँसी ने राब नऊ की खरखराहट भरे मने की आवाज आयी।

“आ रही हूँ।”

घट से एक आवाज हुई। बरबाबा पूरी तरह कुम गया। सोना की माँ का पतीली की तरह थपटा मँह पसल की दरार स अनिहा की जसन मरी आँखों सहित दीख पड़ीं। पानी की तरह निराकार चहरा। उल्कंठा का माममात्र नहीं है। भोर अभी रात में गारा को देख जरा भी अब नहीं हुए। ताउबुब की क्या बात है? इस सबकी ब आरी हो गयी

आधी रात को खिडकी और दरवाजा खटखटाता है, “माँ ! ओ माँ !” और चुपचाप उठकर दरवाजा खोल देना पड़ता है। शायद आँचल घरती पर ही लोटता रहता है। उठा लेने तक की फुरसत नहीं होती। रात-विरात नहीं है उनकी। इन लडकों के लिए रात और दिन में कोई फर्क नहीं है। जब-तब घमाके की तरह हाजिर होते हैं। जैसे घरती चीरकर प्रकट होते हैं। जरा कुछ मुँह में डालते हैं, शटपट नहा लेते हैं। किताब तलाशते हैं, “मेरी उस पतली-सी किताब क्या हुआ ?” कभी-कभी आते ही कातर हो जाते हैं, “मौसी, जो कुछ भी हो थोड़ा-सा दीजिये। उफ ! दिन-भर पेट में दाना नहीं पड़ा।”

और कभी-कभी मुँह में कुछ भी नहीं डालता। एक पल भी खडा नहीं होता। कोई बात कहकर धूमकेतु की तरह गायब हो जाता है। गाय व ! और दरवाजे पर बूटो की चोटें पड़ती रहती हैं। सगीनो की नोकें मकान को चारों ओर से घेर लेती हैं। हँडिया-पतीला तोड़ते हुए गाली-गलौज चलता रहता है। और सोना की सत्तर साल की विधवा हुआ गले की बत्तीस शिराएँ जोक की तरह फुलाती है “खजहा कुत्तो का गिरोह आया है। यम को क्या आँव नहीं है। इन लोगों को मीत क्यों नहीं आती ?”

आस-पास, अगल-बगल, दसों दिशा में होशियारी फैलती। होशियार। बाज ने झपट्टा मारा है। होशियार। नजर तेज। लडके खिसक जाते। वहाना बनाकर चुपचाप पड़े रहते। खतरा जिस तरह घात लगाकर आता है, जाते समय इतना छुपा नहीं रहता। जाते समय उडिया ठाकुर के चूतड़ों पर नाल-लगे बूट वाली लात पड़ती, “सूअर का वच्चा ! खबर नहीं दे मकता—कब सब आते-जाते हैं—साला ! एक दिन दूकान तोड़ दूंगा।” उसके बाद डर से और नहीं ठहरते थे। जान का डर किसे नहीं है ? पुलिस है तो क्या जान नहीं है ? खोचर है तो क्या उमे डर नहीं है ? जल्दी-जल्दी हमला खत्म करके घुर्ना उगलते हुए लौट जाते थे। जाते समय घापा के चावल बेचने वालों को जवरदस्ती उठा लेते थे। और जिस ओर दीवार पर लिखावट कम है, उसी पामर बाजार के चौड़े रास्ते से लाँटते थे। वरना आसमान से पुष्पवृष्टि की तरह अचानक दस-दस

धेर के बाद फिर सकते हैं। फिर तो वापस मातृपुर्म में सीट बना पड़ता।

सतरा टल जाने पर धीरे-धीरे बग्ली तरह इधर-उधर देकर निकल आते थे। इस तरह की लपेट का सामना करने और उन्हें बेचकूत बनाकर निकल जाने को लेकर हृत्ता भर मजबूत किस्सा चलता था। उस समय कीसा रोमांचक था सब-कुछ। हाथों के रोम बढ़े हो जाते थे। एक सनसमाहट डौड़ने लगती थी। बेरोक दौड़। पाँव कटने से तेजी से खून निकल रहा है। एक बार लपेटे जाने पर मगदू का पाँव कटकर सफ़ेद मांस निकल आया था। जान हाथ में लेकर दौड़ रहे थे सब। पीछे सौ सौ बोलियाँ छूट रही हैं। ग्वालपाड़े में बूढ़ों के घर में सब बट से चुप गये। बूढ़ों की जोरू ने बीननी साड़ी का पस्सा फाड़कर मजबूती से बाँध दिया। बूढ़ों की जोरू की साड़ी बहुत प्यारी और साबुत थी। पोंड़ी देर बाद खून गिरना बन्द हुआ। बूढ़ों के घर ऊबड़-खाबड़ छत पर बैठकर जमके मद्देबाबी मूक हुईं। और सपना / स्वप्न। होंठों से घुएँ के छरने बगल हुए मगदू बोहरा रहा था कान्ति सफल होने के बाद मैदान में एक बि-बा-न समारोह होना। सारा मुस्क उजाड़कर सोम आयेये। ईसानों का वंसल। जंसल। और खून की बूँदों-सा सुर्ज संडा बर्ब से चुची से पत्पत करके उड़या। उफ़ बहु बिन। और सोना या उठता था। जब तक यह माना उसके होंठों पर मधुमक्खी की तरह मँडराने सपता या 'मुबल होयी प्रिय मातृपुर्म।'

धीरे धीरे उस रस से सिचने भूखे ईसानों की हृदयया म सं जलन निचोदने के क्षमाल से वह अपने को रोक नहीं पा रहा है। अब तो ये एक एक मुहम्मते के मसे में कीटों के तार मसे में लपेट-लपेटकर फरा डाम देत है। पीसपोस्ट के नीचे बबान जग की गर्म बाड़। बची लोफ है। गुस्ता और बसन।

सोना की मृत्यु का समाचार सिये मोरा सुन्न-सा लड़ा है। दरबार के एक पस्ते की दरार में से सोना की माँ का रक्तहीन कापड-सा बहरा झाँक रहा है। मोरा की जुबान से कोई बात नहीं निकलती। और बीस एक पूरानी रात का अंत होना ही नहीं चाहता। साना की बुबा की तरह

गठिया हो गया है। रस भर रहा है। हिल-डुल नहीं सकता। फिर भी इसान का हृत्पिंड धुकधुकाता है। इसान जिन्दा रहता है। जिन्दा रहने की असह्य टक-टक ध्वनि अभी भी गोरा के कान में बज रही है। सोना की माँ गोरा की ओर देख विचित्र ढग से हँसी। हँसी के साथ-साथ रस्ती-भर विस्मय, “क्या बात है रे? इस समय आया है? वह हरामजादा कहां है?”

सोना की माँ का चेहरा अब साफ़ दीख रहा है। सारे चेहरे पर ज़रा मास नहीं है। गाल घँसने से गड्ढे उभर आये हैं। पुतलीकल की तारकोल की छोटे-मोटे अँधेरे गड्ढों से पटी सड़क के गड्ढों की तरह। जबकि एक ज़माने में यह चेहरा भरा-पूरा था। और अब आँख के नीचे पिसे चदन की तरह के दाग। उम्र के दाग। अभाव के चिह्न। सोना की माँ गोरा के गूँगे चेहरे की ओर देखते हुए वेचैन हो उठी थी। मन के इनारे-किनारे तरह-तरह के शक फन निकाल लेते हैं। फुँफकार उठते हैं। दरवाज़े के पल्ले को झट से पूरी तरह खोलते हुए सोना की माँ ने कहा, “कल एक बार आया था, कहा ज़रा मुँह में कुछ डाल ले—इतने दिनों के बाद आया है। ज़रा कुछ मुँह में न डालने पर मन बक्ष में नहीं रहता। मेरी बात सुनता रहा। इतनी बड़ी थाली लगा दी थी, लडके के लिए। कहा और सारी आशाएँ तो मेरी पूरी कर दी हैं तूने, अब इन्हें निगल कर मेरा उद्धार कर (रुककर साँस ली)। घर की हालत तो तुझे सब पता है। क्या छिपाऊँ, घर में दाना तक नहीं था। शिवू की दूकान से उधार में थोड़ा चावल और आलू लायी। सोचा, ज़रा उबाल दूँ। इधर-उधर फिगता रहता है। खाता है या नहीं खाता, कौन देखता है? और दिनों-दिन चेहरा कैसा बनता जा रहा है। वालों में एक बूँद तेल तक नहीं पड़ती। खैर मुँह में भात का कौर तो डाल ले। तभी कहीं से एक लडका आकर कान में जाने क्या फुसफुसाया कि बस। भात की थाली जैसी की तैसी पड़ी रह गयी। दीवार लॉघकर पलक झपटे ही हवा हो गया। उसी नमय में ही सीने पर चावल-सा कुट रहा है। रात को कौर तक गले से नीचे नहीं उतरा। ज़रा उसे समझाना-बुझाना। मेरी बात तो सुनता

ही नहीं। ऐस कितन दिन बीतर । बरर बीतर ही म्हे टो खाक सकेना ।

किसी ने मोरा की बीन बँडे रम्मे म खोबरर बँड दी है । सीने में से बाँतों का मुद छूटन के निर हृदय-हृद मर रहा है । सीने के बन्दर बाँतें तेजी से उबन रही हैं । और मोरा की नाँ बन्दनन लपन-सदाकर काँटा हुई जा रही है । मंत्रान की कनकन आनका न कनकन माँ का विस टुकड़े-टुकड़े कर दिया 'आ हूना है मोरा ? नु इस तरह क्यों देख रहा है ? एई मोरा सना कहां है ? बाप दादा ' बनेजा क्यों नहीं है ? एई मोरा ।'

और सीने क भीतर अचानक पैना होन बाची उस आश्चर्यजनक ताकत ने मोरा क पंजर को बँडते हुए उसम जैसे उपलभा दिया 'सोना नहीं है...।'

तूफान का आभास दते हुए सारे पूर्वाकास को कासा करके भैस की तरह ओ मेघ सीय हिला रहा था इतनी देर में बहु सोना के धर के सड़े धन हरबाजे के पत्ते पर बड़ी-बड़ी बूँदों क रूप में टपकन लगा । घटांग घटांग करसा हुआ पस्ता जुनने-बद हान लगा रपड़ खाते हुए । बेहोस-स मोरा के हँठ हिन रहे थ । और सोना की माँ का पतला खरीर बँस हुआ के एक तब झोंके स काईबार आँगन में गिर पड़ा । फिर सीना-तोड़ भासनाब । फिर कराहने लगी । सोना को धर्म में धारण कर बीचन रस की बूँद-बूँद से रचकर, जग्म बेकर आज साना की माँ हँठों में बबी यंत्रणा में टेढ़ी होकर अनुप बन मयी थी और उसकी वरपन की नसों असहनीय दर्प से कमान की टोपी की तरह बिप मयी थी और उसक मुँह के कोनों से क्षाप निकस रहा था । फिर बही बह सी मुना होकर लौट रहा है ।

"एक कीर भाव भी नहीं लामा रे ।"

उसके बाद तेइस मन्बर की पूरी बस्ती का सीमा पाड़कर स्साई का रैसा उठा । जान कौन लोब कसेजा निचोड़कर यमीभूत स्नेह से लोगा का नाम सकर पुकारने लगे । फिर बारिज उतरी । शुरू में हसकी हुनकी । उसके बाद बड़ी-बड़ी बूँदों के आल में सारे बहिन बेसपाटा के गिर पर

घुएँ को रोकते हुए । वारिश उतरी सारा बेलेघाटा को ढँकते हुए, छुरी की नाक की तरह ।

कच्ची नौद मे उठकर तेइस नम्बर की पूरी बस्ती एक लूले आतंक को लेकर घडघडाते हुए सोना के घर के आंगन मे कतारबद खडी हो गयी । शोक, दुख और गुस्मे मे उनके बदन रह-रहकर कांप रहे थे । किसी की ठुड्डी दीर्घश्वास के साथ सीने पर झुक आयी । हड्डियाँ-उभरे सीने । गोरा को बोध नहीं है । राक्षसी खालीपन लेकर दोनो आँखें आदमियों की दगल-भीड मे जाने क्या ढूँढती हैं ।

वारिश के बीच पुतलीकल का सुबह की पारी का भौंपू वजा । कान का परदा फाडने वाला भौंपू । भौंपू की आवाज से अचानक गोरा को होश आया । आज बेलियाहाटा बद । सिर हलका हो रहा था धीरे-धीरे । इतने इसानो के शोक, दुख, गुस्मे को जलन से गर्मी खाकर गोरा विचलित हो उठा । अब खभा नोचने का वक्त नहीं है । अभी कितना काम है । बहुत सारा काम ।

कुछ बोले बिना वह छिटककर निकल गया । सोना की माँ के विलाप मे अब शब्द नहीं हैं । शब्द गल-गलकर बस अस्पष्ट-सी कराह के रूप में निकल रहे हैं । तारकोल की सडक पर उतरने से पहले सोना ने बुआ को चबूतरे पर बैठे देखा था । बुडिया ने एक बूंद आँसू तक नहीं गिराया । गले की बत्तीस नसें फुलाकर उसे होशियार नहीं किया । अब किसे होशियार करेगी ? चबूतरे पर निर्जीव पडी है । जाने के लिए उन्मुख गोरा की ओर देख बढबढायी, “कहाँ छोड आया रे उसे, तू कहाँ छोड आया रे ?”

बुआ के गले मे पहले जैसा तीखापन नहीं है । जरा ठहराव है । अब विचित्र ढँग से स्थिरता है । गोरा ने बुआ की अस्पष्ट अँधेरी आँखो मे से आग की चिंगारी निकलती देखी । दपदपाती हुई । देखते-देखते उसने चलना शुरू किया । और बोलने के वह आसपास भी नहीं गया । उसे बोलना अच्छा नहीं लग रहा है । क्या बोले, क्या बात करे । बात को धोकर पीयेगा क्या वह ? अभी बात का मतलब है काम । जिंदा रहने का मतलब

ही है काम। और काम का मतलब है उषस-पुषस। उषस-पुषस। बेसिया हाटा बर।

पुतलीकस पीछे छोड़कर ह्युब रोड की भीड़ी तारकोल की सड़क। बायीं ओर मेहतरपट्टी। ऊबड़-बाबड़ जमीन। दोनों तरफ़ डोमपाड़ा घुमरपट्टी और मजहूर बस्ती ऊतार-वर-ऊतार खनी नयी हैं। तपसे के ये पर सम्नाटा है। सघर कतरा कम था। बंगाल पुसिस का इमाका। पहले बानतला हाट भेड़ी और मेड़ों और अंभलों से भरा इलाका पार करके कीचड़ से सघपक रामबी किसकू के डरे पर पहुँचे थे सब। ठँबा टीसा। छाबन और तालपत्तों की झोंपड़ी। सोना तो पहली बड़ा जाकर ही खुशी से पागल हो सटा था। उसने रामबी के साथ दोस्ती कर ली थी। उसके बाबा-वरबाबा जामद कभी संवास परगना में रहे ब। उसके बाद भाटे के लिखाब से छिटककर इधर चल आये। बहुत पहले की बात है यह। उस समय पुत भी नहीं बना था अँवेष भी नहीं गय थे। उस समय यहाँ बँसबाड़ा था। भरी बोपहरी में यहाँ भीटा बोलता था। हाथों की ताकत, हँसुओं के घोर से अँवल काट-काटकर और जला-जमाकर और गेहूँबन साँपों का सफ़ाया करके जमीन तैयार की थी। रामबी की अम्मा कहती,

किस्मत का सिखा जमीन पर ऊम्बा नहीं हुआ। सरकारी कागज का सिखा कौन मिटायेगा? चपटा मुँह बीठी नाक और मोटे होंठों की अचानक माद आ जाती है। सभी मोरा को बर्छों की धार की तरह तेज बाँस की पत्तियों और बारिओं की माद आने लगी। टिप-टिप बारिश। बबून के पेड़ के काँटों में बादल फँसा हुआ था। और बारिश टपक टपककर गिर रही थी। रामबी के डरे की गरम मिट्टी जोदकर माबा सूबन गड्डे में अपना बदन सुमाये बीठी थी। मड़के का शरीर मोरा के कंधे पर। पुकारते ही रामबी हाजिर हुआ। बरा घमकाया 'येस्टर नहीं मिस रहा था तो इसे पहले सान में क्या आ रहा था?' मड़के का सारा मुँह सुसस पया था। बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। जिस पर पुसिस का इमना। उस बार मड़का किसी तरह बच गया था। भुटने की एकमी हट जाने की बबह से पाँव बरा भसीटकर बसता था। मड़के को येस्टर बेने में ही रामबी फँस गया। मपर उसने एक भी बात नहीं जयमी। अंत में उसे बेस में बास

दिया गया। गोरा से जो भी बनता है, उसके डेरे पर हर महीने दस-पंद्रह रुपये पहुँचा देता है। एक और इंसान है, जिसे नाटा अली 'पक्के रंग का आदमी' कहते हैं। सन् अड़तालीस में गरजा था वह। और अब इस सत्तर में। बीच में बहुत-से झाड़-झखाड़ पैदा हुए। कालिकापुर के परे, बहुत भीतर जाकर गोरा ने डामूकदिहा के चाचा को देखा है। काकद्वीप की अहिल्या की पापाणदेह में जब प्राण जगे थे, उस समय चाचा की वायी आंख पित्त की तरह गल गयी थी। और फिर वह तो गांधी का देश है। गोरा को याद आया कि जब वह नादान था तो कितना व्याकुल होकर, कितनी बार वह 'देश' शब्द का मतलब खोजता फिरा था। 'भारत के उत्तर में ऊँचा हिमालय पर्वत है।' भूगोल के मास्टर साहब की नसवार से अँटी चपटी नाक अचानक याद हो आयी। मन्टू तो स्कूल-कॉलेज की शिक्षा के ठाठ ज़रा भी बरदाश्त नहीं कर पाया। गोरा को अभी भी कितनी ही बातें याद आती हैं। सोना की बात, रामजी किसकू की बात। रामजी और सोना दोनों ही उस देश में पैदा हुए हैं, जिसके उत्तर में ऊँचा हिमालय है। हालाँकि रामजी अभी दमदम सेंट्रल जेल की साढ़े तीन हाथ की कोठरी में दिन गुज़ार रहे हैं और सोना ने दक्षिण बेल्लेघाटा के कच्चे नाले के घिराव में खून बहाया है, जहाँ वह पैदा हुआ था।

इससे आगे बेल्लेघाटा लोकल कमेटी के साथ-साथ तपसे बानतला होकर मगराहाट तक गाँवों का सिलसिला चला गया है, जिसका पुलिस को अच्छी तरह पता है। इसीलिए अब सिर्फ बगाल पुलिस नहीं रही। अब यहाँ भी कलकत्ते की पुलिस आती है। नरम मिट्टी के सीने पर काँटेदार बूट जमकर बैठ जाता है।

महुआपाडा के कीचड़ से सने ढलुआँ रास्ते के मोड़ पर ही बूढ़े पीपल की जटाएँ उतर आयी हैं। पीपल के नीचे माँ शीतला का थान। शीतला-थान की बगल में कीचड़-भरे रास्ते से होते हुए गोरा सुकु की झोपड़ी में घुसा। पीछे भेड़ी-दर-भेड़ी। फन्टे के जमाने में कितने दगे हुए थे? अमीर गरीबों में, गरीब गरीबों में। गोरा ने एक पलक दिगन्त को छू रहे पानी की ओर देखा। भोर की रोशनी पानी के नीचे पर छिटक रही है। और वस रास्ते के किनारे चीनापट्टी से दो-तीन चमड़े के चीनी व्यापारी पीली

माभा सिये बड़े जेमे सूरज को उमते देख रहे हैं। व भोग रोड भाकर सूरज का उमते बेसत हैं। स्वास्थ के लिए चायव। मोरा ने उधर देखा ही नहीं। भेड़ी के पाभी में खालिमा बिखेरता हुआ गुरज उम रहा है। धीरे धीरे। गड़ही और भेड़ी और बीच में मड़ का सीना धीरकर नारियल के पेड़ का मुसामम तथा साक़ वीस रहा है। भेड़ी के किनारे से लमा ठमुर्जा जमीन पर मुकुमों का घर। घर नहीं कबूतरकागा। बरसात में छीप की तरह ठहरता है। इंटों पर लकड़ टिकाया गया है। ज़ीन में पाँव रखते ही छड़-साठ बोड़ी हवाई जपमों पर मखर पड़ी। बाबा बादम के जमाने की मन्दू की साइकिस एक जोर पड़ी है। कोई बाबाज नहीं है। लापरवाही यहाँ तक कि बाहर कोई स्क्वाड भी ठीनात नहीं। चुपचाप बेरा पड़ने पर बचने का कोई रास्ता नहीं है। पता भी नहीं जनेगा। असभ में परबाह ही नहीं है।

मोरा के पाँव की बाहू से मन्दू ने छेड़सी की तरह कुछे दोनों घुटनों के बीच स सिर ठठाया। एक मखर डामकर फिर सिर घुटनों में डाम दिया। ए० बी० बीडी मुसमाय रखने के लिए तेजी से मुट्टा खीच रहा था। छोटे लकड़पोण पर सब कुछी बने बैठे हैं। खूब पता लग रहा है कि बोड़ी बेर पहल कुछ बातें हुई हैं। पिछली रात की घटना की रिपोर्ट मन्दू या बीरू न बकर की है। वही सिलसिला अभी भी जारी है। चायव कुछ कहते-कहते माँसों के आगे फिर स पूरा दिन जीवित हो उठने की बजह से किसी की जवान से कोई बात नहीं निकल रही है। ए० बी० चायव सब कुछ बारीकी से सुनकर समय पर न पहुँचने की बजह से मन-ही-मन बस रहा है। मोरा पाँव फँसाकर बैठ गया। और बैठते ही देखा कि बायें कोने की टूटी बमह खाली है। सोना बड़ी बैठता या धीवार पर पीठ लगाकर। बरा बदल को डीसा करके। मीटिंग बगीरह में बहु यवाबा सिर नहीं खपता था। दोनों माँसों को मूँदकर बजम धीवार पर छोड़ देता था।

सबकी जवान बन्द है। बीड़ी का जसता सिरा थमकते मास बिन्दु की तरह उभरा हुआ है। ए० बी० के नाक के सिरे पर लाल आभा थमक रही है जिसकी बजह स नाक अजीब क्यी धीर धारवार लग रही है। जामे के पतले सीसों के भीतर से जसकी बड़ी-बड़ी माँस बाहर को उमरी १५ त

दिया गया। गोरा से जो भी बनता है, उसके डेरे पर हर महीने दस-पंद्रह रुपये पहुँचा देता है। एक और इसान है, जिसे नाटा अली 'पक्के रंग का आदमी' कहते हैं। सन् अडतालीस में गरजा था वह। और अब इस सत्तर में। बीच में बहुत-से झाड़-झखाड़ पैदा हुए। कालिकापुर के परे, बहुत भीतर जाकर गोरा ने डामूकदिहा के चाचा को देखा है। काकद्वीप की अहिल्या की पाषाणदेह में जब प्राण जगे थे, उस समय चाचा की बायी आँख पित्त की तरह गल गयी थी। और फिर यह तो गांधी का देश है। गोरा को याद आया कि जब वह नादान था तो कितना व्याकुल होकर, कितनी बार वह 'देश' शब्द का मतलब खोजता फिरा था। 'भारत के उत्तर में ऊँचा हिमालय पर्वत है।' भूगोल के मास्टर साहब की नसवार से अँटी चपटी नाक अचानक याद हो आयी। मन्टू तो स्कूल-कॉलेज की शिक्षा के ठाठ ज़रा भी बरदाश्त नहीं कर पाया। गोरा को अभी भी कितनी ही बातें याद आती हैं। सोना की बात, रामजी किसकू की बात। रामजी और सोना दोनों ही उस देश में पैदा हुए हैं, जिसके उत्तर में ऊँचा हिमालय है। हालाँकि रामजी अभी दमदम सेंट्रल जेल की साढ़े तीन हाथ की कोठरी में दिन गुज़ार रहे हैं और सोना ने दक्षिण वेलेघाटा के कच्चे नाले के घिराव में खून बहाया है, जहाँ वह पैदा हुआ था।

इसने आगे वेलेघाटा लोकल कमेटी के साथ-साथ तपसे वानतला होकर मगराहाट तक गाँवों का सिलसिला चला गया है, जिसका पुलिस को अच्छी तरह पता है। इसीलिए अब सिर्फ बगाल पुलिस नहीं रही। अब यहाँ भी कलकत्ते की पुलिस आती है। नरन मिट्टी के सीने पर काँटेदार बूट जमकर बैठ जाता है।

महुआपाड़ा के कीचड से सने ढलुआँ रास्ते के मोड़ पर ही बूढ़े पीपल की जटाएँ उतर आयी हैं। पीपल के नीचे माँ शीतला का थान। शीतला-थान की बगल से कीचड-भरे रास्ते से होते हुए गोरा सुकु की झोपड़ी में घुसा। पीछे भेड़ी-दर-भेड़ी। फन्टे के ज़माने में कितने दगे हुए थे? अमीर गरीबों में, गरीब गरीबों में। गोरा ने एक पलक दिगन्त को छू रहे पानी की ओर देखा। भोर की रोशनी पानी के सीने पर छिटक रही है। और बस रास्ते के किनारे चीनापट्टी से दो-तीन चमड़े के चीनी व्यापारी पीली

वाभा सिये जंघ जेमे मूरज को उगते देख रहे हैं। व सोन रोड बाहर मूरज को उगते देखते हैं। स्वास्थ्य के लिए जायद। गौरा न उधर देखा ही नहीं। भेड़ी के पानी में भासिमा बिखेरता हुआ मूरज उग रहा है। घीरे घीरे। गबही और भेड़ी और बीच में मेह का सीना पीरकर मारियत के पेड़ का मुसायम तना साक सीस रहा है। भेड़ी के किनारे से लया इमुमी जर्मन पर सुकृओं का घर। घर नहीं कबूतरखाना। बरसात में हीप की तरह टैरता है। इटों पर लकट टिकाया गया है। आँगन में पाँव रखते ही छह-साठ जोड़ी हवाई जपलों पर लखर पड़ी। बाबा मानम के जमाने की मन्दू की साइकिल एक ओर पड़ी है। कोई आवाज नहीं है। सापरबाही यहाँ तक कि बाहर कोई स्क्वाड भी ठीकाठ नहीं। चुपचाप बेरा पड़न पर बचने का कोई उस्ता नहीं है। पता भी नहीं मयेगा। अस्म में परबाह ही नहीं है।

गौरा के पाँव की आहट से मन्दू ने सँकसी की तरह खुड़े दोनों घुटनों के बीच से सिर उठया। एक लखर डालकर फिर सिर घुटनों में डाल दिया। ए० बी० बीड़ी मुलपाये रखने के लिए देखी से सुट्टा बीच रहा था। छोटे लकणपोज पर सब गुडली बने बैठे हैं। सब पता मय रहा है कि जोड़ी वेर पहले कुछ बातें हुई हैं। पिछली रात की घटना की रिपोर्ट मन्दू या बीरू न बकर भी है। वही सिमसिता अभी भी जारी है। जायद कुछ कहते-कहते आँसों के आये फिर से पूरा विम बीचित हो उठने की बजह से किसी की जवान से कोई बात नहीं निकल रही है। ए० बी० जायद सब कुछ बाटीकी से मुनकर समय पर न पहुँचन की बजह से मन-ही-मन जस रहा है। गौरा पाँव फेलाकर बैठ गया। और बैठते ही देखा कि बायें कोने की टूटी बमह कासी है। सोना वही बैठता का बीबार पर पीठ मयाकर। बरा बदन को डीसा करने। भीटिंग गौरा में बहु क्याया सिर नहीं खपाता था। बागों आँसों को मूँदकर बदन बीबार पर छोड़ देता था।

सबकी खबरन मय है। बीड़ी का बलता सिरा जमकते नाम बिन्दु की तरह उभरा हुआ है। ए० बी० के माक के सिरे पर लाल भाभा जमक रही है जिसकी बजह से माक जमीन ख्यी और धारदार बन रही है। बसने के पतले सीलों के भीतर स उसकी बड़ी-बड़ी आँसों बाहर को सभरी हुई है

जैसे फट से एक आवाज होगी और आँख की पुतली खून विखेर देगी, "इस हडताल-वडताल से कुछ भी नहीं होगा।"

छोटे-से कवृतरखाने का वरामदा। वरामदे का छाजन। घुर्माँ वेचैन हो रहा था। घुएँ का ढेर। ए० वी० ने झुककर फर्श पर घिसकर वीडो बुझा दी। वहाँ काला-सा एक दाग पड गया। ऊलजलूल। सारे वदन की जलन लेकर मन्दू ने फटी आवाज में (मन्दू के गले में दर्दलि गीत बहुत अच्छी तरह उभरते हैं। उसका सोज से पुर गला अचानक इस तरह कैसे फट गया?) पूछा, "क्या क्या क्या करना चाहते हो?"

मवाल टाँगकर मन्दू सीधे ए० वी० की ओर देख रहा है। छोड़ी देर के लिए चुप्पी। ए० वी० ने फिर एक वीडो जलायी। मीटिंग में बैठने पर ए० वी० लगातार वीडो पीता है। आज उसकी मात्रा और भी बढ़ गयी है। पार्टी के ऊपरी नेतृत्व के साथ ए० वी० का सीधा सम्पर्क है। पूरे साउथ बेलियाहाट्टा का उत्तरदायित्व, लोकल कमेटी के मंत्री की जिम्मेवारी ए० वी० पर है। फलस्वरूप ए० वी० की जुवानी ही पार्टी का निर्देश आयेगा। और एक ड्राँवाडोल हालत में वे सभी वेचैनी के साथ एक निर्णायक बात सुनने के लिए बैठे हैं—जो बात उनको नुकसान से बचाने में मदद करेगी, सोना के कत्ल का बदला लेने के लिए हिम्मत जुटायेगी, और दक्षिण बेलैघाटा के नगे-भूखे लोगो के दिलो में घुसने का दुर्गम रास्ता बतलायेगी।

वीरू ने दोनों हाथो को मुँह पर फेरा। जाने कौसी एक आवाज हुई। रात-भर जागने से आँखो की जोड़ी जल रही है शायद। तिरछी आँखो से निवारन गोरा को देख रहा था। शीशाकल का निवारन वही पट्टीदार फटी हुई हाफपट पहने हुए है। अभी थोडे ही दिनों में वह इस कोर में आया है। मोना के रहते ही। सोना ने ही कहा था, "निवारनदा को कोर में लेना चाहिए। एक तो मजदूर हूँ, दूसरा वक्त दे रहे हूँ।"

ए० वी० ने वीडो के जल्दी-जल्दी कश खीचकर उसे निवारन की ओर बढ़ाया। दियासलाई की तीली तल्लपोश पर लकीर खीचते हुए कहने लगा, "कामरेड, मोना ही पहला नहीं है। उससे पहले हमने नन्दे को खोया है। शासक वर्ग अपने गुडो का गिरोह लेकर हर जगह हम लोगो पर टूट

रहा है क्योंकि वे जानते हैं कि यह एक क्रांतिकारी पार्टी है...।”

धीरे धीरे गले में आवेग आगने गया। जाने कब अन्तमने भाव से अरमा उठार लिया है। भारी पलकों बंध होने लगी थीं। मगर पलकों की जोड़ी हलकी-सी वरार रखकर स्थिर हो गयी। ए० बी० की गुद-गंभीर आवाज भेड़ी के घाँव पानी को उछाल रही है। चार-पाँच जोड़ी काग बघीर प्रतीला में लड़े हैं। और बहुत दूर से एक मरा हुआ गला काँप-काँप उठ रहा है—एकशन आरमा बदला।

अब तक मोरा ने बहान नहीं जोसी थी। ए० बी० की बात पर लरीर का बीसापन टूट गया। कमाल लानकर जमे हुए लीर को बँसे किसी न छोड़ दिया। मुकुओं के डेरे तक भाने का समय ऐसी ही आसका मे कटा है। बात सुनते ही मोरा का स्थिर भाव टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। उधर ए बी० उस समय भी बोले जा रहा है ‘इतने दिनों की अबरबाबी साहन को छोड़कर पार्टी ने आरम-अभिधान की महान साहन को ऊपर उठाया है—कामरेड सोना हमें रास्ता दिखा गये हैं।

‘नहीं।

‘‘पानी?’’

‘स्वेच्छा से मृत्यु।

‘मरने से इतना डर?’

‘‘तो मरने की होड़ हो रही है क्या?’’

क्रांतिकारी साहस और बलिदान।

‘हाँ ठीक है। मगर वह सब-कुछ बिबा रहने के लिए ही तो है यहाँ तक कि मरना भी।’

ए० बी० की पाँकों लँगलियाँ उसके मुँह-रास्ते बालों में बेचैन होकर सेम रही थीं। होंठों के छोर पर अन्तजा की हँसी बीड़ी सुनगाने तक महमुस हुई। जोड़ी बेर बाद ही आँखों की पुतलियों में तारों के सपनों का गथा गया—एकशन पार्टी की साहन है। नहीं मानने पर पार्टी छोड़नी पड़ेगी। लीर प्रतिक्रिया के डर से अघर बात बिच जाते हैं तो अन्तय रास्ता नापना पड़ेगा। दूसरा रास्ता।

बहुत बेर तक सलाह-मजबिरा तथा बहस-मुबाहिसा चलता रहा।

गरमागर्मी भी हुई। फिर दिमागो का पारा नीचे उतरा। एकदम नीचे। दुख की गहराई में। निवारन और सुकु के हाथ शुरू से ही बदले के लिए कुलबुला रहे थे। अत में वीरू भी उनके साथ हो गया। सिर्फ़ मन्दू और बूडो वेलियाहाट्टा बद की ज़िद पर अडे रहे। अत में तय हुआ कि हडताल की जो पुकार की गयी है, वह बरकरार रहेगी। एक्शन की भी कोशिश चलेगी। सुकु चट से उठ खड़ा हुआ एक झटके में। बाहर नजर दौड़ाकर आयेगा। उसके बाद सब अपने-अपने रास्तों पर खिसक जायेंगे। पहले ए० वी० जायेगा। पागल कुत्ते की तरह वे उसे खोज रहे हैं। पाने पर नीचे खायेंगे। उसके बाद गोरा। उसके बाद धीरे-धीरे बाक़ी सभी जायेंगे।

पहला झड़ा लगा मोड के लैम्पोस्ट के ऊपर। बूडो काले कपड़े का टुकड़ा मुँह में लेकर सरं से ऊपर चढ़ गया। थमे हुए आसमान के नीचे लैम्पोस्ट के माथे पर काला झड़ा फहरा। नीचे गोरा, मन्दू, अली और विजयदा खड़े हैं। बूडो के नीचे उतरते ही उन लोगो ने फिर चलना शुरू किया। बस रास्ते के दोनों ओर की दुकानें बद कराते हुए आगे बढ़े। कहीं-कहीं थोड़ा बहुत बहस-मुवाहिसा भी हुआ। तभी बूडो सामने आ खड़ा होता। बूडो की हिम्मत की बात इस इलाके के काने टेंगरा तक को पता है। झट से दुकान का टट्टर गिर गया। झमेला खड़ा हुआ पुतलीकल के गेट पर। तब तक दिन चढ़ आया था। सूअरपट्टी से दो पहियो वाला छकड़ा नूअर का मास लादकर घटांग-घटांग आवाज़ करता हुआ न्यू मार्केट की ओर चला गया। पारी चालू हो रही है। सारे इलाके ने काले बुर्के से अपना चेहरा ढाँप लिया। गोरा पुतलीकल के गेट का एक पल्ला पकड़कर चमगादड़ की तरह उस पर झूलने लगा। गेट मीटिंग। बहुत दिनों से वे लोग इस रास्ते से नहीं आये हैं। शुरू-शुरू में जुलूस, स्क्वाड, स्ट्रीट कार्नर मीटिंग जैसी बातें लगी ही रहती थी। तब पोस्टर और वॉलिंग के अलावा कुछ देखने को ही नहीं मिलता था।

गोरा ने आवाज़ लगायी। नारों से वातावरण गर्म हो उठा। जोश आने लगा। इसके बाद उसने मुँह खोला। सीना-तोड़ दर्द से भरा बोल निकला, “दुश्मन को याद नहीं है कि यह वेलियाहाट्टा है निमाई सरकार का वेलियाहाट्टा।”

अचानक मांस¹ गिरा। योरा के माथे पर सोहे के छड़ की चोट। पुतलीकस के सिक्कोरिटी क्रोस का हवाई फ़ायर। बूड़ो की ठरक सिबतस्से के काप्रेसी मस्तान सोम लाठियाँ सेकर बीड़ रहे हैं— 'मारो सासे जानगी के बच्चों को। और पुसिस। अचानक लड़ाई का पैदान।

बर्करो की भीड़ के बीच से वे सोम किनारा काटते हुए मेहतरपट्टी के भीतर बस पये। माल की आबाब से काल के परबे फट रहे हैं। हाथ-पाँव कट-पट रहे हैं। और शोक का गहरा कासा बिम्ह सारे इसाके को बेरकर आसमान के नीचे उस समय भी स्थिर है।

नासे से घटी हुई बिरी शीवार फ़ाँदकर सब सुमरपट्टी के साथ सपे ठिरछे पार्क में बैठकर बरा मुस्ताने लगे। और इतने में ही सुना कि थोड़ी देर पहले सिबकल के पास एक पुसिस बाला कल्प हुआ है। सुमरपट्टी के पार्क में आकर उन लोगों ने हाथ-पाँव छोड़ बिये। बकान-बर-बकान। बदन पर अब कोई बस नहीं है। अतरे की ठेब बंध माक में आकर लग रही है। और क्या-क्या हो सकता है। बोरा मन्दू की ओर देखकर बवी हुई हँसी हँसा। मानी अतरे के हाथ-पाँव निकल रहे हैं। अब देखा जाये कि क्या कुछ होता है!

'सुकु सोनों का काम है।

असी ने गुस्से स कहा 'ठीक किया है।

असी भीतर भीतर हूबम महीं कर पा रहा था। पुतलीकस के आगे माल बिरने पर एक किर्वा उसकी ऐड़ी में आ गया था। एक बोटी मांस उड़ाकर ले गया है। गोरा की थोबना भी कि जाम को पाँच-सात बनों का सकर एक स्त्राड निकामेमा। तूफ़ान की तरह। अभी वे सोम दिता तय नहीं कर पा रहे हैं। बिजयदा बहुत बयादा एक्सपौरड नहीं हैं। हालबाल पता लवाने के लिए उन लोगों ने सनाह-मलबिरा करके बिजय दा के हूब रोड के मोड़ पर पहुँचते ही अणजीभी मीरिया की तरह सो बाड़ी पुसिस ने पाक में देड किया। अतरा सेकर ही जिनकी गृहस्थी पसती है कौए के भूँह से समाचार पाकर वे लोग उड़ गये। गद्दा और

पोखरा । और सडा हुआ नाला । और रेलवे ओवरब्रिज पार करके हवा मे गायब हो गये ।

वादल ने और पानी नही गिराया । पानी-भरी आँखों की तरह वादल । वादल के नीचे वेलियाहाट्टा । वेलियाहाट्टा का दमघोंटूपन । साँस लेने मे दिक्कत । हवा का नामोनिशान नही । काले कपडों के टुकडे जीभ की तरह झूल रहे हैं । जबकि कुछ भी हिल-डुल नही रहा है । स्थिर, निरुपन्द । जैसे सब-कुछ पत्यर हो गया है । पुतलीकल की चिमनी से घना गाढा धुआँ उठ रहा है, वायलर मे आग बनाये रखने के लिए । और यहाँ-वहाँ लोगों की भीड । फूसफुसाकर बातचीत, “देखो क्या होता है, गोरा, लोग छोडने वाले नही हैं । अभी तो बस शुरुआत है ।”

यानी अब आसमान चीर कर गाज गिरेगी और खामोश वेलियाहाट्टा अचानक निप्टुर डैग से फट पडेगा । काली पट्टियो से लिपटे वेलियाहाट्टा के प्राण जायेंगे । वेचैन प्राण ।

विजयदा के चले जाने के बाद वे तीनों उठ खडे हुए थे । रेड से पहले ही हवा हो गये थे । नेशनल रवर के पीछे का रास्ता पकडकर नीचे पचानन-तल्ला । सुस्ताने का मौका भी नही मिला । पचाननतल्ला से नाला पार । नाला पार की इस जगह का पता खोचरो को नही है । पत्यरो से ओट ऊबड-खाबड रास्ते के एक तरफ पडे लकडी के कुन्दे पर ही वे बैठ गये । जल्दी से योजना बनानी है । तीन जनों का एक साथ घूमना-फिरना बेवकूफी है । सब साथ-साथ पकडे जायेंगे । सबका अलग-अलग दिशा मे छिटक जाना ही बेहतर है । वाद मे मौक़ा देखकर मुलाकात की जायेगी ।

लकडी के कुन्दे के पीछे नाला । गदा नाला । कलकत्ते की कीचड-गन्दगी को लिये गदा नाला । और गदे नाले के दाहिनी तरफ़ किलखाना, हड्डीकल । गायें ज़िवह होती हैं । और लाइन की वग़ल मे उनकी आँतें हवा मे फुलाकर, धूप मे खीचकर विछा रखी हैं । बदवू निकल रही है ।

यूँ ही गोरा का दम घुट रहा था । फिर यह बदवू । दौडने की वजह से सीने मे अभी भी घोडा-बोडा दर्द उभर रहा है । ज्यादा दौडने पर सीने के पाम एक दर्द उभर पाता है । असल मे शरीर ही कमजोर होता जा रहा है । तीनों ही पनीने से तर । होठ सूख कर लकडी बन गये । जल्दी मे कोई

आ घेरा हो। हाथ-पाँव नहीं फँला पा रहे हैं। मन्टू वारीकी से पूछताछ कर रहा था, जैसे रास्ता खोज रहा हो। रास्ता कहाँ है? हूवहू नन्टे जैसा हाल। तालतल्ले का नन्टे। मिर पर कोमत लगी थी। और लडका खोचर के दीडाने से एक ब्लाड्ड लेन में घुस गया था। उस समय सिर्फ़ घुसने की बात याद रही थी। फिर निकलना पडेगा, यह बात भूल गया था। तब तक एकमुँहा गली का मुँह उन्होंने घेर लिया।

“अली।”

“हाँ।”

“तू डरे में चला जा। स्थिति खराब देखने पर बी० सी० में चले आना।”

“नहीं।”

“अब वहस का समय नहीं है।”

“नहीं, नहीं।”

“बात मत बढ़ा।”

“नहीं। यह नहीं होगा।”

“जा।”

“नहीं।”

“अली।”

मिन्नाज विगडा जा रहा है। पारा चढ रहा है। पारा और ऊपर। विजयदा के मुँह से समाचार सुनने के बाद में ही रुलाई का एक वेग सीने के भीतर घुमड रहा था। इसीलिए तो गला फाडकर रोया नहीं जा सकता। जलन बढ़ने लगी। अचानक स्वर धीमा हो गया, “तू तो समझदार है अली, क्यों नहीं समझ रहा है? सभी अगर एक-साथ इलाका छोड दें तो सगठन की क्या हालत होगी? तुझे ज्यादा नहीं पहचानते। रह जा।”

अली की चपटी नाक होठ पर झूल आयी है। बैंगला अच्छी तरह नहीं बोल पाने पर भी, मयझता खूब है। और समझता है, इसीलिए चुप मार गया। मन्टू किसी बात को आधी पेट में, आधी मुँह में लिये वेचैन होने लगा। अली की मिचमिचो आँखों की जोड़ी छोटी हों आयी। उसकी

बाँधों में आसानी से पानी नहीं आता। छाती फटने पर भी नहीं।

धीरे-धीरे वह चला गया। कितनी अनिच्छा से वह सीटा यह तीनों आश्चर्यों के इस छोटे दस को ही पता है। सिर्फ़ तीन जने। तीन इंसान।

गोरा बूढ़ो और मट्टू। विजयदा गोरा की ओर मुका अब मुहम्मद में मत घुसना। घुसते ही मारा जायेगा। सारा इसका छान आता है। बी० सी० में चला जा मीनू शाम को जायेगी। उसी की पुबानी सब सुनगा।

‘और तुम ?

‘वो बिन एक दास्त के घर बिठा कर बेजूगा। उसके बाद ।

जब इंसान के नाम पर वे तीन जन हैं। तीन जनों का छोटा-सा दस। विजयदा भी बोड़ी वेर पहल चल गये हैं। अब मुहम्मद से कबरे माने-से जाने का काम विजयदा को ही करना पड़ेगा। यानी कूरियर। उन लोगों न विजयदा को बुँघसा होते हुए गायब हाठ बेखा। मारा न खासी मबर रास्ते पर बिछाए रली।

अचानक वह झट से उठ खड़ा हुआ। मट्टू न ही ठकावा किया कि असो अब बैठने से कोई फायदा नहीं है। सक्की का कुम्हा पीछे छोड़ गिने नामे की बगल से लिचे-लिचे चलने लये। मट्टू का एक हाथ गोरा की पीठ छूकर डीमा हो आया है। उन्होंने तय किया कि साइन पर चढ़ेंगे। बूढ़ो खीस उठा “एक बार न मसीहूत नहीं मिली।

गोरा और मट्टू ने बात टाल ली। बात वह यमी। साइन पर से ही शार्ट-कट है। उन्हें बहुत जल्दी हो ऐसी बात नहीं। बदन को डीस देकर ही चल रहे हैं। फिर भी इस शार्ट-कट रास्त का कैसा लिजाव है! गोरा के मुँह से बनजाने में एक बात निकल गयी “वे क्या हुने न पाकर मेरी माँ को ही बोसी मार लेंगे बूढ़ो ?”

“हट भसा ऐसा होता है क्या ?

मट्टू बूढ़ो की बात चरचर काटन भगा क्यों ? क्यों नहीं होता ? उनसे ईशानियत की जम्मीब रखते हो ? भलमनसाहूत की ? ताज्जुब है।

मारा में मुँह नहीं खोसा। न तीनों जब जम्बी-जल्दी चल रहे हैं। मट्टू की बात ने असल में उन्हें उरुसा दिया है। और गोरा सोच रहा था—

कोन-नी शरम में वही क्या था और किमाने भला इले क्या था । आदामाने
 के पगसे बिनु की खुशाल पर हर बहुत गुमान खमाने का रिश्ता बना है ।
 कहुवा है बापु भी । शिके बापु । भु भु करनी हुई बापु । माता का नाम
 निजाम तक नहीं था । गुण्य की रीजनी पढ़ने पर हीर बनाइएन की
 तरह बापु का तगत्वर रिजमिवाला था । अमरना था । बसु २ २० ।
 ने भी तो बापु के बूढ़ के भीतर आगनीकट बननी, मगना म नाननी-
 बता पाया था । शीठा-अनपल । और नीला नी वरनी की ही बटी है ।

बैठेपान में बिममिवा ने निगाह नहीं है । उमर-५ ३४६, ५५
 निपकल और भी जान किगनी कर्म । गुड के बापु न इनी उमर-५ ३५७
 गट-नटवर हृदियी में बूब उभा थी थी । उमर-५ के बिमन उम । ५५७,
 ने भाग लवाबी, करनी गे ही भाग बुजानी । और नूड वा न ५ ५५७
 लाक ही मवा । बागनी के उमर-५ और निजामन वा नई रिम व
 रिजाम नहीं है । बैठेपान में गेजनी आबिगनी की मी कही नहीं है । मी
 के जने जरीर पर गड निजानी ने गिलने-मृपन भीदी ५ नदी ५० ५५
 ने मरन की लवाकर मुकु न कहा, "जब उमर-५ गेई देह की ५० ५५
 कर उमर-५ ममक भर बुना ।" बापु कफ-५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५
 है । अबक है ।

बापक की भाव । रीजान का कनिमा अमान मानी कान । ५५
 के भाव पर मुझी गीत की प्रीम की गड अमर-५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५

शाम है। ये तीनों लम्बे डग भरते हुए चल रहे थे। वालू के चर की ओर। अब वालू का कहीं अता-पता नहीं है। फिर भी वालू का चर, वालूचर। वालूचर का मतलब है चौड़ा सीना। पूरी दीवार पर स्टैसिल की छाप। वालूचर का मतलब एक दगल-भर जवान लडके। भविष्य का सपना, पार्टी का आधार। खोचरो को कॅपकॅपी। वेलेघाट की जान। वेलियाहाट्टा की आन।

यही अत है। वालूचर ही वेलेघाटा का अत है। गरीब वेलेघाटा की आखिरी सीमा। उन लोगो ने उसकी सीमा में पहुँचकर चैन की साँस ली। इसके बाद नाला और भेडी। भेडी और नाला। और ज़रा भीतर जाने पर, मछली की बू पार करके, कीड़ा खाये पके घान का गीत।

वे लोग काले पानी के सीने पर छाया बिखेरते हुए चल रहे थे। घने काले पानी की गहराई में कोई और सँवार। मुरारी के इकहरे शरीर पर चारों ओर कोई और सँवार लिपट गयी थी। वालूचर का मुरारी। गहरी रात को उन लोगो ने मुरारी को झील के पानी में डेलकर लगातार गोलियों से दागा था। गोलियाँ आर-पार निकाल दी थीं। झील के पानी ने निष्ठुर ढग से खून के दाग छिपा लिये थे साजिश की स्थाही में। सिर्फ झील के किनारे वसे मजदूर-मजदूरनियो और रेलवे गैंगमैनो की झोपडियो पर 'इनकलाव' की गूँज घबके मार रही थी। भोर गयी रात 'इनकलाव' शब्द की गूँज से उनकी वेवस नींद टूट गयी। उन लोगो को पता चला कि एक आदमी ने यह बात अपने कातिल के सीने पर फेंक मारी है। और उसके बाद ही गोली की आवाज़। और उसके भी बाद लेक के किनारे पर बने झोपडो के मीधे-सादे लोगो ने बात का मतलब खोजा था। 'इनकलाव' का मतलब? जो बात कहकर मुरारी ने राइफल की गोली हज़म की थी, वही बात। उसका मतलब?

और ए० बी० ने कहा था, 'एक्शन से, सघर्ष से जनता सीखती है।' शरीर पर गोली दगने से पहले मुरारी जूझा था। उसके बाद झील का ठंडा पानी। और इनकलाव। हनीफ ने ए० बी० से पूछा था— 'इनकलाव का मतलब?' इससे ही सब-कुछ प्रमाणित हो गया। एक्शन का मतलब ही है प्रचार। सगठन। मन्दू बात नहीं मान सका। वह फुफकार

ठठा था 'कामरेड मुरारी हम लोगों की भाँसों की पुतली थे। वो बीबित रहत ता पार्टी को और पयादा मजबूत बना सकत थे।

"हाँ निश्चय ही।"

"तो क्या जिंदा रहने के लिए होड़ मचाई—क्यों ?

"मरे क्यों ? कामरेड मुरारी उनकी भाँसों से बचकर मान सकत थे। जनता के भीतर पैठकर लड़ाई की जमीन तैयार कर सकते थे।

"सहीर कामरेडों की आसोचना नहीं सुनना चाहता।"

तब कहने के लिए कोई बात नहीं बची। किसी काम के बहाने मस्टू बठ गया था। और बन साट पाइपगन को बीसी पैट की जेब में डाले ए० बी० भी उठ लड़ा हुआ। ए० बी० के सिर पर उस समय हजार रुपये का इनाम था। और इसीलिए छोटी पाइपगन हमेशा उसकी जाँप छली रहती थी। खून में लोहे का ठंडा स्पर्श। मकड़ी का हँडिल मनाकर बैम्बर की तरह बना दिया गया है। ए० बी० कहता है 'बन साट। बसत में है पाइपगन।

श्रील की बजल में बसेक हाथ की दूरी पर पुरानी स्त्रिंग कैंकरी और सीसनवार भीमा मैदान। बारीक रेत का बामूबर। सारे बामूबर को बरकर मानो सती की वेह के टुकड़ों की तरह मुरारी बितरा हुआ है। इनकलाब की बिरकती हुई आबाज सारे इसाके को बरकर छिपी हुई है, न जाने कब फट पड़े ? ऊपर से कुछ भी पता लगाने का उपाय नहीं है। बामूबर जो है वही है। बाहिनी ओर सारे कलकत्ता का बुहार्य साक किया मैसा। मैसे का पहाड़। पेट फूसकर बोल बना हुआ कृता भाये पति पहले पैदा हुआ बच्चा—कड़न जोड़ हुए और बरबू। बरबू।

बामूबर क बीच में लम्बे बकफूम की एक मग्ही बौरप डूबर घूर का बाहिरी टुकड़ा मुस्ता रहा है। रेल-साइन के पन्धरों के टुकड़ों और मुरनी बने तारों से ठोकर खाते-साते ब लोय बी० सी० में आ लये हैं। मारे रान्ने पर जोर-जोर से साँस लेन के कारण वे अब बुढ़ी तरह पन्थ हैं। मस्टू की बोलों भाँसों कतर की तरह सुन्ने हैं।

"किसी का बता-पता नहीं है।"

"मामी की बुकान पर चरें।"

“भाभी के लूले पति को कई दिन पहले उठा ले गये थे न !”

“फिर क्या हुआ ?”

“दूकान पर नज़र ज़रूर होगी ।”

“चलो तो ।”

गोरा हथेलियों से सारा चेहरा ढाँपकर बड़बड़ाया, “ज़रा गला तर करना भी ज़रूरी है, कठ एकदम सूख गया है ।”

सिर नीचा करके वे लोग भीतर घुसे । भाभी की दूकान का टट्टर पूरी तरह नहीं उठाया जाता । पहले दूकान में कोई-न-कोई हर समय जमा रहता था, दूकान गर्म रखता था । गुरु के दिनों में शायद सवेदना मिली चाय की प्याली के मारे आते थे । अरे, जोरू को कितनी तकलीफ है ! आदमी रेल से दोनो पाँव कटाकर बैठा है । अब पाँव नहीं है । बेजान मास के पिंड वगन की तरह झूलते हैं ।

दलती दोपहर आज विलकुल खाली है । एकदम सन्नाटा है । विचित्र एकांत है । गोरा को देख भाभी की चिकनी नाक की कोर पर एक मलिन भाव सरका । पतले होठों में हँसी खिली ।

“नहीं है ?”

“ना ।”

“बहुत मुश्किल ।”

“आज किसी का भी अता-पता नहीं है ।”

“विल्डिग में हैं ?”

“ठीक पता नहीं है । मगर लग रहा है, नहीं हैं ।”

तभी टूटे हैंडलो और काले दागों वाले सस्ते प्यालों को उलट-पलट-कर घोना गुरु हो गया । कलाइयों में चढ़ी शख की चूड़ियों की छन-छन वजने लगी । चाय की वात मुँह से नहीं कहनी पड़ती । भाभी को पता है, इन लडकों को प्यास लगी है । प्यास लगने पर ही आते हैं इस ‘भाभी काफ़े’ में । उनमें से किसी ने मज़ाक में यह बात कही थी । वस, तब से यह बात चल पड़ी । सभी तूफान की तरह आते हैं । दो क्षण बैठते हैं । गरम-गरम चाय में गला माफ़ करते हैं । फिर चट से नायब हो जाते हैं, कबूतर की तरह ।

पैस के बारे में नहीं साचना पड़ता। सोचना हाता है इन सड़कों का सेकर। इनकी बिल-खोस हौमी का सेकर। बूकान में जमकर बैठकर, मुस्क-मुस्क में तूफान उठाय है। बातों की फुससड़ियाँ। कँसी-कँसी बातें। चीन म्म संयोजनवाद बाति साम्राज्यवाद के तलुए खाटने वाला कुता— ऐसी बरों बातें भाभी-काऊँ की भाभी की समझ में नहीं आयी। बेला नाम की मरल बहू। बेला साचती उफ़। सारी दुनिया को उधड़ डाला है। फिर भी बेला समझती थी। 'भाभी काऊँ' की भाभी। उसके समझने सायक बातचीत भी होती थी। बेला समझती है कि ब लोग ऊपर से नीचे तक बदलना चाहते हैं। मंत्री-मंत्री का बदलना बदलना नहीं। बिलकुल जड़ से पलटना। एकदम उलट दना चाहते हैं। स्वप्न-कथा मुनते-मुनते जाने कब भाभी के सीने में भी एक तूफान-सा उठा है। मये-मय सड़कों की चमकती हुई आँखों में और पसीन में तर चहरों पर आस्था है अदृष्ट दुइ आस्था।

होमी ही। हाँ हाँ भी ही। सातबें दयक में ही। क्या होम, बुबान से कहल की आवश्यकता नहीं। ईमान बास नहीं चरते। कीर पाँच रेंमसियों से कैस उठाया जाता है। पेट में रोटी कैसे डाली जाती है और बही रोटी जान साँसत में डालकर बुटानी पड़ती है। यह बात कामगर ही जानता है। जानता है कि क्या चाहिए, क्या नहीं चाहिए। पट भर भात बूतड़ पर कपड़ा। और और मुनि। मु क ति।

“नेपु बेबरजी की हासत अच्छी नहीं है।

जमचा हिमान की लट-खट आबाब हुई। मोरा की मोर एक कग बड़ात हुए भाभी बोली। बूटन पर ठूड़ी ठिरछी रभी है। जीन की भारी भारी पकके मुँदी है।

भरर मस्पताल में इतनाम किया जाता।”

‘पानस हुई हा।

मारा का बिहरा बरभ मया। बिबिन्न परिवर्तन। अपानक बहरे का भाव बदल जाता है। बप से गिर मे जाग पस उठती है। बाँठ भीपकर जैसे कोई फुसफुसाया भत साम की। आजकल अकसर ऐसा हो रहा है। अब-तब मरें तन जाती है। और संबाव की तो कोई कमी नहीं है। एक

एक सवाद गोली की तरह । राइफल की गोली शरीर में घँम-घँस जाती है ।

“दादा को तो छोड़ दिया है ना ?”

“हाँ ।”

वह रात जैसे कालरात्रि थी । ए० वी०, नेपु और पाँच-छह जने मिलकर रात-भर वालिंग-पोम्टरिंग करके भोर के लगभग उम लूले आदमी का नाम लेकर पुकारने लगे “रविदा ! ओ रविदा ! क्यों उठोगे नहीं क्या ?” आदमी को उस दिन बुखार-सा था । देर से ही उठता है । भोर गयी रात ही कालरात्रि है । रात-भर जागने की थकान से अब अगर लूठक जाये तो बचाव नहीं है । ऐसे वक्त ही दुश्मन आते हैं । और इमीलिए नींद दुश्मन है । दुश्मन को भगाने के लिए गले को एक घूंट गरम पानी चाहिए । स्टेंसिल का पतला टीन, रग का डिव्वा और ब्रश भाभी की दूकान में ही रहते हैं । चाय गले में डालने के लिए पहुँचे । मुखविरो की तो कोई कमी नहीं, देखते-देखते घेर लिये गये । किस्मत में पीछे के दलदली जगल को वे लोग अपने वज्र में नहीं ला सके थे । उम ओर से ही वे लोग साफ हो गये । और सरकारी वेतनभोगी अफसर लूले आदमी की बगल में स्टेंसिल खोसकर उसे घसीटते हुए खींच ले चला । इतने भमेले के बाद भी लडकों के लिए बेला के मन में दर्द है । उन्हें देखकर हलाई आती है । भोर गयी रात को दुःस्वप्न देख घटघटाकर उठ बैठती है । खतरे की बू पाते ही खबर पहुँचाने के लिए वेचैन हो उठती है । उसके मारे बदन में न जाने क्या कुछ होता रहता है । आधी रात तक नींद नहीं आती ।

दूकान पर कडी नजर है । चाय लेकर बैठने पर अनजान आदमी में इधर-उधर की पृष्ठताछ करते हैं । नेपु के ग्रुप ने एक को अचानक घेर लिया था । बेला की आँखों के सामने । मुरारी उस समय तक शहीद नहीं हुआ था, वरना कुछ हो जाता । दूकान के चारों ओर कडी निगाह है । किसी भी क्षण हमला बोलकर तवाही मचा सकते हैं । इसानी जिन्दगी को फाड़ सकते हैं । और ए० वी०-ग्रुप के तो किसी एक को भी पाने पर नोच डालेंगे । फिर भी वे लोग आते हैं । खूब आते हैं । दिन-भर में एक-न-एक वार आयेंगे ही । न आने के अलावा कोई और चारा नहीं है । घर छोड़े हुए, पुलिस के

करेड़ हुए लोग। सूखी जिम्बयी मे भरपूर स्नेह की एक बुँद पाने क लिए कितनी गहरी व्यास !

बूढ़ा अभी तक बच्चान पर तासा मारकर बैठा था। हास भास मामूम करन के छिराक में था। दिनों दिन बूढ़ो जैसे सिकारी जिम्बी की तरह बनता जा रहा है। सूँपकर ही उसे कतर का पता चल जाता है। चाम की तसछट तक गले में उँबिसकर यह शट से उठ खड़ा हुआ 'नेपु के सेक्टर में चले।" बूढ़ो ने माकें की बात की है। सबको पसन्द आयी। मस्टू पीसा चुकता कर परबन मीची किये निकल आया। और अनजाने मे ही न जाने किस बिचाब से उसकी भाँसे भाभी की भाँसे से मिल गयी। भाँसे में भाँसे। यानी जिम्बा रहने पर फिर मुसाकात हुआ। अलबिदा !

वे सौय बेसा भाभी की नम भाँसे से धीरे-धीरे एक-एक करक दूर जाने लये। धुँधले होते हुए बिलकुल ओझल हो गय। बकफूस के पेड़ की हलकी विपला छाया उनक शरीरों पर थी। बकफूस पेड़ के टेढ़-मेढ़ तने पर इनकलाब की बू। गंध। शरीर के रोम खड़ हो जाते हैं। रोम रोम में बिजसियाँ डौड़ती है। मुरारी को पेड़ के तन के साथ बाँसा गया था और एक इंसान क पले से इनकलाब की पुकार साहरन की तरह वजी थी। बासूचर से पिरे कबूतरकानों जैसे धरों और कामे पडे बासमान और सीस के पानी पर इनकलाब की पुकार।

और दो कदम आगे बढ़ाते ही नेपु का सेक्टर। कच्ची मिट्टी की हॉपड़ी। वा हफते न पयाया समय से मड़का यहाँ पडा हुआ है। अस्पताल से जाने का कोई रास्ता नहीं है। जमने के पाब म चहर फैल गया है। मड़का निश्चित रूप से मर जायेगा। सबकी भाँसे के सामने कुछ भी नहीं किया जा सकता।

एक फ्रासए समेभ में फँसकर यह हास हुआ है। नेपु उस दिन मान टैस्ट करन के लिए झील मे किनारे गया था। बचानक जान जैसे मान जेब में ही फट गया। असली मान था। धूँ-धूँ करते बासूचर से एक बिचित्र-सी भाल-सछेब बीच बिखेरता हुआ भास फटा था। भास फटा वा नेपु की भाँस के भाँस को उसाड़ते हुए।

बाजकस इस तरह की घटनाएँ हर समय बट रही हैं और ~~बकफूस~~

सी जग छिडेगी, कोई हिसाब-किताब नहीं। पुलिस, सी० बार० पी०, सी० पी० एम०—किसके साथ जग नहीं? छिड़ने-भर की देर है। इसी कारण बात चली थी, एक भूमिगत नर्सिंग होम या अस्पताल जैसा कुछ कायम करने की। ए० बी० ने ही यह बात कही थी। हालांकि यह बात वास्तविक रूप कब लेगी, भगवान ही जाने। मन्टू ने उस दिन चिढ़कर कहा था, “कब से सुन रहा हूँ, कायम होगा, होगा। लेकिन क्या सबके कग्र में जाने के बाद कायम होगा?” बात मुंह से निकलते ही ए० बी० की गरदन की नसें बुरी तरह फूल उठी थी। बायीं आँख के ऊपर कटी हुई भाँहे सटके से नीचे उतर आयी थी।

उनके बाद और कोई बात नहीं हुई। उसके बाद मौन गाभीर्य। विराम। होठों की दरार में टेढ़ी हँसी का टुकड़ा।

दिन-ब-दिन सब-कुछ कैसा बदलता जा रहा है। हू-हू तूफान के बेग से दिन गहराते जाड़े की तरह खुशकी फैला रहे हैं। ए० बी० का असली नाम अब याद नहीं रहता। अब अशोक नहीं, ए० बी०। अशोक नाम सटके खा-साकर बदला है। ऊपर के दर्जे के नेताओं के साथ उठ-बैठकर, नीचे के दर्जे का दादा बनकर अब विचित्र हाफ नेता है ए० बी०। जला हुआ अगार। टेढ़ी हँसी। बहुत रिस्क। उस पर कोई बात नहीं चलती। जाने कैसा फौजी मिजाज है। नेतृत्व का मोह? या नशा? या तर्जनी उठाकर अंतिम शब्द कहने या मँडेट देने का वेअदब मिजाज न रहने पर नेतृत्व नहीं चलता?

कच्ची मिट्टी की नमक-नायी दीवार के साथ-साथ आगे बढ़ते हुए सिर पर प्रश्नों की भारी-सी चलती है। नारानदा में यह सब-कुछ नहीं था। नारानदा बिहार के किसी गाँव में पार्टी के नेता हैं। अब मोतीहारी घाने में हैं। कितना विचित्र नाम है। मोतीहारी घाने के नाम के अलावा गोरा को इस बारे में और कुछ नहीं पता। गोरा को पता नहीं कि जाड़े की रात को ठंड भगाने के लिए देहाती लोग कितना फूल जलाते हैं? गोरा को पता नहीं कि बाग के चारों ओर रुखे, जली लकड़ी-से इमानों के साथ शिकारी की तन्हा बैठकर नारानदा उन्हें कौन-सा रास्ता बताते हैं? उसे नहीं पता कि हफते में इग आदमी को एक वक्त का खाना भी मिलता है

या नहीं। मोरा महज इतना जानता है मारानवा नेता है। कैसे नेता! दोस्त जैसे पिता जैसे नेता। सीने के इर्द गिर्द एक बर्तन लेकर उस आदमी के सामने फफक कर रोया जा सकता है। साफ़ बिस से झुमकर बात की जा सकती है। मारानवा कहते हैं 'कम्युनिस्ट बनना इतना आसान नहीं है। मेरी माँ कहती थी 'भरती है नारी चढ़ती है राज तब नारी की बनती है साक्ष। हम लोगों का भी नहीं हाल है। बिस्वयी-भर जो ईमान दारी से मजदूर की सड़ाई में साथ दे सके नहीं कम्युनिस्ट है।

यह बात मोरा को अचरत याद आती है। कठरे परेशानी के समय। सुख-दुख में। और इस बात के मन में आते ही सीने में ताइल पर आती है। मारानवा बहुत ही करीब के आदमी हैं। और इसीलिए मारानवा नेता हैं। कोई धूर्त के छम्सों में जिरा यड़ा विस्मय नहीं हैं।

बीमार बोड़ी दूर जाकर बिसकुल क्षम हो गयी है। जँच-नोच गड्ढे पार करके नेपु का मेस्टर। भीतर बोरी बिछाकर मड़का पड़ा रहता है। नेपु को खाना खिलाती है माता। ए० बी० की बहन। टिफिन के बखे में खाता हर रोज उसका खाना से आती है। नेपु कहता है, राजा की तरह रहता हूँ। और माता की बिहुक के कामे तिल में दुबोम्ब एक पुष एक खोक धीरे-धीरे स्पष्ट हो उठता है "तुम कैसे हो जी?"

नेपु हँसता है और कीर निगलता है। माता के हावों पर पीमी छाप। बहुत बिनो धाब घर में बनी मिर्च-मसालेदार सखी नेपु बड़े बाब से ला रहा था। खाता नाम की कसे बल वाली लड़की की बाबामी बाबों की पुतलियाँ स्थिर हैं।

पील रंग का सेलिहा मरहम नेपु के पुरे हाथ पर पुता है। दाहिने हाथ में ही बलम पयावा है। तीन छेपलियाँ करेसे की तरह झूल रही हैं। टिफिन के फटोरे में ही नेपु ने कुस्ता किया। बोड़ी किनारीवार उछर साही के आँचभ से लड़की ने नेपु का मुँह पोंछ दिया। मोरा तब तक बोरी पर ही पसर ममा बा। शरीर अब और नहीं डोया जा रहा है। ईसान का ही टो मरीर है। कहीं तक बरहाल कर सकता है? मोरा के सीने पर उठना फिर झुक आया है। माँ की बात याद आते ही जैसे धक से कहीं है। कुछ बसता रहता है। और शरीर बसता है।

“अ अ ! लग रहा है।”

शान्ता सिर झुकाकर नेपु के हाथ पर मलहम लगा रही थी। उसके बालों की लटों से तेल की खुशबू उस कबूतरखाने में फैलती जा रही है। नेपु के चिल्ला पड़ते ही शाता को तरस आ गया। उनसे एक झटके से निर ऊपर उठाया। भीतर एक खिचाव। लडकी की ठंडी आंखों में गहरी ममता। नेपु का समूचा दर्द सीने में सँजोकर लडकी की आंखों में गहरी वेदना। मन के आदमी से आसन्न विच्छेद की बात सोचकर वेदना। नेपु की मृत्यु-यत्रणा देख शाता की आंखों में घूसर जाल।

गोरा को पता है कि वे लोग एक दिन के लिए भी गृहस्थी नहीं बसा सके। रेडबुक में से खुद ए० वी० ने एक अंश पढ़कर सुनाया था। नारी-सवधी अघ्याय से। नारी का पुरुष द्वारा शोषण—एक और अतिरिक्त शोषण—पीडन है। इस सामाजिक पीडन को ध्वस्त करके ही, जिंदगी की एक बहुत बड़ी जरूरत को ध्यान में रखकर उनकी शादी हुई थी। सग्राम की बात याद रखकर। शाता उस दिन जैसे उफनी पड़रही थी। एक खुशी का फव्वारा। और पार्टी-कामरेडों ने लगातार चाय पीकर दातों का फव्वारा छोड़ा था। जाने किसने कहा था, “शाता को माँग में सिन्दूर लगाना चाहिए, वरना वह जनता से कट जायेगी। बस, शादी खत्म।” उसके बाद उस दिन ही नेपु पार्टी के एक काम से मालदा चला गया था। शाता को पता नहीं चला। कुछ भी पता नहीं चला। घर लौटते वक्त कान के पास से सरकती लतर के फूलों के गुच्छे ने उनका गाल छूकर उसे अनमना बना दिया था। उदान बाऊल गीत-सा।

नेपु के सिर के पास एक चीकी है। शाता रास के भेले से कुछ दिन पहले लायी थी। दवा और चन्द किताबें हैं। अकेले रहते ही वह किनाब्र लेकर पड़ जाता है। हालाँकि आजकल यह सब पाठ खत्म होते जा रहे हैं। किताब पढ़े हुए दिग्गज कम्युनिस्ट बहुत देखे हैं। सिद्धांत की चखचख का जमाना अब नहीं है। अब तो है काम। ऐक्शन। ए० वी० कहता है—प्रयोग। नेपु की हालत निहायत खराब है इसी कारण। हालाँकि पहले भी उस तरफ उसका झुकाव था। घर के कोने में पोस्टर। लाठी के सिर पर लिपटा हुआ झंडा। और मिट्टी के कुल्हड़ में खून की तरह रंग। दीवार पर

की चालू भाषा में विल्डिंग। शार्टकट अपनाया है। इतनी लम्बी बात का वक्त कहाँ है? इस दौरान वेजुवान दीवारों के सीने में बोल खिलाये जा सकते हैं, तेजी में ऊपर सरक कर स्प्रिंग कम्पनी की चिमनी के माथे पर झट्टा बाँधा जा सकता है, तान कर। मजदूरों का झुंड। दो पजो में दो भारी 'माल' लेकर बँन रोकी जा सकती है। दलाल को हलाल किया जा सकता है।

धुटपुटा काफी पहले गुजर गया है। सारे बदन हर वालिंग की स्याही पोते बेनियाहाट्टा में अब गाढी शाम। चलते-चलते गोरा ने एक सिगरेट जलायी। सीने के पिंजर में धुआँ भरकर बस-स्टॉप की ओर जल्दी-जल्दी बढ़ा। मन्टू और बूटो विल्डिंग के खाली कमरे में जमकर बैठे हैं। बदन ढीला करके शरीर को जग सुस्ता लेने दे रहे हैं। घर अब उनके कब्जे में है। रतजगा मीटिंग और गैरकानूनी कागज-पत्तर रखने की जगह। थोड़ी देर बाद ही ए० बी० लीटेगा। तरह-तरह की बातें गोरा की खोपड़ी में झीगुर की तरह बोल रही हैं। फंसला। गोरा आज एक फंसला करेगा ही। इम पार या उम पार, जो भी हो। आज रात को ही। बात को पकड़े रहने के लिए ही उमने धुआँ खींचा। और सीने के अन्दर लगातार धुआँ भरने से हाथ की उँगलियाँ आपसे-आप ढीली हो जाती हैं। कमर में ताकत नहीं रहती। जैसे कहीं एक ज्वरदस्त कमी आ गयी है। कहीं जैसे एक सुनसान सूखा मैदान है। कहीं जैसे गरीबी की विशाल अँतही है। गोरा को महसूस हो रहा था कि मुकू, निवारन—सभी कैसे गर्म हो रहे हैं। काफी तप रहे हैं। परेशान। अब और सभालने का वक्त नहीं है। इसके अलावा कहूँगा भी क्या—स्कूल में पेटो' मारना ठीक है या नहीं या व्यक्ति हत्या सथासवाद। कुछ भी कहो, विद्यासागर आदमी बुरा नहीं था। इससे क्या होता है? प्रचंड वाद में तिनका। इससे कुछ नहीं होता। कुछ नहीं होता। कुछ नहीं। सोना, सोना का नाम ही काफी है। कामरेड सोना। मेरा कामरेड। शायद रुलाई की एक थिरकती हुई लहर को दाँत भीचकर रोकेंगे। इसके अलावा बहुत-सी गलतियाँ हैं, मगर इसके बाद ?

अभी भी जो गोरों की गरदन के पास सोना की चर्म साँस है गोरों का !
 मुम कमूनिस् हो न। और ऐसी ही कोई बात याद आते ही गोरों का सारा
 बदन असहनीय जलन से बेचैन हो जाता है। क्यों ? क्यों उसने यह सब नहीं
 जाना ? राजनीतिक परिभाषा की केंचुस उतार कर वह क्यों सप का
 आधिपत्य नहीं कर सका ?

बस-मुमटी के नखवीक आत ही अट में माँ की याद आ ययी। माँ का
 चेहरा जैसे हवा में तैरन लया। और गोरों की जोरड़ी में घुन करने
 सगा। मुमटी के पास लड़े होकर उसने दूर तक नजर बिछा दी। दाना
 मालें स्थिर है। बिचित्र स्थिरता ! गोरों की नु के लिए पडा रहा। उने
 लड़की कोन-सा समाचार साती है !

प्रतीक्षा' शब्द मानो पत्थर-सरीखा भारी है। सीने के ऊपर बजकर
 बैठ जाता है। सीने के भीतर हवा नहीं खींची जाती। अपानक दन्त
 बीमार रोपी की तरह भारी भारी सा हो उठाता है। बस कण्टक के
 पास से एक थोटी के अलावा कुछ ही हिस्सा। आठ उन्मुख
 गोरों की दोनों आँसों ने उसे नियस मिया। अब अन्त की लम्बिते =
 अशुभ ठहराव है। ठहराव हुई उन आँसों की पुत्रियों में दिग्गज दिग्ग
 की तरह उभर रही है। बिचित्र क पारों जोर शीघर है। इतर क
 बदन पर टेढ़-मेढ़ अक्षरों में बेसियाहाटा की राजनीतिक दन्त। इतर क
 पीछे माता। माता या छाई ? और बचान से बात निरुद्ध-बिचित्र है
 दानाका घेर कर कपूरु। कपूरु क भीतर सिगु की रजई। बन्त क रजई
 बेसियाहाटा का गंगा भुला मजदूर। मजदूर क आला हुर। रजई रजई
 के ममकों की माता पहने महीन और नया-नया इतर। रजई रजई
 हुरामी आबाद। जस। कपूरु और घोमी। बन्त और रजई रजई
 बारिष की तरह पेटो।

रात विराट गंदे माले के सीने में म बरह बरह हुर उन्मुख है
 अभी शाम है। रात की आनंदा नि रजई रजई। रजई रजई
 बेसियाहाटा के सीने में पुस्मा और बचन। रजई रजई रजई रजई
 बिचित्र बंधे हुए नियम से रात साती है।

बस से सतरकर एक अटक म मनुज क रजई रजई रजई (रजई

लान किनारीदार साड़ी ऐड़ी पार लोट रही है। मीनू जल्दी-जल्दी चल रही है। दवी नाक के नीचे अमह्य उत्तेजना और थकान का पसीना। उस ओर निगाह जाते ही झट से जैसे कुछ याद आ जाता है। प्यार की बात, मीनू का प्यार। गोरा ने देखा कि लडकी धुरी तरह पमीने से तर हो रही है। सारे वदन से पसीना नहीं, जैसे आंसुओं की बाढ़ वह रही है।

जरा आगे बढ़ते ही गोरा ने मीनू को पकड़ लिया और अनजाने में ही उमका हाथ मजबूती से थाम लिया—इम तरह जैसे कभी नहीं छोड़ेगा। जैसे वह एक मजबूत सहारा हो। जैसे कोई डर न हो। जैसे दांतों से खतरा चीरते-फाड़ते हुए वे आगे बढ़ जायेंगे। हाथ के दबाव से, मजबूत दबाव से गोरा ने बहुत कुछ कहना चाहा, 'अभी मरा नहीं हूँ। जिंदा हूँ, मीनू। और जिंदा रहने का मतलब तुझसे बेहतर कौन समझता है, कुछ भी बेकार नहीं जायेगा। कुछ भी नहीं। तू रो नहीं सकेगी मीनू, किसी भी तरह नहीं।'

और मीनू नहीं रोयी। जरा भी नहीं। दांतों से होठ दबाकर भयकर आवेग का दमन नहीं किया, 'हल्दी पीसते और खाना पकाते हुए ज़िन्दगी खत्म नहीं कर सकूंगी। मुझे काम चाहिए। काम दीजिये, गोरा दा। चौबीसो घंटे।'

"मीनू।"

"कहिये।"

"तुम स्वस्थ नहीं हो अभी।"

"अच्छी तरह नहायी-धोयी हूँ, खाना खाया है, धीरे-धीरे इतना लम्बा रास्ता तय करके आयी हूँ, और आप कह रहे हैं।"

"फिर भी चन्द दिन और निकल जाने दो।"

"नहीं। यह नहीं हो सकता।"

"सुन, पागलपन मत कर।"

"देख रही हूँ, आप ज़बरदस्ती पागल बनायेंगे। सोनादा ने आपमें कुछ नहीं कहा? घर छोड़ने की बात आज नहीं है।"

गोरा ने देखा कि मीनू की दवी नाक के नीचे जाने कैसा एक दाग है। एक रेखा। कटकर बँठी रेखा। अस्पष्ट, मगर दृढ़। निहायत ही सूक्ष्म रेखा। भीषण सूक्ष्म अनुभूति।

अनुभूति की यंत्रणा ।

अप-डाउम स्टेट बसो के कसपुओं के पटपट पटीव पटीव की भागाओ स घिरे व बस रहे हैं । मीनू जैसे पुत्र की ओर दृढ़ नज़रों से बस रही है । माँधी-तूकान की ससगत आवाज लिये भाँपस उड़ रहा है । अचल पड़ रहा है झंड की तरह । मीनू नाम की लड़की की दुखी को लगी एक कठोरता । अचल के सिरे पर तूकान का हापट्टा । और एकल शरणा । बड़े बालों के पीछर पागलों की तरह घोरा की उँवनिवाँ ग भाँपसो तसाह कर रही हैं । और कोई बात नहीं है । इतना-ब-कदम के निरुद्ध की ओर बड़ बसे मीनू का हाथ उस समय भी गोरा की गुरदी में था । अचानक मीनू का घने की थीरता हुआ एक पतता रबर उभरा उस समय आप के जब उसे ?

“हाँ ।

बेसबाटा के ऊपर अब निर्मोघ आणमाण । रवकल भाँगा की तरह । आसमान में तारे । तारों का जुगुग । जुगुग नहीं बैंग अस्पता । सागता नाम की लड़की के हाथ का कमान । और इग भागभाग के तीधे लाल क्वाह में उनका दम बने मगा । मोरा को सवा नि उगक नगाण की मी पत्त आयेगी । चीन का पंजर तीककर कितनी भाँगे छिटा कर भाँप भाँगा बाहरी हैं जबकि उनकी कोई भागा भीई रबर गड़ी ।

कुछ भी कृपाल नहीं रहा कि उहाँन कब विचित्र की गीड़ी बड़ी कब पुर्मदिल पर आये हाथ की बीजार पर कानि जतना का उगन है मियाबट पर अतमने भाक न एक लहर वाली कब निर्मोघता अह, पुँस और कू-मरे कमरे की बीजार क गाव कब भाँप बकर बैंग । मीनू बीजार पर पीठ टिका कर बैठी है । विमपुन माता की गल । गलर कीमी कीली को बंद नहीं किया है । भाँगी की काग नि बंध रही है । उगनी मदीगे कुछ भी बचकर नहीं आ गावगा । तैम काई ज्ञानावन नहीं जलमा बाहरी । मीनू की बीज देखते ही बुढ़ा का कप्या पाव हुआ ही उगा । अतन जल उगी । बानों पंजा नि आवाज करक मँह मगा । बुढ़ा पुगता तौन पर गेला करता है । मुद्राणा ।

बनी-बनी बनी । अगई का लन दृढ़ता । और निरुद्ध का दृढ़ता ।

एक कोने में काफ़ी लीफ्लेट पड़े हैं। धूल की गन्ध। वे लोग लगातार बीड़ी पी रहे हैं। धुएँ का एक घना परदा पड़ा है। ए० बी० की बेतरतीब दाढ़ी और कोए के घोंघले की तरह लूखे बिखरे बाल कि सिर जाने कैसा घुँघला-घुँघला लग रहा है। मीनू का चेहरा तक भी घुँघला। अचानक मीनू के मुँह खोलते ही हवा के झोंकों ने धुएँ को उड़ा-उड़ा कर वात को घना कर दिया, "सिर्फ एक शेल्टर तय कर दीजिये।" मन्टू की छोटी आँखें वात सुनते ही दपदपाने लगी हैं। ए० बी० विलकुल आँखें बन्द किये हुए था। आदत के मुताबिक बीड़ी फ़र्श पर घिसते हुए बहृत ही ठडी आवाज़ में जाने क्या कहा, "यहाँ क्यों नहीं रहा जायेगा ? यही, हम लोगो की तरह ?"

जाने कैसी एक रहस्यमय हँसी जागी, जबकि ए० बी० के मोटे होठ रत्ती-भर भी नहीं हिले। सक्रमद झलक दिखी, एक भी दाँत नज़र नहीं आया। फिर दाढ़ी और मूँछों के भीतर हँसी की पतली रेखा टेढ़ी-मेढ़ी होकर गायब हो गयी। ए० बी० के होठों पर निकोटीन की पीली छाप। पाजामे के पाँचों में से निकले लम्बे-से पाँव का तलुआ हिल रहा है, जिसकी नसें उभरी हुई हैं। मीनू स्फुट स्वर में बड़बड़ा कर बोली, "भगर मैं तो एक लडकी हूँ।"

"कामरेड निर्मला ?"

"क्या पता !"

ए० बी० की तनी हुई नाक का सिरा विचित्र ढंग से उभरा हुआ है। निर्मला का नाम उच्चारण करने के साथ-साथ बड़बड़ा सल्ल हो उठा। रहस्य की टेढ़ी हँसी अब होठों पर नहीं है। कठोरता अब भी है। विचित्र सल्लनी। आभ्र प्रदेश की निर्मला। निर्मला लडकी। निर्मला को लेकर उन्होंने गीत रचा है। बीरता की गाथा। फिर भी एक 'भगर' काँटे की तरह मीनू के सीने में चुभ रहा है। सोना की जवानी मीनू ने सब-कुछ सुन रखा है। एकदम गुरू-गुरू की वात याद आ जाती है। और विल्डिंग के तिमज़िले पर बने कमरे में बैठी मीनू अचानक जैसे कहीं गायब हो जाती है। आग की चिनगारियाँ छूटी थी उस दिन। एक बूंद शीतल छाँव के लिए वे भटक-भटक कर थक गये थे।

"जानती हो, वे तुम्हें रगड सकते हैं।"

घाय-ही-साघ मीनू का छोटा हाथ उसके होंठों पर जैसे कुछ कहना रोکنे के लिए ब्याकुल हो उठा चुप रहो चुप ।

“डर रही हो !”

“नहीं डर किस बात का ।

“जानती हो वियतनाम में अमरीकी सेना न कितनी सड़कियों की इरबत नी है—मगर ये शोग क्या असती हो गयी है ? पराधीन देश की सड़कियाँ आजादी के लिए सबने पर ही सती होती हैं । मुस्क अयर लम्पटों के कब्जे में रहे तो कैसे सती रहेंगी ?”

“तुम चुप हो जाओ ।”

“क्यों ?”

“मुझे पता है सब पता है ।”

उसके बाव कड़ी धूप सिर पर लेकर कितनी दूर तक वे चल ये याद नहीं है । उन बानों की छायाएँ तारकोल की सड़क पर लम्बी हो रही थीं—और लम्बी ।

बाँधों की पुतलियों में सबास झुनाकर ए० बी० मीनू की ओर देख रहा है । अद्भुत मुस्काम अबहेलना और मध्या की बाड़ी के भीतर स फिर जरा-जरा उभर रही है । धीरे-धीरे करके ए० बी० के बेहरे पर जाने कैसी टीकफ्रेड की हठी प्रतिज्ञा और अडिग विश्वास बाम रहा है । घुएँ का परबा पीरकर ए० बी० का बेहरा दिव्यामी पड़ रहा है । और एक मिगाह उस ओर देख कर तरह-तरह की बातें पोरा के मन में ताक-साक कर रही हैं । मीनू की छोटी-सी नाक बेहरे का असहाय कोमल भाव देखते हुए पोरा ने सोचा यह कभी बहुत ही कच्ची है । क्या कामरद निर्ममा की तुलना इससे की जा सकती है ? कामरद निर्ममा ने विरिजन औरतों को संमलित किया था । और मीनू ? हाँ माना पंचादि हृष्णमूर्ति की तरह सोना को भी उन्होंने कलत किया है । मगर इसी स क्या मीनू निर्ममा बन सकती है ? अभी तक सड़की न चोट खापी बीरान जिन्दगी नहीं बटी । भूख नहीं देखी । सिद्ध कितानी भाव्यों । और मुनी-मुनामी बानें । और दर्द की ताकत ।

बाड़े की रात । एकदम दौड़ों की बजायी हुई । बाहर पक्क की

आवाज़ । और तिमज़िले के अड्डे के कान खड़े हो जाते हैं । अचानक सारे कमरे में लीफनेट उडाती हुई हवा का एक झोका खेल गया । मन्टू के गभीर घने, गूंगे भाव को चीरते हुए । “कामरेड मीनू के लिए शेल्टर का इतज़ाम करना ही ठीक है । ऐसे-वैसे रहना उनके लिए संभव नहीं है ।”

“हूँ ।”

ए० वी० के चैन की साँस लेने से पहले वूडो ने मीनू से पूछा, “गोरा दा की माँ—मासी माँ को छोड़ दिया है ?”

“नहीं । गोरादा को बिना पाए नहीं छोड़ेंगे, कहा है ।”

“कहीं एक जवरदस्त ग़लती हो रही है—जवरदस्त ।”

ए० वी० और नहीं सभाल सका, पेट की अँतड़ियों को उद्वेलित करती हुई वात निकलती है, “कहाँ ?”

“हम लोगो की बातों में, काम में ।”

“या कि पेटो-बुर्जुवा डर, भ्रम, दुविधा, द्वंद्व ?”

कमरे में वे लोग महज़ पाँच हैं । साँसों से हवा गर्म है । चैन की कोई गुजाइश नहीं है । वूडो ने ए० वी० की वात खत्म होने के बाद सूखा थूक गटक़ा । मन्टू की आँखें फशों से चिपकी हैं । ए० वी० ने गले को जहाँ तक संभव हुआ, नर्म बनाया, “किताबों में रटे सिद्धांतों की चखचख का जमाना अब नहीं है । यह सशस्त्र सग्राम का युग है ।”

अपनी वात खड़ी करने के लिए ए० वी० कहीं-कहाँ से उद्धरण दे रहा था । इम दौरान गोरा भी हिम्मती हो उठा है । कितनी बातें, कितने सवाल मीने के अन्दर डेरा डाले हुए हैं । अब हुडहुड करके निकल आना चाहते हैं । जल्दवाज़ी में वात गले में फँस जाती है, सीना गर्म हो उठता है ।

“मुल्क के नब्बे प्रतिशत लोगो को एक कतार में न ला सकने पर क्रांति नहीं की जा सकती ।”

“मी० पी० एम० का तर्क ।”

“नहीं । मैं मिर्फ सगठन की वात नहीं कर रहा हूँ । मैं उस नारे की वात कर रहा हूँ, जिसे उठाने पर कारखाने का मज़दूर, खेत का किसान—सभी स्वर मिलायेंगे ?”

“निवारन मज़दूर नहीं है ?”

हो मजबूर है। मगर छैटाई मजबूर। हुतावाग्रस्त।

मैं कोई और बात नहीं कहना चाहता। बूसरा कोई इस तरह पार्टी की निवा करे तो ।”

‘पता है क्या हाता ? मगर मैं एक क्लेमना चाहता हूँ।’

मीनू के छोटे-से माथे पर छोटे-छोटे क्लेम बास। टेढ़े-मेढ़े बास। बाप का बहुरा कामा रंग अब और नहीं पीक रहा है। उसकी पत्नी बापों के ऊपर हुआ से बास हिल रहे हैं। बासों के बीच में से मड़की बड़ी-बड़ी बापों सिधे बस रही है। जान कैसा एक बिस्मय एक डर मीनू को निमस रहा है। धीरे धीरे करक। बहू यह तमाम बातें नहीं समझती। फिर भी ए० बी० की धारदार बातों की धार उसे खीच रही है। मठीसी पतलों लंबसिया के उतार चढ़ाव में जैसे कोई रहस्य है। गहरा रहस्य। इसका अंत कहाँ है मीनू को पता नहीं है। उस केबस पता है बूब जाने में राहत है। बूब जान पर और कुछ याच नहीं रहेया। उस पता है, सोना क हुत्पारे अभी तक भीवित्त हैं। और जितम दिन के भीवित्त रह्ये उतने दिन। उतने दिन जबके की हुबिबियों को कठोर बनाकर जैसे कुछ करने की धुन बनी रहेनी। ए बी० की तरह। आधी-सूझान की तरह। बाक की तरह। भाग की लपटों की तरह।

पोड़ी देर पहले ही बहस-मुवाहिसे का एक दौर बीत चुका है। उसकी लंबी अभी तक नहीं कटी है। जैसे कम भाप इस छोटे कमरे में चक्कर मया रही है। गौरा अचानक बर्छीला ठंडा धीरे लेकर बड़बड़ाया सारे बस के ईसानों को धीरे धीरे जगाना पड़गा। और ए० बी० की मम्बी परबन बात मुनत ही अनुप की तरह उनकर टेढ़ी होने लगी जैसे अभी सलदार तीर छूटया। सौ-सौ की आवाज के साथ। और धारा मुस्क बरबता रहेबा। कुछ समय बाद जमान की धार घटने लगी। मोट होंठ। टेंढ़ी-मेढ़ी हँसी की एक पतसी रेखा दाढ़ी के अस्वर खो गयी। ए० बी० न गौरा की बात का जवान नहीं बिया। कबल हँसी पिसी रही। होंठों की बरार म। एक आश्चर्यजनक स्पर्धा का भाव और कठिन आस्था भरकर।

मस्टू की सुर्ख बिनकारियों की तरह जसती बो बापों स्थिर नहीं रह सकी अन्ता कामरेड ए० बी० क्या आपको लयता है कि हम साब

क्रांति नहीं चाहते. ? कितने खतरों के बीच हम लोग एक साथ रहे हैं, दिन-रात तोड़कर हमने रास्ते बनाये हैं, जुलूसों में नारे लगाये हैं !”

ए० वी० की धूसर आँखों में जान नहीं है, “है क्या ?”

“आपको वातचीत का तरीका बदलना चाहिए। हम लोग क्या आपके दुश्मन हैं ? पार्टी के दुश्मन ?”

“हम लोगों के कामरेड लोग जान विछाकर रास्ता बना रहे हैं, मजसूर क्रांति की आग की लपटों के बीच से हम लोग चल रहे हैं। वातचीत तथा कामकाज में ‘जो पार्टी की खिलाफत करेंगे, क्या वही दुश्मन हैं, प्रतिक्रांतिकारी ?’ तभी गौरा के वालों में हवा का एक झोंका फँस गया, “हम लोग प्रतिक्रांतिकारी (जैसे उसमें लेने की ताकत भी नहीं है) !”

तू अपनी हृद से बाहर जा रहा है—अरे, सी० पी० एम० को भी तू प्रतिक्रांतिकारी नहीं कह सकता।”

“तुम्हने राजनीति सीखनी पड़ेगी !”

बूडो अब तक कुछ नहीं बोला था। जैसे सुन्न होकर बैठा हो। दियामलाई की जली हुई एक तीली से कर्श पर कुछ लिखते हुए उसने कहा, “यह आलोचना का तरीका नहीं है।”

मीनू ने भी सीने में साँस भरकर कहा, “हाँ गौरादा, अगर तुम लोग इस तरह पागलों की-सी बातें करोगे तो फिर ।”

मीनू अपनी बात खत्म नहीं कर सकी, जैसे किसी तीखी वेदना ने सँडसी ने नडकी का गला दबा दिया था। मीनू की आँखों से टपकता हुआ पानी। पानी की बूँदें। और अचानक माथा गरम होने से गौरा न जाने कैसा उदास-उदास हो गया है। कुहरा-कुहरा। उनके चेहरों की रेखाएँ अब दिखायी नहीं दे रही। मीनू की अम्बाभाविक रूप से पतली रुलाई के अनगिनत फूल गले में खिलने लगे। “तुम लोग इसानों को राह दिखाओगे रूंगे इमानों की जवानों पर बोल खिनाओगे—एक साथ लडाई का सपना, इमान की तरह जीने का सपना। धुन में पागल होकर यह लोग जहरीले झंड-झंखाट उखाटेंगे। जल्लादों के देश को तहस-नहस कर देंगे। झंडा गाडकर कहेंगे, यह मुल्क हमारा है, यहाँ खूनियों के लिए एक इंच भी जगह

नहीं है । और तुम्हीं भोग खतर आपस में एक-दूसरे की छीछामेडर करो ।

मीनू का बेहरा साम हो उठा—कितना शर्म ताड़ने की शर्म से और कितना उत्तेजना से किम पता । मगर बात कहते समय उसके सीमे पर जैसे आबल झूटा जा रहा था । फिर भी वार्ते उसे कहनी ही पड़ेगी । बिना कहे प्राण नहीं है । और सीना छासी करके सब-कुछ नबसकर सड़की की छासी भाँके जाने किस उम्मीद से गोरा के बेहरे पर टिकी हुई थी । एक बिचित्र तमाब में पड़कर गोरा बेचैन हो रहा था मगर यह छीछामेडर नहीं है । तू समझ नहीं पा रही है मीनू !

‘नहीं इसकी खबरत नहीं है ।

‘तुम महब भावनाओं के आबेब पर कम्मे बाड़ रही हो ।’

‘और तुम सोय ?

‘क्या ? हम सोय क्या ?’

‘तुम सोय दाहीब कामरेड का सब उमाने रखकर सोचन बैठ हो कि किस ओर जाना है ! तुम भोग इंसान हो ?’

मोरा थूप हो गया कुछ न बोल सका । बोलने से भसा क्या होता ? मीनू तक यह सोच रही है कि मोरा भयाकांत है । इसीलिए तिलचट्टे की तरह सूँड हिंसा रहा है । बार-बार कमेजा मुसमने लगता है । अनेक बार मयवा है पायल की तरह सब-कुछ तहस-महस कर डाले और जाता दे—देख देख मैं डरा नहीं हूँ । एक साम दो-तीन एक्शन कर डाले । मोमबत्ती की मरियल रोसनी घुम की तीखी गंध और हूनकी हवा में लीफ़नेटा के उड़ने की लसबस में मोरा जैसे कहीं जाता जा रहा है । अपने को बहुत ही अकला महसूस कर रहा है । ए बी का ताम्बोदरा बेहरा मीनू की बलती हुई अंगार-सी भाँके और मन्ट के माये पर बटे का बास—सबको पीछे छोड़ जाने कहीं जाने चड़ा जा रहा है । बेहोशी में । मोरा का भाबा मुक गया है और एक असह्य बबना में होंठ बरबरा रहूँ ‘मीनू मीनू मीनू तू पलत समझ रही है बहन ।

ए बी० का मुँह बस जुसा ही जा जान कीन-सी खतरमाक बात कहने जा रहा था कि ठीक उसी समय मिबारत और सुकु के कंधों के धमक

ने दरवाजा खुला। साथ ही हवा का झोका कमरे में धूल का झण्ड लाया। बाहर आंधी और तूफान की खतरनाक होड़ जारी थी। लगातार सो-मो के शोर में धिरा ए० बी० का गभीर स्वर, “कल दोपहर सभी रहेंगे। उस समय ही कामरेड गोरा को जो कहना हो, कहेंगे। तभी एक पक्का निर्णय लिया जायेगा। यदि तब हम लोगों को अलग होना पडा तो वही होगा।”

सुकु के पाजामे पर खून के छोटे। चेहरा साधु-सन्तो की तरह। जाने कैसा विचित्र स्थिर चेहरा। आँख की जमीन विलकुल नफेद। और तृप्ति। भरपूर तृप्ति। निवारन पहले से अधिक तना-तना-सा लग रहा है। सुकु ने पाजामा उतारते-उतारते बचानक गाना गुरू किया। आप-ही-आप—

‘पैदा होये तैं मरे भी पडी यह तो जाने सभी भाई ।’

सुकु ने पाजामा छोड़ तहमत गटियाया। और निवारन इस बीच नुनाये जा रहा है वदने की उत्तेजक कहानी। पेट में छुरी घुसेडने से पहले कास्टेबल की जीने की तीव्र लालसा कैसी नुडमुड गयी थी। निवारन, सुकु और ए० बी० की बातों से, व्याट्या करती उँगलियों ने, मीनू ठीक होती जा रही थी। रह-रहकर उसके चेहरे पर एक चमक ग्विल रही थी। नाक फूल रही थी। लडकी के सीने में उयल-पुयल हो रही है।

बात कहते ही सुकु के गोलमटोल चेहरे पर प्रशांत हँसी उभरी। उसके चेहरे पर एक गहरी शांति थी, जैसे इसके बाद मरने पर भी कोई शिकवा-शिकायत नहीं होगी। मीनू के गले में दुलार, “पेट में कुछ गया है?”

“नहीं।”

“पहले कुछ खा आओ।”

मीनू अब्र जननी की तरह है।

फिर वे लापरवाही से हँसने लगे। तब तो जनम-भर का खाना हो जायेगा। वेल्लेघाटा की मिट्टी सूँघ-सूँघकर तलाश रहे हैं।

गोरा की जीभ जैसे गिर गयी है। जवान पर एक भी शब्द नहीं है। इन लडकों को छोडकर वह कहाँ जायेगा? किम जहन्नुम में? मन्दू लगा-तार उँगलियाँ चट्ना रहा है। और निवारन नुडो को कोच रहा है—क्यो, इस तरह जो कितने दिन चलेगा?

बात दगा दे गयी। गोपडी के भीतर कच्ची आग। हाँठों पर एल

बात मायी। मिर झकाकर घोरा संभसा सोमा का बदला इस तरह नहीं मिया जा सकता। और सोमा तो बदले के लिए नहीं लड़ा वह सदा या सच्ची आजादी के लिए। तुम लोग असस में बरबास्त नहीं कर पा रहे हो इसलिए।

क्यों हबम क्यों कर्हे? हम मोम भूस हैं!

मुकु के एकबम जांत बेहरे पर अचानक छरी की धार का-सा तीव्र पन उभरा अब तक तुमसे कुछ नहीं कहा अब और बरदास्त नहीं कर्हेगा। सड़ाई और जंग के भीतर हम भाग बस रहे हैं। उनमें तुम पुन सगाना चाहते हो?

मीनू जाने क्या कहकर सबको ठडा करना चाह रही थी! समझौता। उनके दोमों में अभी बिभिन्न धार है। प्राण-जान मिट्टी में मिजाकर स्नेह ममता जैसे तमाम मोह दून फेंककर बदले में लकड़ हिसाब चुकाने बास—य सभी लिफ्टर तपस्वी हैं।

भडा ईंट पर टिकी मोमबत्ती का टरबा। बघबसा गसा हुआ। मोमबत्ती यत्न-यत्नकर कैसी डबे-सी जल पयी है। रह रहकर पलीठा सुझपन की सरसराहट-सी हो रही है। फट्ट फट्ट। और मोम पानी सरौटा गस रहा है। थोड़ी बर पहले की बह परमी अब नहीं है। अब उतनी जीब भी नहीं है। ए० बी ने देव से एक नकधा निकासकर ऊर्ध पर बिछा दिया। मेदिनीपुर जिले के जानदार नकधा में एक बमह पर मांम की अस्पष्ट राक्षनी छिटक कर तपदप कर उठी जैसे भाव समी है। निवारन ही मांमबत्ती पकड़ था। निवारन की हथियार की तरह खड़ी नाक अभी भी जल रही है। नकधे पर दो-तीन बेहरे मुक यये हैं। ए० बी० की पतली पतली रेंमनिमा नकधे की पतली रेखा छूकर आये बड़ रही हैं। और पांवी व पापी की तरह मलता मोम गिरकर नकधे के सीन पर मोतियो जैसे गोल बाग उभार रहा है।

वह है लड़गपुर स्टेशन बस इट और मेदिनीपुर टाउन इधर जगस है बिहार के भीतर स होवा हुआ एकबम थीकाकुलम तक जाता गया है सिहाबा।

सिहाबा मुकु के पूरे बेहरे पर कांठि फट पड़नी। सिहाबा निवारन

को टीली उंगलियाँ बंधकर भ्रूवृत हाथ की मुट्ठी बन जायेंगी। लिहाजा ए० वी० की भूरी दाढ़ी के पतले उदास जंगल में रहस्य की हँसी। आधार रूप में एक सुखे इलाके की चाह। इच्छा। उतावलापन। जाने किस बात को जल्दबाजी है कि उन्हें जला-जलाकर सीक-कवाव बना रहा है।

ए० वी० की बातों के बीच ही मोमवत्ती के पलीते में फिर आवाज हुई। फर-फर करके एक पेट फटा तिलचट्टा उड़ने की कोशिश करके नकशे पर छिटक पडा। और आवाज हुई। मछली के पेट फटने की तरह एक वेहंगी आवाज। ए० वी० की दोनों आँखें जाने कौसी घूसर दिख रही हैं। चेहरा दिन-ब-दिन कागज-सा होता जा रहा है। मोमवत्ती की मद्धिम रोशनी में ए० वी० का चेहरा रक्त-शून्य लग रहा है। जैसे शरीर को निचोड़कर सारा खून निकाल लिया गया है। चाली फोक बचा है। भीगे हुए कपड़े के गोले की तरह दोनों आँखों में दुर्दान्त व्याकुलता। “क्रांति का काम द्रुततर।” और आगे बात खत्म नहीं कर पाया।

अधेरा मुँह खोलकर सारे इलाके को निगलकर बैठा है। नाले के किनारे मरी गाय के फूले पेट की तरह बेलियाहाट्टा का आसमान।

बेलियाहाट्टा के आकाश में आज एक भी तारा नहीं है। गौरा रेलिंग पर हाथ रखकर खडा हुआ था। उनकी बातों के अश उडकर कानों में आ रहे हैं, जबकि, अधकार का सागर ढकेलकर उसकी थकी हुई आँखें दो तैराकों की तरह जाने किस चीज की तलाश कर रही हैं। काफ़ी साफ-साफ समझ में आ रहा है कि अब वाकई अलग होना पड़ेगा। रातों साथ-साथ जागकर, पुलिम की गोलियों के सामने कंधे से कंधा मिलाकर, बालिंग की स्याही नारे बदन में लिपटाकर, लगातार सिगरेटें पीकर, इनक़लाव का नारा लगाकर इतने दिनों में जित्त सम्पर्क की जडों ने सबों को बाँधा था, कल दोपहर को वे सब उखाड देनी पड़ेंगी। सुकु, निवारन, ए० वी०—इन सबको छोडकर गौरा कैसे बचेगा? कैसे मुँह हिलायेगा? पाँव चलायेगा? दिमाग चलायेगा? एक जमाने से वह अकेला जीना भूल गया है। और इस गलत गली में से चलते हुए वे लोग भी भला कहां पहुँचेंगे?

नोचते सोचते गौरा जैसे कहीं खो गया। अचानक सोना का चेहरा आँखों के सामने छोटे बल्ब की तरह, चतरे के संकेत की तरह जलने-बुझने

सगा। मगर वह किस तरह आगे बढ़ेगा? उक्त सोना तुम मगर बिधा रहता। मगर वह समझ पाता। माथे की बोनों नरें फल रही थीं। पूत-फमकर गाँठ-सी बन जाती है। संभवा और तीखी होती है। एक तीखी संभवा। कितने पता है कि इन पिनों क्यों माथे की बोनों और गाँठ-सी फूमन मयती है। सिर की नरों में एक दुर्बमनीय सिखाव। शठकों में सिखाव जैसे कोई बेरहमी से समूचे माथे को पकड़कर खींचने मयता है—वह क्या सोना है?

साँव जिस तरह मेंढक पकड़ते हैं। ठंडी धाँसों से बात समाकर हैंठें रहते हैं उसके बाव बट से कोपड़ी पर मुँह मारकर नियम जाते हैं। बरा सी भी आबाव नहीं होती। बस काल्मा। मयकर रात में धूर्त सिकाटी की तरह दबे पाँव आकर अचानक बेनियाहाट्टा की दरदन पकड़ सी है बट स नियम लिमा है उसे। सरज सीधा बेनियाहाट्टा।

बिल्डिंग के एकलत लाम्पी कमरे में एक इंसान बर्बन है। बत्तिबर होकर ए. बी० बहूसकरदमी कर रहा है। मीनू को रखने लायक एक रोस्टर के बारे में सोचते-सोचते। ए० बी० के बेतरतीब बाल और मसाले दाढ़ी में भरप्य मंघ। जान कैसा एक जयसीपन है। बाल लेंस गये हैं। यहरे पद्यों में बूरेपन की हसकी छाप। मुकु के साथ गारा की बहस-पटी मुक्ताचीनी न व्यर्थ में एक जमन पैदा कर दी है। तर्क से मुक्ताचीनी से अब क्रायवा नहीं है। तर्क से डेर जिधा इंसान। इंसान की समझ। भारतवर्ष की बदरप राजनीति के कुर्सीबाव और मापकों की डूँ के जबाब में निस्वार्थ समझ केंक मारी है। मुकु और निवारन बात-बात पर उसी समझ की बात बहते हैं। काकरीन तलंगाना बिरजा मयमान—मही है इन बैक का इतिहास। आजादी का इतिहास। जिस आजादी के लिए ब लोन बाँटों को धोषकर सवाभार मड़ रहे हैं। सचची आजादी। मुकु की मले की नरें उसी के आह्वान में काँपती है।

बरस-बरस पर बिनेबी बुमन सम्पदा मूट से जाता है
 माँ के आँसू अपने बनाव से साँची—नया जमाना माना है
 छीनकर आजादी मानी है—सानी है—सानी है।

बदन फिर गर्म हो उठता है। उसर बिल्डिंग के चारों ओर बर्षन की तरह भँबेरा बुपचाप भात लगामे बीठा है। कोई इंसानी आबाव नम

घर-घर, घटांग-घटांग की आवाजें भी नहीं हैं। कोई आवाज नहीं है। विचित्र मन्नाटा। खाँ-खाँ करता हुआ वीराना। एक विचित्र अत। हू-हू करती हुई हवा। सीने में खिंचाव, "मीनू, तू पागलपन मत कर वहन, इस तरह नहीं होता पहले तू समझ तू जान।"

मीनू की दोनों आँखें कहीं दूर अटकी हुई हैं। बहुत-से हाथों की पहुँच में परे, कहीं बहुत दूर। सारे चेहरे पर उत्सर्ग की छाप। लडकी के चेहरे पर आश्चर्यजनक प्रसन्नता।

सुकु और निवारन पेट में जलन के कारण खतरा उठाकर बाहर चले गये हैं। बूडो और मन्दू के शरीर नींद की बेहोशी से लुढ़क गये हैं। और गोरा निहायत ही स्नेह के साथ मीनू को एक बात समझाने के फेर में ठोकर खा रहा है, कठोर पत्थर पर सिर पटक रहा है। मीनू की ओर झुककर समझा रहा है। और अचानक गोरा ने देखा, मीनू के दबे होठों पर शोक और दुःख को परे ठेलती हुई एक मुसकराहट। गभीर रहस्य की हँसी, "अब वह नहीं होने का गोरादा, मेरे सामने अब एक ही रास्ता है।"

ए० बी० का हाथ क्षणजीवी पछी के पख की तरह फँला और वह खुश हो उठा, "ठीक है, चल।" यानी एक शेल्टर तय कर लिया है। मीनू तो चलने के लिए नैजार खड़ी थी। सिर्फ एक वार गोरा की ओर देखा उसने। नाफ न्वच्छ हँसो, "चलूँ।" और एक कटू आवाज करते हुए दरवाजा खुल गया।

मन्दू और बूडो दोनों नींद से कातर हैं। बूडो तो इस मामले में एकदम नन्धा हुआ है। जहाँ-वहाँ पसरने की गुजाइश पाते ही पसर जाता है। और कोई बान नहीं हुई। रोशनी के नाम पर एक ईंट पर जली हुई मोमवत्ती बहून पहले ही खत्म हो चुकी है। फिर भी वचाव नहीं है। मोम को ढली बनाकर उसी में पलीता किसी तरह खोस दिया गया है। गोरा ने फूंक नारकर मोमवत्ती बुसा दी। रोशनी वरदाशत नहीं हो रही है। साथ लौफनेट के बहन पर चूहों की उछल-कूद शुरू हुई। खस्-खस की आवाज उठ रही है। इनके अलावा सन्नाटा। कोई आवाज नहीं एक आदमी के सौम लेने की आवाज। रात की थाह नहीं है। वज रहा है। लडखडाते शराबी ने प्रेम-गीत गाया। ५

नील गा उठा सड़क पर चमत्ता कोई करावी ।

निवारन और सुकु धीरे-धीरे सीटी बजाते हुए सौं रहे हैं। सीटी बजाते हुए कोई नाना गा रहे हैं वे। सुकु की हवाई कमीज का कोना मंडे की तरह उड़ रहा है। पेट को ठंडा कर बामा है। मिर्माबगान बस्ती के सस्ते सीक-कबाब और रोटी से। सुकु रैलिंग पकड़कर गाना गा रहा है। नूनगुनाकर। जबकि थोड़ी देर पहले वे जाम में फँसने वाले थे। डेपवामे जाम में। हँसते-हँसते रस सेठे हुए निवारन ने कहा "जरा धीने हो मये वे वासा ..कैसे खाँकों से नियस रहा बा।" कहकर बड़ हँसा। फिटना मजा बा रहा है उसे इस बात में। और निवारन की हँसी की आवाज ए० बी० की बॉक्सों में बिचाव पैदा कर रही है, "बाहर क्यों निकल वे?" बिचावक जैसे बिल का बिचाव ए० बी० के गले में उतर जाया बा। तीन्ने स्वर म बड़बड़ा रहा है "कस ही तुम मीय इस इमाक की छोड़ जाओये। यहाँ से परे रहो कुछ दिनों तक। उसने बाव मेदिनीपुर के कन्सिस्ट में बल जाओये।"

सुकु का छोटा-सा मोस सिर बच्चों की तरह हिस रहा बा नू-नू ना इतनी बल्बी नहीं इधर का काम ।'

'तुझे सोचना नहीं बड़मा ।'

"नू-नू-ना ।

'कालतू पकड़ा जायेगा ।

'इतना आसान नहीं है ।'

'नू-नू-ना तुझे जाना पड़ेगा ।'

ए० बी० की दोनों बॉक्स बाहर निकलन को हो रही थी ।

और सुकु का चेहरा ठहरा हुआ और हाँस 'कम्युनिस्टों की असली परीसा क्या है ?'

ए० बी० अपने हाथों से बड़े सुकु को पकड़पाल नहीं पा रहा है। बीम बेबकूफों की तरह बाहर झाँक मयी—क्या । क्या ।

कलमाह । कारागार । पोसिबों की बीछार ।

ए० बी० की भीम सुन्न-सी नूने की तरह नून रही है ।

बीर नुकु जीम की नोक पर शब्दों को नचा रहा था, “कल्लगाह । कारागार । गोलियों की वीछार ।”

नुकु अब पहचानने में नहीं आता । उनके शरीर में अब शहीद-नाघ है । हाँडी ने हलके में गाना शुरू किया, “पैदा होये तँ मरे भी पड़ी रे ।”

‘अनगिनत बयो के फूल उगाकर छन्द गूँधने की स्वाहिश’

भादो के बाङ्गिरी दिन ।

सङ्गी गरमी असहनीय हो रही है। उस बमबौंदू गरमी को धीर कर मुई की तरह ठीखी हवा का झोंका हू-हू करके बौड़ भाया। झील के ठंडे पानी के सीने से काई और सेंवार की पण्ड लकर। ए० बी० के हापों के रोम कटि की तरह सड़े हो पम सरसरात हुए। मीनू को पास क एक बेस्टर में रात भर के लिए रख भाया बा। किसी तरह से रात गुबरने के बाद कोई इंतजाम किया जायेबा। बस रल भाया है। दो घंटे बीतते-न बीतते ही चांटा हाङ्गिर हुई। मीनू के बेस्टर के बगल वाले मकान में ही छापा पड़ा है। तेरु-बीबह साल के एक लडके को उठाकर से मये है। डी० बी० (वे सोम अब उसे बेखत्री¹ नहीं कहते) और कामदात मिमे है। समाचार बेटे समय मात्ता के बेहरे पर ए बी० न बिरक्ति की रेखा देखी थी “तुम सोम कैसे हो बाबा कोई बातचीत नहीं बट से लडकी को रखकर पसे जाये।

मात्ता के गसे में जाने कैसा तीखापन है ! बबाब न देकर ए० बी० ने उसके बेहरे की ओर देखने-समझने की कोशिश की। सड़क पर सतरकर मात्ता फिर झुका कर चलने लयी। चलते चलते फुसफुसाकर कहा अगर एंरेस्ट हो जाती—फिर कामू के सीया बुरी तरह बबरा मये है। बेखत्री इस्तहार, माओ की पतली-पतली किताबें—सब अभी बैठकर बसा रहे है। और मुझे बुझाया तो जाकर बेखत्री हूँ कि दोनों भाँखें घुएँ से सराबी की

1. माफ्तवादी-मैजिनिवादी बामवादी पार्टी का मुखपत्र ।

तरह लाल हो गयी हैं और डर ने हाथ-पांव सिकुड़ गये हैं —अशोक से कहकर इसे जल्दी हटाओ यहाँ से ।”

चलते-चलते ए० वी० ने तेजी से कुछ सोचा । फिर एक और शेल्टर में लडकी के लिए रात गुज़ारने का इतज़ाम करके लौटा । लौटते समय ही चिट्ठी मिली । छोटा-सा एक कागज़ । चार तहों में तहाया हुआ । खारे पसीने का जाने कैना एक पीला-सा निशान । भोला ने चिट्ठी दी थी । मोड़ पर चाय की दूकान अभी पूरी तरह से खाली है । भाटे की तरह चूल्हे की आग उतार पर है । लाल-सी एक म्लान आभा सुलग रही है । कोयले जल-जनक सफ़ेद हो गये हैं । राख । ए० वी० ने दूकान में बैठकर ही चिट्ठी पढ़ डाली

प्रिय कामरेड,

एक ज़रूरी काम से कलकत्ते आना पड़ा । आकर सब सुना । तुम लोगो में बातें करने के लिए दिल मचल रहा है । इनके अलावा और भी कुछ गभीर बातें करनी हैं, कल दोपहर को आऊँगा । रहना ।

क्रांतिकारी अभिनदन के साथ—

नारान दा

चिट्ठी पढ़कर, उसका गोला बनाकर आग के पेट में फेंक दिया । गोल कागज़ जलने लगा । और ए० वी० ठहरी निगाह से उसे देखता रहा । भूमिगत जिन्दगी की ट्रेनिंग, दस्तावेज़ पाम में रखने में काम नहीं चलेगा । कब फँस जायें, कोई ठिकाना नहीं । पहले कागज़ काला पड़ा और फिर भस्म से जल उठा । घस छत्म ।

मीनू को शेल्टर में पहुँचाकर लौटते समय रास्ते में जाने कैनी एक गध मिली थी । बटार की तरह तनी ए० वी० की नाक को अचानक गध मिली । बू—पुलिस की बू । दाँत पीसने, पहियों के घिसटने की-सी कोई आवाज़ सुनी थी शायद । चारों ओर जीभ उखाड़ फेंकने वाला लूला आतक । पुलिस-बैन की म्याही जैसी गहरी रात । मरे हुए कष्ट्रू के खोल की तरह तारकोल का रास्ता नितात खाली है । एकदम र्ज़-र्ज़ा फर रहा है । कपर्ण की गध । कपर्ण में ही रास्ते में वच-वचकर, छिप-छिपकर ए० वी० के साथ वह एक दूसरे शेल्टर में चली गयी । एक बार भी घुटने नहीं

काँपे। सारे रास्त में खजान से एक भी शब्द नहीं निकला। पनीनी धात्रों की जोड़ी तेलिहा स्याही की छाप मिये बिलकुल घुली है। ए० बी० कह रहा था साबधामी से रात भुजारना। भीगू व पसकें तक नहीं सूँधी। इस लड़की का सब-कुछ मिथिच है। इकहरी पोटी की वह भीगू अब चिटनी तनी हुई है। कठोर। उसे किमी न भीतर से नीच रखा है। उसके पास घना बाँसों से जामू गिरामे का बस्त है। यह असन जाँच क पानी से साँठ होन बानी नहीं।

ए० बी० का मन भी जान क्या टपकन लगा मोम की बूंदों की तरह। ब्रिस्टिंग के कमरे में जाकर एकदम गुंभा बन गया। मस्टू और बुडो मैहोय होकर खो रहे हैं। निवारन अटे-मेटे करवटें बदल रहा है। सुकु के होंठों पर फूमझड़ी बैसा गाना अब नहीं है। रूँ ही जीघा लेटा हुआ है। और ए० बी० टिङ्की क पास चुपचाप बैठा है। बोना बाँसों रोशन करके। एक पतला-सा घामा भी नियाहू से बचकर नहीं निकलने देवा। सिर पर मोनियों का बोखिम मिये ब्रिस्टिंग का कमरा चुप है। बीच-बीच में सानी साँसों का सम्बा मिससिमा। और टिखचट्टे के पजो की फर-फरें डबनि।

स्ट्रीट साइट की हसकी पतली रोखनी की सड़ीर गिर रही है ए० बी० के सम्बोतरे पेंहरे पर ठुडूकी पर। बेतरतीब दाड़ी के भीतर से रोतनी का जाम। जरा दूर स पारा ए० बी० को देख रहा था। ए० बी० के भीतर मन तक बेब पाम के लिए उसकी बाँसें बुरी तरह से अस रही हैं। आँक की पुतसिया कड़ी हो माबी है। कैसा असन-असन-सा लपटा है। एकदम असन इंसान। लिङ्की के पास ए० बी० की बुन्ना मोड कर बैठी छामा बाँसों स भरा माबा घोरा ने उसे इस तरह तटस्व भाव से पहले कभी नहीं देखा। उसका वह तरोताया भाव कहां है? महब बेतरतीब बाँसों की दाड़ी दाड़ी क बीच में मौत का-सा बिचाव। भापरवाही में भरा हठ। फिर भी उस म्मान मीली रोखनी में ए० बी० बहुत शांत मन रहा है। ऐसा शांत कि जैसे जानता ही न हो कि तऊभीछ कैमी होती है। ए० बी० का घर कर मारा असन बहाने लगता है। कितनी बातें मन में चुभती रहती हैं वह समझ नहीं पा रहा है इसीलिए—बरना—बरना। और—

ए० वी० की छाया में उसके कठ की दोनों हड्डियाँ जाने कौमी मुड़ी हुई दिख रही हैं।

“सिगरेट पीएगा ?”

झाड़ वालों का सिर जरा हिल उठा, “दे।”

“एक ही जला रहा हूँ। बाहर रोशनी की झलक छिटक जाने पर कोई बचाव नहीं है। कहीं कोई घात लगाकर बैठ हो, बिसे पता है। साँप की पूँछ की तरह। एक बार पाँव-भर लगने की जरूरत है।” दो-चार कण खींचकर गोरा ने सिगरेट आगे बढ़ायी, “ले।”

सीने में साँस अटक जाने से निवारन नींद में गो-गो कर उठा। सुकू जगा ही था। उसने उसे कधा पकड़कर हिलाया, “एई क्या हुआ !” गले में लार लिये निवारन ने जाने क्या कहते हुए होठ खोले, “.. सुकू .साला मार डाल .बा !” और आगे नहीं बोल सका। जीभ भारी-भारी-सी हो उठी। सिर हाथ पर टिका कर फिर सो गया। गोरा की बदक्रिम्मती कि उसकी आँखों में नींद नहीं है। सुकू की भी। यो ही पडा हुआ है। नींद नहीं आ रही है। आजकल झट से नींद नहीं आती। निवारन की गले की आवाज ने ए० वी० कैसा घबरा गया है। निवारन मानो टर ने पस्त होता जा रहा था। किम बात का टर ? निवारन की तो कोई डर-वर नहीं है। गोरा के वारे में आजकल कुछ पता नहीं चलता। अचानक वह धड़धडाकर क्यों उठ बैठा ? निवारन क्या कोई सपना देख रहा था ? कोई खतरनाक सपना ? या मन के भीतर लट्टाई के महाकाव्य के तमाम अशेष अध्यायो का पार पाने में ही टूटा जा रहा था ? जगी हालत में मशय के जिस कीड़े को लगातार दबाये रखता है, नींद में उसी ने हमला किया है।

ए० वी० की आँखों में क्या एक मवाल झूल आया है ? खिडकी की छड़ पकड़कर दोनों आँखें रान्ते पर फेक दी हैं। झट की भी आवाज सीने की हड्डी चूर-चूर करके ए० वी० को नीघा कर देती है। एकदम तान देती है। बूड़ों की नींद में खलल पड रहा है। बड़े-बड़े मच्छरों के डक, बँन के पहियों की आवाज, लपकती आग-नी जिन्दगी के जलने से भी नींद नहीं आती। नाक के छोर को लाल झलक देते हुए ए० वी० ने सिगरेट का आँत्रिरी कण खींचा, “शान्ता आज कैसी चुप मार गयी थी।”

बनबादक की तरह बेधेरा मूस रहा है। ए० बी० की मम्बी मांग मैंने बह कही लो गया है। सायद मोच रहा है कि कोई बात उसका जबाब। और जबाब के लिए उसने बह बात थोड़े ही कही थी। सायद मजानक बहम का बहुरा याद आ गया या नपु की हानी। शान्ता के तन उमाटे हुए चेहरे पर नेपु का भविष्य। बीच-बीच में एमा होता है मजानक कोई बात याद आ जाती है। इस स्नेहित ममतामय आदमी के बदन पर पीठ पर हवा से पहले बौझकर हाथ फेर खान की एक बाह्र जयनी है। इस सर्वनामा बाह्र की बजह से ही उन्होंने दो एक आदमियों का सप से छठा लिया है। सिर्फ पुसिस-सेना ही नहीं है उनके एबेंट मकड़ के जाल की तरह बिखरे हुए हैं। करना कोई सोच सकता था कि कैपिटल रबर का सर्वद मुखदिर है? जसल में विमला काग्रसी है। गोरु सोच रहा था कि सायद उसे बहुत की बात मजानक याद आ पयी है, इसीलिए ए० बी० की बड़ी-बड़ी भाँलों की ओर देखकर उसने एकाएक पूछा "नपु के लिए?"

"शान्ता इतनी चुप्पा है कि नेपु के लिए होने पर मुझ पता नहीं चलता।"

"फिर?"

"ठीक मास्य एल नहीं पा रही है मुरारी के मारे जाने के बाद से ही। बिस्किम की बीरलों को लेकर उस दिन एक जुमूस निकालने की कोशिश की थी उसने। मैंने मना किया। अक्षय, बहस भी हुई उस दिन ही पता लगा। जुमूस हुआ कि जुमूस नहीं निकला। और।"

गोरु की ठंडी हवा से कमरा बफ़-सा बना हुआ है। अंधकार कीका पड़ रहा है। बूँद-बर-बूँ जमा हुआ बेधेरा मसता आ रहा है। निवारन रात भर कराहकर अब मुँह की तरह सो रहा है। कोई आवाज नहीं। निवारन की जसी हुई मकड़ी-सा बेहुरा अब बिचित्र कोमसता लिये है। छोटे हुए आदमी का बेहुरा कैसा बच्चों का-सा हो जाता है। सरस असहाय। मानो कुछ नहीं जानता। मानो बूझा है, कमजोर है। निवारन के बेजान अबड़े की काट बेस गोरु के मन में ऐसी बहुत बातें आयीं। जसल में गोरु को मसता रहा है कि सब-कुछ के अन्तर बह न जान क्या कुछ

खोजता रहा है। वह जैसे उनके बीच रहकर भी अलग है। अलग। छान-बीन कर देखने की जाने कमी एक आदत बन गयी है। जैसे मीनू को देख लगा था 'वह शायद सोना के लिए ही अपना जीवन समर्पण कर बैठी है। प्यार को समर्पित।' क्रांति के लिए समर्पित प्राणों की भी कमी नहीं है। मगर मीनू ठीक वह नहीं है, मीनू ठीक नोना नहीं है। फलस्वरूप उसने जलते हुए बहुत कुछ चटपट निगल लिया है। अभी वह कच्ची आग हजम कर सकती है। इस शर्मोली, एक चोटी झुलाती लड़की को गोरा आज से नहीं जानता। वही मीनू, वही काली आँखों की पुतलियाँ। आज बहुत हिम्मत में अनजान लोगों के घर रात बिता रही है। यही मीनू उस दिन सुकान्त के जन्म-दिन पर 'बोधन' कविता का पाठ करने के लिए किसी भी तरह राजी नहीं हुई थी, जबकि वह कितना सुन्दर कविता-पाठ करती थी। अच्छा, क्या अब भी उसके गले में आवेग उभरता है। आज शायद अनजान लोगों के घर में परम आत्मीय की तरह लेटे हुए भी मीनू को नींद नहीं आ रही है। यह यद्यथा क्या क्रांति के लिए है? अपने एकांत में एक सीना-तोड़ आर्तनाद। मगर वह आदमी जिसके लिए उसके सीने में तूफ़ की आग जल रही है, वह तो क्रांति में शरीक है। उसके प्रति लगाव रखना भी क्रांति के लिए लगाव है। फिर भी कहीं एक पेचीदा भँवर है। सब-कुछ जैसे कहीं उलझता जा रहा है।

खिडकी के पास मिसककर ए० वी० फ़र्श पर फूँक मारकर लेट गया। एक हाथ आड़ा माथे पर है। और एक सुकु की पीठ पर। उँगलियों की पीरो से नन्ह की बाढ उतरी, "मिनती भाभी आयी थी। विजयदा भी।"

सुकु चट से उठ बैठा, "कव ?"

ए० वी० की ज्ञात आवाज, "शाम के वक्त, मुझमें भेंट नहीं हुई। मोला की दूकान में एक चिट्ठी रख गया था। नारानदा की चिट्ठी।"

मिनती भाभी आयी थी। इसका मतलब है ह्यूज रोड की खबर। नाटे अली की बात। पुलिम के जुल्म की रिपोर्ट। और फिसे खींच ले गये, ऐसी बहुत-सी बातें। इन्हीं खबरों के लिए वे लोग साँस रोके बैठे हैं। सुकु की विग्रवा माँ। अचानक उनकी माँ की बात मन में कौंध गयी। चट

से बात कपाल के बीच बढ़ आयी । माँ । जग्य से एक रात के लिए भी
सड़का माँ से बसग नहीं सोया । बीच साल का बचाम सड़का सुकू ।

'नारानदा जाये हैं ।

गोरा और स्थिर नहीं रह सका कब ?

'कस ही शायद ।

रात की काली छाया के तसे साथ-साथ रहकर भी गोरा आज किसी
भी तरह से ए० बी० को पहचान नहीं पा रहा है । वह खार खाने वाली
बात अब एकदम नहीं है । जाने कैसा पस्त-सा हो गया है । कैसा सीम
सा गया है । काछी दुखी-दुखी-सा लग रहा है । विपित्र रूप से ठंडा ।
माँता के बारे में बढते समय ही ऐसा लगा था । शायद ए० बी० के मन के
अन्दर भी एक बर्बडर गरज रहा है । पुच्छाछ की छुरी से एक के बाद
एक एकान करता चल रहा है । भीतर-ही भीतर खून रिस रहा है ।

नारानदा के जाने की कब्र बैठ समय ही ए० बी० की जाँच में संशय
का रेत का एक कण बुसा था । अपने आप कैसे चुप मार गया है !
नारानदा को लेकर विककृत का अन्त नहीं है । जाब तक ऐसी-वैसी कोई
रिपोर्ट नहीं मिली है यह तय है । मगर आदमी दूसरी धातु का ही
बना हुआ है । सब-कुछ को एकदम छोड़कर समझना चाहता है । भीतर
तक ।

दीवार के साथ वह ब्यादा देर और टिककर नहीं बैठ पाया ।
कमर पक गयी है । रात के काल होने पर अब सुस्ती आ रही है । पसलों
को अब मुँदन से नहीं रोक पा रहा है । अम्हार्ई लकर वहीं पसर गया ।

उभर अँधेरा पिबल रहा है । धोर की मोस बिस्किंग के पीछे के पींग
मदान में बीकों के पानी की बूँदों की तरह उभर आयी है । मोस टपटपा
रही है । जाँच की तरह । पानी की तरह ।

भंदे मासे की बपदू और बेलियाहाट्टा की दो गम्बर पुतलीकस के भोंपू
की 'जान बचानो' पुकार से सुबह होती है । जाने कौन सोय भीनी मिट्टी
छानकर सभे में आसकर पुतली बनाते हैं । सपनों की पुतली । और भोंपू
की पुकार से जान बचाने की पुकार से सुबह होती है । इसलिए भोंपू की
पुकार को सभी 'जान बचानो' की पुकार कहता था । पुतलीकस में किसी

जमाने में पुनली बनती थी, किसे पता ? अब तो अमरीका, इंग्लैंड में डिनर नेटों के चालान जाते हैं। वेलेघाटा के बूहे मजदूर की हड्डियों में बत्ती लगाकर उनकी भेजों पर तश्तरियाँ रख देते हैं। खाने की तश्तरी। और नाती-पोतो को पाम विठाकर खुराफाती मजदूर क्रिस्ता मुनाता है। पुराना किम्सा। खैनी ज्ञाने से काले पडे ममूडो और चूना खाये सामने के दाँतो की जडो की तरह तन में जो क्रिस्ता काई-सा जमा पडा है 'पहले थोडो ही यह नब होता था चीनी मिट्टी की पुतलियाँ बनती थीं। चीन से मिट्टी आती थी मँदे से भी नरम, महीन।'।

माये पर तेज धूप लेकर, दो नम्बर पुतलीकल से सटे रास्ते से जाते हुए गोरा को यह बातें अचानक याद आ जाती हैं। पुतलीकल का भी जैसे एक दिल है। कैसे नाडी पकडकर खींचती है कल ! वेलेघाटा के सारे किस्मे कान की सूँड जैसी चिमनी के अन्दर जमा हैं। घुमड-घुमडकर पीला धुआँ छोडती हुई पुतलीकल जैसे दिन-रात उस कहानी का जाल बुनती जाती है, जिस कहानी की परत-दर-परत के तले इसान जीवन्त हो उठते हैं— मारी जिन्दगी-भर शोपण, जिन्दा रहने के लिए छोटी-मोटी इवाहिशो और इकट्ठे लडाई का गीत मँजोकर। वह जिन्दगी अपनी फटी हुई कचरी में फूल टाँककर गोरा को बुला भेजती है। गर्माहट लेने के लिए, हाथो की जकडन तोडने के लिए।

चाय के गिलास में चुस्की लेते ही गोरा ने अखबार खींच लिया। बूडो भी उस पर टूट पडा। सुबह-सुबह इस अखबार में मिलेगी हत्याओं की सूची और उस सूची पर निगाह डालते ही मोटे काले हरफो वाली पक्कि सुलगती लाल सीफो की तरह गोरा की आँखो में विष गयी 'पुलिन के साथ मघर्ष में उर्फ बाबू मारा गया।'।

अचानक कागज गायब हो जाता है। दबे जवडे वाला सी० आर० पी० का नाटा सिपाही और उसकी बटूक की नली हरफो का सीना फाडकर उभर आती है। 'सघर्ष' शब्द के अन्दर कितना भयानक 'घर्षण' है, जैसे बाग की चिनगारियाँ छिटकती हों।

आजकल अखबार खोलते ही एक तरफ मृत कान्स्टेबल की जोरू और उनके गरीब घर की एक तसवीर छपी होती है। पुलिस के पहरे में शोक-

जुमूस। संपर्क के बारे में सैकड़ों झूठे निस्स। युवक की मृतदेह के टुकड़े। सोमा कहता था 'धाका देने के लिए मकली रसाई शुरू की है। एक घंटे बीस रुपये तनदबाह पान वाले सिपाही के लिए कितना घब्र असल में हम भोगो को इत्स करेगा—जसी की सफ़ाई पेसनी बा रहे हूँ जानते हो भोरबा उस दिन मैं कह रही थी पुमिस की बोरु की तसबीर देती है सोना। एकदम बच्छी है रे अहा। क्या कहूँ बटा सामान निगलते मतल है न उगलते। बाबू दूसरी बात कहता था 'दुश्मन का अंत सामने नहीं रखना चाहिए। बाबू की मोटी मूँछ बात करते समय सरतराठी की। बाबू का कसा शरीर भरा हुआ चेहरा। जब मैं छोटा-सा एक चमकता हुआ इतानबी हबियार रहता था हरबम। और निचाना ऐसा कि मुँह में समी सिगरेट उड़ा दे। असाकनगर में यू० जी० (बाबू कभी भी अंडर पाठंड शब्द नहीं बोलता था) में रहने के दौरान शीतले साप की खोपड़ी में छेद करता था। वह बाबू भी गया। सड़कर ही गया है। बाबू का भोला भाभा चहरा अक्बार के भीतर से उभर आया। प्रसीहेंसी कमिज के लॉन पर जमी बँठकों के दौरान बिखरती हुई हुई। और मँदान की मीटिंग में पात्रामे के पीपके मोड़कर यजू के विरोह को खदेड़ना। यह सब बाबू की बातें हैं—गजू। गज से यजू। मारकाट उस समय हैडा-बेचक की तरह फँस रही थी। अब तो आखिरी हामत में है। कितन मुक की इस लेकर अनक पाटियां अनेक बातें कह रही हैं। नारानबा एक बार कबरपस्ती धीचकर साथे से बाबू को मुर कम्पनी के मँदान में। सोबिया का मँदान। खारे पानी की गन्ध उठ रही थी रह रहकर। और कपडा पटकन का महनती छन्द। वे लोग मारेंगे और हम भड़ुओं की तरह बेलेंगे? संपंजान नारानबा की भीहों पर बिबाब पड़ा 'यह सिर्फ़ दया है हिन्दू-मुसलमान बंधों से भी मुक्ति दया।

बाबू उत्तेजित 'आह! बच्छी कही। मेरे कामरेड को। नारानबा न शट से बात काटी 'उनके सिंसाकुर दगे के सिंसाकुर प्रचार में उदरना पड़ेगा।"

बाबू ने पठमूम की धूस छाड़ी 'यह सब-कुछ मुझे नहीं आता, तुम सोच करो जाओ...!"

बाबू चना गया था। एकदम गुरु-गुरु की बात है। पाटीं बनने-बनने को थी उन नमय। इन इलाके में वह नहीं आया। उनके जोड़ीदार महदेव को भी ० पी० एम० वालों ने कुत्ल किया था। इमीलिए क्रांति के साथ ० पी० एम० को काटने की बात भी पक्की तरह ब्रूठ गयी थी। इसके अलावा दिमाग भी बिगड़ गया था। एक्शन, इतालवी हथियार और वेनीस जिन्दगी के भयानक स्पर्श में जाने कैसा बन गया था। पत्यर की तरह। और नुरारी की मीना छेदन वाली गोली की लावाज सुनकर दोनों हाथों में मुँह ड़ाँपकर जोर-जोर में रोया था। कौन समझेगा इन पत्यर को !

पुतलीकल से सटकर निकलते समय गोरा जैसे वही पुजार अपने सीने के अन्दर महसूस करता है। कोहनी से बूड़ों को ठेला, "देखा ?"

"क्या ?"

"कारखाना बँसे का बँसा ही चल रहा है—बासी रोटी बाँधकर नव ड्यूटी पर जा रहे हैं।"

बूड़ों ने एक सटके में उनकी तरफ देखा। उनके बाद गरदन टेटी करके पूछा, "इसका मतलब सब-कुछ छोड़-छोड़ के चले आये, यही कहना चाहते हो ?"

"नहीं, यह नहीं कह रहा हूँ। इतना डोल पीटने से भी काम नहीं बना। क्रांति की कोई जल्दवाजी नहीं है—देखो, वे जोरू के चूतड़ों पर कपडा और बाल-बच्चों को लेकर ही मगन हैं।"

"वे लोग कहेंगे, मशोधनवाद के गड्डे में डूबे हुए हैं।"

"अतल में क्या।"

अचानक गोरा जैसे वही डूब जाता है। बालूचर के लम्बे बकफूल पेड़ की पतली छाया घनी होकर उनके चेहरे पर गिर रही है। नफेद दानों की क्रतार झलकी, 'तुझे हरिया भाई की बात याद है ? अरे वही ऐलेनबरी का चोखा मजदूर !' (बूड़ों ने महमति से सिर हिलाया) हरिया ने एक मजेदार किस्सा सुनाया था। एक गाँव में एक अघा और एक लगडा रहते थे। दोनों में बहुत दोस्ती थी। भोजन न मिलने के कारण दोनों ही नूत्र रहे थे। अन्त में पेट के पीछे गाँव छोड़ा। लगडे को अघा कंधे पर ले चला। एक चल रहा है, दूसरा रान्ना बतला रहा है। अन्त में एक गाँव में पहुँचे। ज्मजान की

तरह बीरान। संग्रह न रास्ते में बूने का एक पत्तीसा एक लम्बी रस्सी और एक नाखुनतरास देना। अंध से कहा से से काम आयेगा। अक्षय में हुआ क्या कि उस गाँव में एक मकान खासी था वहाँ एक राक्षस रहता था। दो प्रार घरों में सोय रह रहे थे मरने के लिए राक्षस रोब उन्हें मारकर मूँड से पीच मता था। उसके बाद दूसरे गाँव में जूम बूसन जाता था। सोमों ने अंध-ममड़े को मना किया मगर उन सोमों की बिद। राक्षस की हवेसी में ही जा टिक। रात को सोकर राक्षस दरवाज पर छक्का देने गया कौन है रे? उन सोमों न जवान दिया खोककस। राक्षस न कहा तुम्हारा बास केने। उन सोमों ने लम्बी रस्सी फेंक दी। फिर उसने बूक फेंकने को कहा। उन्होंने बूने का पत्तीसा राक्षस के मूँह पर उँडेन दिया। उसके बाद राक्षस न कहा नाखुन बिकाओ। तब उसकी खाँच पर नाखुन तरास गड़ा दिया। बस राक्षस डर गया। यह देख दुसरे सोमों के मीने में भी ताकत आयी बस सब मिलकर। हरिया कहता था खोककस का असस में कुछ नहीं होता सब झूठ होता है। मगर उन झूठ ने राक्षस को डरा दिया था। डर के मारे राक्षस के हाथ-पाँव पेन के अन्दर घँस गय थे। यही है साभाय्यबाद। एकवम खोकका। मगर इसे ऐसा किसने बनाया बता। वह कहानी कहता और झूलती हुई मूँछ क बीच से भरभुराकर हँसता था।

दुखिबस्ता-दुर्भागना की रात कट जाने के बाद अब दोनों के चेहरों पर चरा चैन समझ रहा है। कस रात तक गोरा का भारी मन पत्थर-सरीसा बना हुआ था जान कब वह चलने लगा। जायद नारानवा क जाने के बाद स ही। गोरा को धमेभागुम की तरह निश्चितता के इसके भाव न चर लिया है। वह पाँव से ईंट के टुकड़ को सतिपाठे हुए आये बढ रहा है। किसे पता कि चन्द कदम जाने जात ही उम सोना की बात माप आ जायगी। रिप्रय फ्रैन्टरी में बजते हवीड़ों की धुम-धुम आवाज सुनते हुए व भाभी की दुकान में बसे। पक्का तर करने के लिए। भाभी की टेढ़ी नाक और होंठों की दरार के बीच पतली हँसी।

“मच्छा बिसफुट दीजिये।

अरे बाप ! काकर बीस भरा उठार कर रहे हैं।”



“और नहीं तो क्या ?”

पुतलीकल का ‘जान बचाओ’ की पुकार लगाने वाला भोपू एक बार फिर वज उठा। और एक बार फिर एक दगली मजदूर माथे पर पट्टी की तरह गमछा बाँधकर लोहे के छोटे गेट को निशाना बनाकर दौड़ने लगा। अन्दर जाने के लिए गरदन झुकाकर घुसना पड़ता है। माथा नीचा करके। सुना है कि यह गुलामी का प्रतीक है। पुतलीकल के मुदामा की वजह में तीनों मजदूरों को लेकर एक बार लाइन के किनारे गोरा बैठा था। ढलुआ जमीन। पीछे मालगाड़ी की लाइन। घिस-घिस, घटांग-घटांग की आवाज। मीटिंग में ए० बी० भी था। कुछ बातों के बाद उम छोटे-से गेट की बात भी उठी। ए० बी० ने कहा था कि इसी में इज्जत की लड़ाई शुरू की जा सकती है। मुदामा की हँसी फट पड़ी, “पेट का भात और चूतड़ पर का कपडा जहन्नुम में गया।” और साथ ही हारान मिस्त्री का किस्सा चालू हो गया “तो समझो, एक बीस और सात साल से इस पुतलीकल में हूँ। एक बार तो कल ही ठप्प हो गयी थी। विलायत के साहब तक फेल हो गये। उस समय यही हारान मिस्त्री काम आया। मगर हाल वही था, गरदन झुकाकर कारखाने में घुसना। ज्योही कारखाने के पेट में घुसे, त्योही दुनिया-भर में कहीं भी तुम्हारा कोई नहीं रहा। न दादा, न बाबा, न बहन। मशीन से कैसा प्यार! कारखाने के साथ कैसी दिल्लगी! यह है बाबा, मालिक के साथ जूझने की जगह। कुरुक्षेत्र।

हारान मिस्त्री की बात खत्म नहीं होती। लगातार चलती रहती है। अन्त में मुदामा ही उन्न गया, “चलो, चाय पीकर आयेँ।”

चाय की तलछट तक गले में उतारकर, पुतलीकल के कान का परदा फाड़ने वाले भोपू की आवाज दिमाग में लेकर वे वस-गुमटी की ओर बढ़े। इलाके से कोई-न-कोई आयेगा। विजयदा आ सकते हैं। मुहल्ले से कैसा सगाव है! वहाँ के समाचार के लिए दिल बेचैन रहता है।

वस-गुमटी से सटा हुआ गदगी का ढेर। सारे कलकत्ते की गदगी। कादापाडे की वस-गुमटी। सोना वी माँ की लम्बी-सी ठूड़ी गोरा को दिखायी पड़ी। बूडो बेचैन हो उठा। उमने भाग जाना चाहा, “मैं चल रहा हूँ।”

घोरा ने बहुत ही सख्त स्वर में कहा "नहीं।"

सोना की माँ के हाथ में एक पोल्सी थी। कई दिनों से चेहरा फूसकर होल बन गया है। शामय यह कई दिन उन्होंने रोकर ही गुजारे हैं। टेढ़े बकफूस के पैड की पतली छाया काँप उठी, "गोरा!" और सूखे बालूबर के बीच मैदान में घोरा न सोना की माँ को जकड़ लिया "माँसी।"

बुकान में बैठना बेबकफ़ी है। बू से ही पटा बस आयेगा। इसक असावा एक बार बबान जुलने पर कब क्या उफन पड़े कोई ठिकाना नहीं है। उस समय आठों के प्रवाह में कच्चे बाब की बसन का भी उनको होश नहीं रहेगा। बायी ओर अरचाचियों के डरे के बगल से उन्होंने बसना मुक़ किया।

"तुम लोग तो भाबे-भाबे फिर रहे हो उधर बिजय को बाब भोर में उठा ले मये हैं। अब उस बुड-सी बहू और सूझियाप्रस्त मड़की को लेकर यह किस बहन्नुम में आयेगी?"

'बिजयदा पकड़ मये हैं?'

"हाँ। मुहस्ते के बोटू बाबू के पास छिरि की लेकर पयी थी। बोटू बाबू सपने-सपने नहीं लेंगे बमानत करा देंगे कहा है।"

'कहा है?'

'हाँ। नहीं लेंगे मठलब ओ जी में आयेगा बही करेंगे क्या?'

'देखिये।'

हाँ बरीर बेबे कहीं बाऊँ फूस में जाग लयाकर तुम लोग तो अब तो देखना ही पड़गा और सुन भूसकर भी मुहस्ते में पाँव मठ रलना कोई बचा नहीं सकेगा। फिर तो उसी सोना की तरह।"

उसके बाब स्वर भीय गया। घोरा और बूडो के पाँवों में बसन की टाकठ नहीं है। बालूबर से ब लोग काफ़ी दूर बसे आये हैं। बकफूस पैड का बहुरा हुरा रंग अभी भी जैसे आँसुओं में काबल की तरह लगा हुआ है। घूप में अब टेधी नहीं है जाने कैसे बाबल-सा भिर आया है। उस बूसर बसे बसते हुए मैदान में बाबसों से बिरे आसमान ठले सोना का नाम सुनन के बाद किसी के पाँव भी आये नहीं बड़ सके। अचानक जैसे बमीन में मड़ मये हों।



“यहाँ बैठ ।”

सोना की माँ ने पोटली खोलकर सूकु की पैंट और कमीज निकाल फेर टिफिन-कैरियर । बूडो घुटने पर ठुड्डी रखकर बैठा था । गोरानेनो पाँव फँला दिये और सोना की माँ, जननी की तरह प्यारे बेटे को उभर के खिलाने लगी ।

“यह तेरी मिनती भाभी ने भेजा है सुना है, बूडो उसके हाथ चटनी बहुत पसन्द करता है ।” खाते-खाते वार्ये हाथ से गोराने पीछे ठेले, “सुकु के साथ भेंट हुई, मौसी ?”

“हाँ, होगी क्यों नहीं ?”

“तबीयत कैसी है ?”

“अच्छी है ।”

“माँ को छोडा है ?”

“ना, कल कचहरी मे देखें क्या होता है । हाँ रे गोराने, उस पुलिस व को क्यों भारा तुम लोगो ने ? सूकु बत्ता रहा था, मुहल्ले के सब लोग कह रहे थे ।”

“पता नहीं ।”

सोना की माँ दो बजे के लगभग चली गयी । विल्डिग के तिमजिले कमरे मे धूल की गध सीने मे लेकर मन्टू बेचैन होने लगा । समाचार सुने मे वाद से ही मन्टू बहुत व्याकुल था । सोना की माँ से मिलने के लिए खतरनाक खिचाव भीतर-ही-भीतर खिचता जा रहा है । वैसे इस दोपहर मे विलकुल सन्नाटा है । पुलिस की जीप के ब्रेक की आवाज । और खाँक करती हुई धूप । इसके अलावा रात-भर आँखों की पलकें मूंद नहीं पाया बातें करते-करते गोराने सो गया । निवारन, सूकु और मन्टू की इक्की-दुक्की बातें कानों मे नहीं पड रही हैं । अभी नीद । मुर्दे की तरह नीद ।

पुलिस-बैन की हैडलाइट की तेज नशीली रोशनी और लावारिस कुकी तरह काटते पहियों की आवाज के साथ मुकाबला करते हुए कटती है । रात कटती है आँखों की पुतलियाँ जलाकर । उसके बाद हटका ममाचार और भारी थकान लेकर सुबह । उसी सुबह के लुडकते-लुडकते फिर रात आ गयी । तिमजिले के कमरे को इसका होश नहीं था । का

किनारेदार साड़ी के बीचस में अंधरा सिये शान्ता जायी "नेपु पकड़ा गया है। ओ सड़का डी० बी० लेकर आ रहा था उसका पीछा करते हुए ही सेक्टर रेड किया गया।"

बो या चार बातें। चुनिन्दा बातें। उनसे ही सब-कुछ बीचस हो उठा। शान्ता की रिपोर्ट ही इस तरह की है। कोई भाग-लपेट नहीं है। एकदम सफ़री बातों से भरी हुई। कसे बरबन की तरह ही शान्ता की बात। सबर नेपु के पकड़े जान की घटना की रिपोर्ट भी शान्ता उसी तरह कर सकती है वह किसे पता था। किसे पता था कि उसकी बबी हुई टूट्टी पर नन्हा सा गोस तिन अचस में परबर है।

शान्ता के होंठों की जोड़ी सूखे पत्तों की तरह हलके से बरपरामी। पता था यही होगा।

बूड़ो तेबी से बहुसकदमी कर रहा था। बूड़ो के पाँच के दबाव से फट से एक तिसबदूटे का पेट फटा और ससवार अंधरा फँस गया। दियासलाई सोबकर शान्ता ने ही मोमबत्ती जलायी। उससे एक बाबाब हुई और शान्ता की धूरी आँसों की पुठसियों में हलके फसीते की तरह रोसनी जमका कर दियासलाई भवक से जल उठी। धूरा रंग जैसे जल जमकर स्रम होता जा रहा है। मोमबत्ती की लीप लीची रोशनी को घेरकर ब सोन फले बैठे हैं। गोरा के बालों ने बिबर कर उसकी गरबन को डँक लिया है। उन बालों में बह उँपसियाँ जला रहा था शान्ता।

"क्या है?"

"कुछ किया नहीं जा सकता।"

क्या बदला। उससे क्या होगा? आबनी जान से भी कोई नाम नहीं होवा सड़ाई भी एक कब्रम आगे नहीं बड़ेगी। क्यावा-स-नयावा घोड़ी जसन मिट सकती है। इसके अभावा सोबकर भी क्या होना? मुना है पार्टी ने कहा है कि किसी कामरेड के पकड़े जाने पर उसे मरा हुआ मान लेना पड़ता।"

तुमन सुना मुरारी के समय एक जुमूस।"

"जुमूस निकालने के लिए कह रहे हो?"

"हाँ।"



वे लोग दबी जवान में बातें कर रहे थे। फुसफुताकर। सभलकर। चरना मृकु या निवारन बात का छोर पकाउ सकते हैं। बगल में बूडो दीवार से टेक लगाकर सोया हुआ है। बूडो तक नहीं सुन पा रहा है उनकी बातें। असल में शान्ता के बारे में कही गयी ए० बी० की बात ने ही गोरा को उसकी ओर ढकेला है। और एक दिशाहीन भयानक क्षण में उसी की तरह रास्ता खोजता गोरा उसकी दोस्ती पाने को तरस रहा है। इस दोस्ती की बुनियाद शान्ता भीतर-ही-भीतर बहुत पहले से बना रही है, यह बात गोरा ने सपने में भी नहीं सोची थी। बालूचर के शरणार्थी मुहल्ले में बयस्क औरतों को लेकर शान्ता एक स्कूल चला रही है। मीनू से उसने कल रात बात की है। मीनू को भी वापस लाया जायेगा। शान्ता ने सिर्फ इतना समझा है कि किसी भी तरह आम गरीब, मेहनतकश इंसान का साथ छोड़ने से काम नहीं चलेगा। और यही आस्था लेकर वह लड़ें जा रही है। इसका पता नेपु को भी था।

हर वक़्त किताब पलटता था। इसीलिए तूफान बहाने से ऐसा लग रहा था कि।

सूज रोड की टप्परदार बस्ती में टूटी-फूटी गृहस्थी और बाल-बच्चों की भूख-धीमारी भूलकर जो इंसान सड़ाई के मैदान, मीटिंग-जुलूसों में, हमेशा मौजूद रहता था, उसका नाम है नारानदा। शीशे की फ़ैक्टरी के कच्चे नाले के किनारे, नाले के ऊपर बस के मचान पर। अली, सुबला, विजय के हाथों को परकट-पकडकर पूछते थे। बातचीत का दौर खुल कर चलता था। मुँह का धूक सूँघकर भात के टाग की तरह गिरता था। दलाल के खिलाफ, कम्पनी के खिलाफ आदमी के जबड़े की हड्डियाँ तनी रहती थी। अभी भी वैसे ही, बस वे बेअदब हड्डियाँ छिटक कर और बाहर आ गयी हैं।

सूज रोड की पक्की जमीन पर, पीपल की मीठी छाँव में चोपड़ी की चाँद को बचाकर एक दिया खोजने, एकजुट सड़ाई लउने के तौर तरीकों को लेकर घटो बातों की माला गूँथी जाती थी "स्टारटेक्स के मजदूरों की छँटाई होने पर ग्लास फ़ैक्टरी के मजदूर अगर सोते रहते तो एका क्या आसमान से उतरता?"

वही नारायणदा। वही दिसलोल हँसी। यूँ उन्हें पहचानने का कोई और तरीका नहीं सिर्फ हँसी की उस सहर के असावा 'जैसे हो पहल यह बताओ।"

बहरा बिलकुल बदल गया है। नाक क आम तक लटक जाने वाले बाल अब नहीं हैं। माथा मूँडकर साफ़ कर दिया गया है। मूँछ भी बिहारी ढोंग से नीचे पिरि हुई है। गाल के दोनों ओर के माँस के सूज जाने से एकदम सपाट बहरा। बिहार की जमी मिट्टी का-सा ताँबई रंग। महक वह भाँखों की ओड़ी ही पहले जैसी है। वही घर वही पिनगारी।

गोरा के बेहर पर बसनाम हँसी खिली नारायणदा।

जिस हँसी को देखकर सलय और संकट का बिराब लोड़ने की हिम्मत पैदा होती है नागणदा क सपाट गालों पर अनुप की तरह तनी वही हँसी। खिली हुई।

मोमबत्ती छीमी जल रही है। बीच-बीच में चरचरा उठती है फिर भी जल रही है। जाने कब सभी उन्हें घेरकर गोसा बनाकर आ बैठ हैं। पुराने क्रिस्से-कहानी फुल उठते हैं। संप्रामी बेसेपाटा और उसके प्रबंध साहसी प्राणा की बहानियाँ ओड़कर वे सड़ाई का काव्य मूँडन बैठे हैं। 'अमी का समाचार क्या है रे? उसकी बहन की बीमारी ठीक हुई ?' अमी की बहन को टी० बी० हुई थी। अमी की छेंटनी की बपी थी। अभागिन सड़की डेढ़ साल हुआ गुजर गयी। अमी को फिर भौकरी मिसी। भला-बुरा मिलाकर समाचार यही है।

सुक के बिलमय का बटाटोप छँटा सत्तर के आखिरी दिनों की टुकड़ टुकड़ हाँसी हुई बुबिधा डंड संलय और प्रणों की सक्रियाँ सीन में लेकर भी वे अचानक लुप्त हो उठे। बातों-बातों में बेसिबाहादटा से नारायणदा कब मोठीहारी पहुँच गये पता नहीं। बिहार के फुमिया गाँव की कीचड़ मिट्टी। आड़ा भमाने के लिए पुआल जमाना फूस जमाना। बीजने का सुरीसा पीत। सूख का कारोबार। लोपण की आरी। आरी के बाँतें। उन बहरीसे बाँतों को उखाड़ने के लिए लड़ाई-जंग। जंग की तैयारी

यह अंडा तुमस कहता है

दिन रात जुमुम क्यों सहता है ?

जुलुम के नामोनिगान मिटाओ,
होश मे आओ, वेदार हो जाओ,
ओ मेहनतकश जनता उठ ।

अडतालीस मे पार्टी ने यह गीत रचा था। धूम-धूमकर उसके गाने, गाने के उनके जोश ने, फुलिया गाँव के छोटे कद के मरियल शरीर के कनाई आजि ने मन मोह लिया था। बाल-बच्चे, वह-बेटी छोड लडाई की आग मे कूद पटा था वह आदमी। फुलिया खाल रहा था। उसके बाद चार साल तक जेलगाने की चक्की पीसी। अब अध-बटाई पर सेती करता है। इस वार जाडे मे ईख लगायी थी। खेसारी को खेती। मिट्टी का मीना चीरकर मीठे पानी की खेती। ईख नहीं, मीठा पानी। छोटे कद के उम ठडे आदमी के सीने मे आग ठोस आदमी चुन-चुनकर पार्टी बनाना। उम आदमी के घर मे ही नारानदा ने शेल्टर लिया था। लौटते समय कनाई आजि के बेटे की लडकी के लिए लाल फाँक खरीदकर ले जानी पडेगी। उसके जित्र के साथ उसके नटखटपन के किस्मे भी चले। वह छोटी-सी लडकी नारानदा मे बहुत घुली-मिली है। कनाई आजि कहता है, “डम वार लडाई बाल-बच्चे, वह-बेटी—सबको लेकर होगी।”

अचानक मीनू की बात उठी, “मीनू कहाँ है रे ?”

शाल्ना ने जाने कैसे गभीर ढँग से जवाब दिया, “उसे दूर के शेल्टर में रखा गया है।”

मीनू का माँवला चेहरा आँत्रो मे तैरते ही मोना की बात आ जाती है। उम रात जैसे बातों का अन नहीं। जनगिनत बातें। उनकी रुखी, जली जिन्दगी मे कनाई आजि की हरी जमीन की तरह सोना जैसे मिट्टी के टुकडे का रस है। सोना की तरह के बहुत लोग नहीं। मोना की बात उठने ही विल्डिग का चीकोर कमरा भीन हो गया। ए० बी० का मिर घुटने पर झुक आया। इधर उमके सीने मे एक दर्द चिलक उठा। बड़ी-बड़ी आँत्रों की पलकें अनहनीय दर्द मे मुँदने लगती हैं। नारानदा की दोनो आँखें नमक के दानों की तरह जल रही हैं “मोना ने जब मेरे साथ जाना चाहा था उस समय क्यों नहीं जाने दिया ?” फिर मीनू की बात उठी। छरहरी, जिड़ी मीनू। गोरा को लगता है, मीनू शायद बाकई निर्मना नहीं है, मगर मिखाते-

पढ़ाने से धारदार हथियार बन सकती है। गोरा की ओर देखते हुए मारामदा बड़बड़ाये सड़की को कर संभास कर रक्तगा।" और गोरा की भाँख बड़ी हाँ उठी "बहु भसा संभास कर रक्त भायक सड़की है। उमा की तरह सारे बदन में राक्त मसकर बहु एट भीषण धज में चुगी है।" हूँ हूँ करते गोरा का सीना जैसे जलमें मगा नहीं रोच सका सोना रे।

पाड़ी रात। मसकार उमसती गहरी रात। धेरे के सीने पर पाँव जमाकर विचित्र्य काड़ी है। घूम और हस्तहारों की बग्न सिये हुए। मोमबत्ती की फीकी रोशनी में मारामदा के साथ कसे वेदरे की दुस्त ताँबई रम सिये रोशन है। रह रहकर हुवा का भाँका भीतर आ जाता है। हुवा में आगे की तरह मोमबत्ती की भी रह रहकर काँप रही है। ए० बी० की खड़ी नाक की छाया ऊँच पर हिलकल उठती है "तू कहना चाहता है मैं छिरि भाभी के बारे में नहीं साचता। विचयदा की सड़की से मरा कोई सगाव नहीं है है न ?

पोड़ी देर पहले मारामदा ने ही बात उठायी थी। बातों में से कूरियर विचयदा की बात निकल आयी। नेपु क जलने का भी बिक हुवा। विम्मदायी की बात भी उठी।

"बिलने कामरेड पकड़ बम हैं नहीं हुए हैं उनके परिवारों की देखभास करनी पड़गी। यह हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है। जो सोव पकड़ गध हैं उनके लिए कानूनी सम्बोधस्त करना।

उसी क्रम पर ए० बी० की नाक की पड़सी-उपती छाया हटी "कुनुबा कानून है जिंसाऊ ही हमारा सयाम है। उनकी दवा पाने के लिए हमारे कामरेडों ने सड़ाई नहीं सड़ी है।

मारामदा ने अचकचाकर उँह भास से बात काटी यह जनबाबी अधिकार उनकी बपोती नहीं है। हमारे देश के लोगों ने कई ही साल तक सड़ाई सड़क यह अधिकार हासिल किया है।"

ए० बी० के होठ अपने-आप टेढ़े हाँ गप टेड़ी मुसकान सिये तिऊँ कानून की बात मही है सड़ाई को कानून की चौहड़ी में बटकाये रक्तगा ही कानून का जहम है।"

मुनकर गोरा अपने की संभास नहीं सका, "कुनुबा सड़ाई में संसाव

का कोई अस्तित्व नहीं है विजयदा, छिरि भाभी—किसी को भी तुम कुछ नहीं समझते, समझ नहीं सकते ।”

गोरा ने एक हाथ से अपना चेहरा पोछा ।

ए० बी० की तनी हुई नाक और तनकर कटे के निशान को छूने लगी । नारे के फट पटने जैसा दुरन्त उल्लाम । कटे का दाग टीयर गैस के गोले की यादगार है । आज की बात नहीं है । खाद्य-आदोलन । कलकत्ता शहर की तारकोल की सरत सड़को पर वह भूखे पेट ही टूट पड़ा था ।

लाठी नहीं, गोली नहीं ।

खा-पहनकर जीना चाहता हूँ ।

जुलूस के आगे चलता बड़ा-सा लाल झंडा, माथे पर बँधी पट्टी की तरह हवा में उड़ रहा था । ए० बी० के मिर के ऊपर । और पेट के लिए दाने के बदले सीसे की गोलियाँ और टीयर गैस के गोले मिले थे । उस समय का टीयर गैस के एक गोले का खोल अभी तक उमके पास रखा था । सोना ने सकेड़¹ बनाया था । ज्वर 'माल' । वह 'माल' एक नाटे गोरखा सिपाही ने फेंका था । पुलिस या मिलिटरी ? एक गोला आकर ए० बी० की नाक के नीचे लगा था । उस जगह फाँक हो गयी थी । कधे पर कपड़े का झोला झुनाती हुई लम्बी लडकी अशोक को वेलिंगटन स्ववायर खीच ले गयी थी । शायद रुमाल भिगोकर बाँध दिया था । काला दाग लडकी की स्मृति जगाता है । टीयर गैस के उस गोले और गोरखा सिपाही और खाद्य-आदोलन की स्मृति में दाग अभी भी जल उठता है ।

जाने कौसी एक आवाज-सी हुई—संत, संत । अचानक सभी मुँह बंद हो गये । नारानदा ने सभालने के लिए कोई बात कही । तभी फिर उधार उठा । और उमके प्रवाह में नारानदा की आधी खुली बात डूब गयी । एक भयकर ज्वार, रुलाई का-सा, “शान्ता मेरी माँ के पेट की जायी वहन नहीं है, नेपु की वे लोग मेरा सीना ज़रा भी नहीं जलेगा न ।”

यह जैसे अशोक नहीं, अशका नहीं, ए० बी० नहीं । हलकी दाढी वाले इस आदमी को गोरा ने जैसे पहले कभी नहीं देखा । गुरु-गुरु में ऐसी बात

बसन पर पार्टी की बिना को लेकर बात होगी पर ए० बी० के घसे में जाने कौसा पाहु बस जाता था ! आज वह सब-कुछ नहीं है। छोटी-सी पाड़ी के पीछे आज जैसे कोई बिचित्र रहस्य छूपा है। एक निरहोय म्पवा और पीड़ा का रहस्य।

नारायण का मन उद्विग्न हो उठा "नारायण मत बसा जलका बसका सुना।"

बात सीने में चुमगने लगी। इस तरह चुमनी कि वह बपन को और नहीं रोक सका। झट से उठकर टेका होकर लड़ा हो गया 'देखना हमारे कामरेड लोग जेल छोड़कर इबबत के साथ निकल भायेंगे देखना।

मह जैसे हर बात पर सँभली उठाने वाला ए बी० नहीं है। सारथ बैनियाहाटा लोकल कमेटी का जूझार नेता एल० सी० एल० ए० बी० नहीं है। जैसे एक अभिमानी सिन्धु है। आखिरी बार 'देखना' सभ्र कहते समय ए० बी० का बसा मीच गया। पीछे के बरबाजे पर कँच-कँच की आवाज पैदा करते हुए ए० बी० घायब हो गया।

ए० बी० के जाते ही निवारन कौसा छापटाने लया। जाने किस बात की बैचनी है ! बोहरा लिबाब। नारायण को कुरंत भाय नहीं पा रहा है। जबकि साँचे की दुरन्त आकांक्षा है। उसी आकांक्षा में वह चुनमुनाने सगा। सारा शरीर बधैनी से बिड़बिड़ाने सगा "नारायण मैं रात हँसते ही निकल पड़ूँगा। गाँव के हालचाल बताइय। जरा सुनकर ही जाई।

धुकु को जैसे बस्ती नहीं है, "हाँ वहाँ की बातें ही हों।"

नारायण की आँखों की मोड़ी धुकु के जबभी बेहरे पर टिक यदी "बया बात है ?

नपु की बात दिस की मुप्य काठरी में हँसकर सान्ना की आवाज काँप उठी "वहाँ कौस भुसपैठ कर सके ?"

"पहले-पहल मैं कटिहार क एक मिल-मजदूर क भर रहा। उसका नाम सुखनाम था। सुख का कोई ठिकाना नहीं। वह आज का यादनी है भी नहीं। पहले सी० पी० एल० में रहा। उसस पहले सी० पी० जार्ड०। यानी नाम पार्टी का आबमी कहुने से जो समझा जाता है, बिपद्रुप बैसा...

तेल-पिलाई पक्की लाठी की तरह शरीर। टीन की खोली में डेरा। बगल में मकई का खेत। उस आदमी को सभी मानते थे। उमका ही एक साला मोतीहारी में रहता था। मिलटोले में कई दिन बिताकर, सीधे वहाँ चला गया। कनाई आजि। दिन-भर खेसारी काटने लगा। वह भी अनाड़ी हाथों में हँसुआ चलाने लगा। उसी से अगली उँगली उड़ गयी। कनाई आजि की जोरू ने सीख दी, 'हँसुआ ऊपर की ओर नहीं खीचना चाहिए।'।”

छह प्राणियों के साँस लेने की आवाज़ लगातार उठ रही है। मोमवती की हलकी रोगनी में मोतीहारी घाने के फुलिया गाँव के रहस्यों की गाँठ खुल रही है एक-एक करके। ताँवे के-से रग के, धूप से जले इंसान, आँखों में मूखापन लेकर कमरे में जैसे चल-फिर रहे हैं। सुख-दुख का गीत गा रहे हैं।

भारी अँधेरी रात हू-हू करती लुढ़कती जा रही है। रात के गाड़ी होने के साथ-साथ विक्षुब्ध उस कहानी का स्वाद अब जाने कैसा खारा-खारा-मा हो उठा है। कहानी की तहो में से से काँटे उभर रहे हैं। माथा चरचरा उठा है, मवालों के तीखे भाले।

“ पार्टी कामरेड गाँवगज के कारखाने में काफी तकलीफें सह रहे हैं, काफी दिक्कतें झेल रहे हैं हमारे इलाके में ही एक कामरेड ने अनगिनत दिन सिर्फ हँडिया पीकर आदिवासियों के बीच गुज़ारे हैं। मगर ज़मीन पर पाँव जमाये हुए हैं दिनों-दिन भूखे रह रहे हैं, मीली पैदल चल रहे हैं गोलियों के सामने सीना तान रहे हैं मगर मजदूर-किसान के सामने क्या प्रोग्राम रख पा रहे हैं एक वही खात्मे का (यहाँ निवारन फुफकार उठा, जैसे अब तक वह मौका तलाश रहा था)।”

“तो फिर खात्मे की राजनीति में आपकी आस्था नहीं है?”

“नहीं, सत्रासवाद में किसी कम्पुनिस्ट की आस्था नहीं होती।”

निवारन विरक्ति के क्षाग उठाने लगा। अचानक उसके धैर्य की दीवार

1 पार्टी के 'बग दुश्मन के मफ़ाये' की मुहिम, जिसे वे वर्ग-मघर्ष का उच्चतर रूप तथा छापागा युद्ध की शुरुआत मानते हैं।

उह गयी। शान्ता बड़बड़ाकर ज्ञान क्या कहने लगी। उसकी मुँह की हवा से मोमबत्ती बुझी-बुझी-सी हो जायी।

और निवारन न उधरी नसों वाले अपने हाथ को बुमाया "फिर तो कोई बात ही नहीं हो सकती।"

नारामदा ने मजबूत हाथों से पतवार पकड़ी। वरना इसके बाद बात ही न होती।

फिर बड़ी बात छार की तरह बह चली। नाग्बनिकों की बात। कम क उस आधे सम्पासी-दक की बात शान्ता और चुक उम्मुज होकर सुनने सपे। छह प्राणी जाने कब एक सक्के से रूस के अर्द्धिनि तुकान में चलने टिरत समे।

नारामदा की बातों के बीच में शान्ता न हसर-उसर के सवाल पूछे। कभी खीचकर भीहि कपास पर बड़ावीं 'यह अभी तक मान नहीं पायी हूँ। आदमी ने हँसकर एक किताब का नाम लिया खोलकर देखना। उस समय तो बात करम हुई। फिर मुकु ने पकड़ा यानी आप कहना चाह रहे हैं कि हम लोग जो कर रहे हैं, वह ठमाम समत है?

नारामदा के चेहरे पर साफ-सुबरी मुसकान 'नहीं कामरड।" बोरा बाँके बड़ी-बड़ी करके उस आदमी की ओर देख रहा है। कान बड़ करके उसकी बात पचा रहा है। कुछ बातें तो बोरा ने भी समझी थीं। मगर समझा किसे पाया? शायद उसक समझने में कुछ पोसापन था। इसके असावा अपनी समझ बूझते तक पहुँचाना एक बारीक कसा है। वह बातों की कपकप नहीं है और बात उसझाकर उसका सिरा जो देना भी नहीं है। यह तो जैसे परत-परत-परत खोलना है जब तक वह न मिले।

निवारन उसी तरह तुनक उठा 'तो फिर अब सची किताब लोअेंगे।

बात कहने के साथ-ही-साथ निवारन ने बठीभी रँगसी आसमान की तरफ उछाली। हवा खीरकर शब्द हरहरा उठे। थोड़ी देर के लिए चुप्पी। मुकु छाँ पर रेखाएँ खींच रहा है। यानी सोच रहा है। बंभीर डँग से जान क्या साथ रहा है। और निवारन का तुनकुपन नारामदा सात

भाव से सहलाने लगे, "क्रान्ति एक वर्ग का उत्थान है ।"
गले में उतार-चढ़ाव नहीं है। एक सुर में कहते जा रहे हैं। इसान
की जान और जिन्दगी लेकर जो बात शुरू हुई थी, अब कूट-छानकर
उसका अर्क निकाला जा रहा है। अब वह बात एक सिद्धांत बन गयी है,
क्रान्ति का सिद्धांत ।

कत्लगाह, जेलखाना गोलियों की बौछार

यन्ने नामे के पाम रंगकम । रंगकम का कमेका भीरती हुई मड के ऊपर
स उठी गहरी काली चिमनी । जोखिम उठाकर जाने कब भूले पेट असी न
चिमनी क मामे पर सुर्ख जूम के रंग का घाल झंडा मजबूत हाथों न कसकर
बांध दिया था । मजबूत की हरजत । इन्जत की लड़ाई ।

बड़ी धूप और आममाम-ठाड़ कारिलो की बजह से अमी के मेहनती
पून जैसे सुर्ख झंड का रंग अब सुर्ख नहीं है । बहुत ही मीसा पड गया है ।
वज्ररंग । उघडा हुआ रंग । फिर भी ठेक हुआ से बेसेघाटा के जल घाम
में खोर पडने पर पटा झंडा मुरारी के हृत्पिण्ड की घडकम लिये फरफरा
कर उड़ता रहता है । उस समय हृत्पिण्डों की तरह एक आवाज उठती
है । और ब्रिटिश के तिमन्डिले क कमरे की सुर्वनी मोमबत्ती की रामनी में
उस आवाज स लोग की गंध पाती है । जाने कौसी खामोशी छा जाती है ।
पापाण की तरह । अहिल्या की तरह ।

अंधरी रात कटती है । ककत ककते होकर । रात के बनुने को
पडती हुई बेसघाटा की भार मुकबिलों की बुरती जाँचों से दर्यम के
आदिम अँधरे का सीना भीरती आती है ।

पूर नहीं अजाम का आर्तनाच—'अस्माह इस्माह मुहम्मद ई
रमुल ।

अमी का इयाज आते ही पुतलीकम न मजबूर के बँनाये की तरह
चिमनी के माथ पर बँडा झंडा माथ आया और गोरा की जाँचों में बीबी
दगाम की बस्ती में अमी की सोंपडी का कूबड़ हिल उठा । अमी की पार
आयी सँते गाल चपटी नाक । नाक की गुठली । रबरकम और रंगकम

ने सेंडसी की तरह भूखी-नगी बस्ती का गला दबा लिया है। सेंडसी तिकोन में फँसा वीवीवगान के मेहनतकश का कलेजा धुक-धुक करता है—व्याह-शादी, निकाह और कच्वाली के बोल लेकर। और बस्ती की ना जैमी गली के बीच उभरी नसों वाले हाथों के रोएँ झुलसाकर, धारदार सलाख में माम के टुकड़े फँसाकर, चूल्हे की आग में पकाते हैं उन्हें वीवीवगान के लोग। जिन्दगी-मौत की छोटी-बड़ी लहरें उठाते हुए जिन्दा रहें हैं देवकूप इसान। गौरैया जैसे दुबले सीने के पिंजरे में हवा भरकर कर्भ कभी कोई बूढ़ा कारीगर गाली देता है, थू थू करते हुए।

अब तक अली उठ बैठा है। तडाक से। लोटा लेकर मालगाड़ी व रेल-लाइन के किनारे गुसल करने गया। दो-दो बच्चों वाली जिस नाज़िमा वीवी को पिछले महीने वह निकाह करके लाया है, वह अब चेहरा लटका चूल्हे में आग सुलगा रही है। इसके बाद भूखी-मिले माइलो-गेहूँ-जी के मिले जुले आटे में एक लोटा पानी उँडेल देगी। उसके बाद हिलते हुए उसे गूँद देंगी। उसके बाद लोइयाँ। उसके बाद रोटी। वही रोटियाँ गमछे छोर में बाँधकर अली काम पर जायेगा। नाज़िमा मुहम्मद की पान गमुटी तक साथ-साथ आकर अचानक पत्थर हो जायेगी। उस समय मुडकर गली के नुककड की ओर देख अली नाज़िमा के रुखे-दुखी ताव चेहरे, दोनों बच्चों के चेहरे पर जुकाम के पतले सफेद दाग और फटी सफेद आँखों को देखेगा। दोनों बच्चों की आँखें राल फाडकर निकली रहती हैं। उधर देखते हुए अचानक अली की गुठली नाक के नीचे जूही की कल की तरह हँसी खिल उठती है। परम आम्था की हँसी। अली उस समय धिलकुल नाज़िमा के बच्चों का बाप लगता है।

साथ वलेघाटा का समाचार पाँच कानों से होता हुआ कूरियर व होशियार कानों के डर्ड-गिर्द चक्कर काट कर गनव्य तक आता है। ओ समाचार विल्डिंग का सीना चीर कर हू-हू करके भेड़ी की ओर दौड़ जाता है—ठीक उसी तरह जैसे खिदिरपुर-कॉलेज स्ट्रीट मियालदाह के मोड पर पुलिस के साथ मुकाबले के वक्त टीयर गैस का गोला पाँव के पास गिरता

या और चापाकम के पाम वाले रास्त पर या नामे के बिनारे पटी बोरी के टुकड़ से पकड़ा जाता था। जसती हुई गैस का मोसा। इंसान को रमाने वाली गैस। उमान धेनियाहाट्टा का सारा जोक-दुख आय ममने की दुबरे की तरह बिल्डिंग तक पहुँचता है। तिमिजिसे के कमरे में दुबरे पहुँची 'असी फिरफतार'। बिजयदा की सीधी-सागी बीबी-बानी बीबी छिरि भाभी ही लुबरे बंधी। उनकी गौर म सुखिया से बीमार लड़की का बिचड़ा शरीर। छिरि भाभी की आँखों में अब सतरे का काजम लगा है। काजम-भगी आँखें। सोनापुर की सक्की के पाँव रेंवने वाले झोठ हाथ धान के बोझ में लपकती आग देखकर और मजबूत। तेजी से सीढ़ियाँ उतर कर खतरे की छाई जैसा नामा उभाय मारकर पार कर गयी छिरि भाभी। और बिचड़े-सी लड़की ने परम बिश्वास के साथ माँ के कंघे की टेढ़ी हड्डी में मुँह पाड़ दिया।

असी के बारे में लुबरे मुन भभक उठा था गौरा का चोट घाया सीना। एक अनमोल सम्पदा खोकर बैद्य के दुक से सीने को खोद-बादकर पाताल छोडा था। आकाश-पाताल। सोना की माँ की तरह विभिन्न लोक उपजा था।

'मृत्यु ने आने या बीमारी से मरन पर मन को फिर भी समझाया जा सकता था—वह जो जिन्दा'।

असी का बच्चा जैसा बेहतरा और समझदारी की बात याद हो आयी। साथ ही गौरा का सोना भी याद हो आया। लड़खलाते हुए दोनों पाँवों से धर सीन्ने पर मन के रोटी की तरह फूल उठने पर आँखों के सामने हुताशा का धुंधला आसमान लटका कर जैसे कोई गौरा के कान में सोना की बात कहता है। जात्रादल का तटस्थ बिबेक¹ हारमोनियम की तीन मन्वर रीढ़ बना रखकर एक हाथ पख की तरह खोलकर टेढा होकर दौड़ जाता है जोर धोला, म अ न।" हठारमुक्ति तर्क सिद्धांत उब घामा छोड़कर असी के राजा की तरह आसमान में मूसते रहत है।

1. जात्रा मारनों का एक पाठ जो अन्य सभी बरिखा के मन में उठने वाली बातों का मंच पर बीच-बीच में जागर हारमोनियम बजाते हुए था कर

साहम का वायलर सीने मे लेकर ए० वी० नाम का जो इंसान हाई पावर का चश्मा पहनकर तूफान उड़ाये जा रहा है, उसकी बात याद आती है ।

नारानदा का मामला अलग है, उनकी बात दूसरी है । पर्वत की तरह स्थायी रूप से जमे हैं वेलियाहाट्टा के सीने पर । अटल, फिर मिनती भाभी की तरह शान्त चेहरा, जैसे इंसान का हृदय । आदमी है ही ऐसा । आमरण ऐसा ही रहेगा । जब गोरा ने सुना कि कॉलेज के छोकरे वीरू ने पहली बार पकड़े जाते ही सब-कुछ उगल दिया है, पूरी एल० सी० (लोकल कमेटी) का नाम ही खोल दिया है तो क्या उम समय भीतर-ही-भीतर अविश्वास के कंटीले पेड ने सिर नहीं उठाया था ? कामरेडों के शरीर की गर्मी के भीतर बैठकर भी बर्फ में दबी मछली की तरह आँखों की बर्फ नहीं गली ?

और डुडवक बातक से दोनो हाथ लूले हो गये ये, 'क्या इसका अन्त मोत में है ? क्या ए० वी० के मन में भी यही प्रतिक्रिया चल रही है ? निर्रं सुर अलग है, वैष्णव मार्का—मरण रे तुह मम श्याम समान ।'

मवसे छिपाकर मन के अन्दर बात उभर रही थी । खुद से भी । जब कि गोरा को मन की गहराई से पता था—इसका नाम डर नहीं है । डर—भय अलग चीज है । व्यवित का घुटना कापता है । वेजान-वेजान-सा लगता है । या तो अपने को बचाने के लिए चूहे का दिल खोजता है, नहीं तो छून-खराधा कर बैठता है । गोरा मे इस सब का अशमात्र भी नहीं है । गोरा का मामला और भी जटिल है । (अब वह खुद ही अपने मन की चौर-फाड करने लगा है) और भी गहरा ।

एक्शन । सग्राम । सशस्त्र सग्राम । फुलझडी की तरह । आतिशवाजी की तरह । सग्राम फूट पडा था । गांव-गिराँव में और अजीब शहर कलकत्ता में । एक्शन का फव्वारा छूटा था पिचकारी की तरह । हालाँकि भाटे के मरे हुए चाँद ने ज्वार का मुँह घुमा दिया है अब । अब हवा में उकसाने वाली गैम की कमी है । अब चुने हुए कामरेडों की लाशों सख्त जमीन पर विछायी जा रही हैं । जेल की दीवार, प्रकृति विज्ञान में पढे कलसीगाछ की तरह गद्य सुँधाकर एक-एक जवान लटके को पेट के अन्दर खीच रही है । लोगो की जवान पर कोई और बात नहीं है । लडकों की भोग्म-प्रतिज्ञा देखकर जो मध्यमवर्गीय बाप कभी थरथर काँप उठा था, अतीत की

स्मृति टटोलकर जिसके कानों के दुबसे परचे पर आर्तका का डंका बजा या मगर अब ? अब उसी के सामने उसी के हाड़-मांस से बने ये सब जीवित प्राणी गोसियों की आग में सीने की सफ़र हड़िबयाँ निकासे चीख रहे हैं बाबा ! बेसो में मरा नहीं हूँ । बेसो-बेसो में किस तरह जिया हूँ । मुगाऊँ के लिए जिस मुस्क में बषाइयों में मिसाबट की जाती है जिस रेल के सीम में छिहत्तर का अफास खुल की तरह अभी भी सपा हुआ है निहायत ही ईमानदारी से सारी जियगी बिठाकर जिस रेल के प्रति पबित्र प्यार को जिस में छूपाकर भी जो आबमी अक्षम है वह ऐसे समय म क्या कर सकता है ? जिसके लिए आरमहत्या असंभव है जबकि रत्नाई का समुद्र सुनसाने वाली धूप में मूल चुका है उस पिता के रने का खिचाव तब कैसे संभसेमा ?

प्रेम पुजारी' बाभे एक्शन के दौरान खमने से पैदा हुई गन्ध अभी भी मोरा की नाक में समथी है । पतंग की तरह कल्ले खाता हुआ बीक पार्क सिनेमा-हॉल के कांटेर पर टूट पड़ा था 'बीन-बिरोखी मूठा प्रचार जमा डालो फाड़ डालो ।' कांटेर से टिकटों की गहड़ी लेकर फाड़कर हवा में उड़ा दी थी बबंडर की तरह । उन कापडों के टुकडों ने उड़-उड़कर दीवार पर टैपी हुई नायिका की अक्षनमी बेह का लज्जा-निवारण किया था । साथ आठ लोगों के स्वबाड में नकरत और ओल छसक रहा था । जबकि हॉल से दो हाथ जरा पीछे हटकर लोचरों के साथ लड़ाई शुरू हो गयी थी और गोरा महज एक पेटी लेकर कमर बुमाकर बड़ा हो गया था । उस समय पठा नहीं था वह भीथा हुआ 'मास' है । उससे बिनबारिमाँ बिबेरते हुए किरणें नहीं उड़ेंगी लोचर का सीना फाड़कर अभी हुई नकरत का कोई भयंकर गर्जम नहीं होना । उसकी हथेली मरम हो उठी भड़कने वाली आव धुई के आस और बिस्कोट की बात सोचकर—बीसे मुट्ठी में ही एक ज्वाभामुखी फट पड़ेमा । अपने को बचाते हुए होलियापी के साथ लोचर लोम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं और पीछे हटते हैं । अचानक बाँध चीककर मोरा न 'मास' फेंक दिया । दंगली जवान उस हाथ पीछे हट गये जबकि 'मास' धीरे-धीरे आरभयजनक कोमसता से भरती छूटा हुआ मुड़का । मोरा के दोनों हाथ खाली हैं । जैसियाँ खुल गयी हैं । असंभव साहस क साथ

फेंका गया सुतली वाला 'माल' सामने पड़ा है। फिर भी गोरा सिर्फ़ इम-लिए भाग सका था, क्योंकि खोचर लोग घबरा गये थे। उसके बाद खाली पजे की ओर देखकर कितनी बार भीगे हुए 'माल' की बात याद आयी है, बाद के दिनों में जलने से बने घाव कितनी बार सीली हुए सुतली के 'माल' की बेजान स्मृति लिये ताजा हो उठे हैं।

रात ने धीरे-धीरे चलना शुरू किया है। मोमवत्ती के काले धागे की तरह असह्य रात भी जलकर टाक हो रही थी। तिमज़िले के कमरे को इन सबका खयाल नहीं है। वहाँ अँधेरी रात में जगली इसान की कहानी चक्कर खाती हुई आगे बढ़ रही है। इसान कब पाँव पर खड़ा होकर, पीठ तानकर, सिर को झटके देकर उठ खड़ा हुआ, कब उसकी जवान से बोल फूटा—यही उसके अतीत का इतिहास है। पत्थर के भोथरे हथियार हाथ में लेकर भयकर जानवरों के साथ लड़ाई। इसान का सग्राम, सग्राम का इतिहास। मत्तर के वेलियाहाट्टा की इस वििल्डिंग के कमरे में पगली हवा चक्कर खाते हुए सूखे पत्ते, धास-फूस उड़ाकर लाने लगी।

नारानदा के जबड़े की चिनुक-हड्डी अभी भी शात है। सुस्ता रहा है, "सग्राम चल रहा है दास समाज से स्पार्टकस।"

सूखे की आग से जला मोतीहारी धाने का कनाई आजि, खेसारी सिंझने की भाप और अडतालीस की लड़ाई छेड़ने के गीत से जिस नारानदा ने बात का बीज बोया था, वही अब सारी मानवजाति के वर्ग-दुश्मन के खिलाफ लड़ाई के हजारों सालों के इतिहास की जीवन्त बातों को मोचते और सुनाते हुए गुरू-नाभीर है। मज़दूर का विजय-गीत, वीरता की गाथा।

हवा के झोंके से अचानक मोमवत्ती बुझ गयी और पानी-सी सुबह, धुआँ-धुआँ-सी सुबह फिमल पड़ी तिमज़िले के कमरे में। मरी-मरी-सी रोगिनी का एक टुकड़ा लीफनेट के वोल्ड टाइपो पर आ गिरा है 'शहीदों का आत्म-बलिदान व्यर्थ नहीं जाता।' 'व्यर्थ' शब्द फिज़ूल में पानी-स्याही-धूल से मलिन हो गया है। सारे कमरे को घेरे धूल की गंध। हवा के झोंके रह-रहकर उसे उकसा रहे हैं। किसी ने लम्बी साँस ली। बूड़ों की जोरदार बास्था चरमरा उठी, "अलवत्ता कमूनिस होने के लिए सब-कुछ चीर-फाड़-कर जानना पड़ेगा। यह सब-कुछ मत्र-तत्र झाड़फूंक नहीं है।"

मियारन तैयार ही था उसका पतला हाथ हिमा फिर गो हाड़ में बसी लग जायेगी।

नेपु के बुख-सोक के पायाज ग दबकर खान्ता के पतल होंठों पर स्पष्ट होंसी "महीं नहीं महीं ऐसा क्यों ? जसमी भात जानकर उतरना पड़ेगा किसकी सड़ाई कौन साथ देवा किमके माथ सड़ाई है—ऐसी बहुत-सी बातें हैं। बाकी सब चमते चमते सीखना पड़ेगा।"

नेपु को खीच ले गये। उसके घाब एक भी पल ऐसी नहीं कटी जब खान्ता की आँखों में पानी के चिह्न न हों। बिचिन कोमल चिह्न। नेपु भी वैसा ही था। खादी के दिन ही होंठों के कोनों में होंसी बिबेरे मातवा बिने में कुंवारी थोटी बँसी मेढ़ पर से छेठ-मखदुरों की हुँडिया के मात में से हिस्ता लेने को बीड़ा था। बेस का भात न खाने पर नेपु की ठमसरी नहीं होती। इतनी सोच इतन बिचारों के बहिस्व्या-पायाज से खान हाथ नीचे मिट्टी में भासल भूकंप की संभावना मिये शास्ता के मन की किसी गुप्त बरार में एक बिम्बु पानी जमा रहता है। जबकि सड़की का बेहरा रहता है वसुधरा की तरह सहजजीम निबिहार। बो मुटन मोड़कर तनकर बँठी है। कमर बँधकर उतरने की ताकत और उसकी माँग की धाये की तरह क्षीण रेसा में खोरदार आस्था।

बिस्त्रिय के माथे पर अनुप-डोरी की तरह तने एरियल के तारों में खोक-बिह्ल की तरह कासा रंग लगी भी सिपटा हुआ है। और मेड़ी के सीन से निकारी बगुने की तरह हुआ बँठकर आ रही है। हुआ जैसे उनके सारे नदीरों पर पाँच-पाँच उँवमियों की बाप मया रही थी। उँवमियों की पाँठें। सारी रात मीन-मेख सोच-बिचार, गहरे तर्क और अज्ञाने ज्ञान का स्वाद जीभ के कटिदार सिर पर लेकर आँखों में सपन की बस्यना उकेरकर अब भोर होने लगी है। रात भर बनने का सूर बजता रहा है। कहीं जैसे छापी फाड़न नामी प्यास लेकर जान झुकपुक कर रही है। बिदनी वैस बोनों हाथ ऊपर उठाकर इनकमाबी नारे मबा रही है। इमान द्वारा बाप के बाबिष्कार की कहानी कम्युनिस्ट इस्त्रहार के 'हुनिया के मखदुरो एक हो' नारे में आ टिकी है।

मियारन का कस खीच उसे नाचनों की पीरों से सु

“कलकत्ते में रहने पर गनती सुधारने का समय नहीं मिलेगा, ऐसा लग रहा है। निश्चय ही वीध डालेंगे।”

किम तरह चीर-फाड़कर मभी कुछ को परखा गया है। सभी कुछ समझने के लिए चीर-फाट के अलावा और चारा भी क्या है। विल्डिग की घुंघली सुबह की रोशनी में सुकु समझदारी लिये अब तक चुपचाप बैठा है। कुछ कहना चाहता है तो खच्च से जैसे कुछ विघ्न जाता है। वात नहीं निकलती। इसीलिए सुकु ने घूमा-फिराकर कहा। उसने जितना समझा है, उसी को लेकर वह मोतीहारी जाना चाहता है। या वहाँ जहाँ हँसुए से धान काटने की खम-खस आवाज जगती है। झुड़ बाँधकर मजदूर लोग काम पर जाते हैं। सुकु दौड़कर उनके दल में मिल जाना चाहता है। वू से जान लिया है कि खातमे का वारंट लेकर बेलियाहाट्टा को छानते हुए पुलिस सुकु की खोज चलायेगी। कलकत्ते में रहने पर, आज या कल, किमी दिन वीध डालेंगे। और एक बार पकड़े जाने या गोलियों से वीध दिये जाने पर सच्ची दिशा में इसानो को खडा करने की फुरमत ज़िदगी में नहीं पा सकेगा। एक गलती की कीमत एक ज़िदगी से चुकानी पड़ेगी—जो ज़िदगी बहुत पहले ही से आधी समझकर आधे आवेग में मजदूरों के हित में समर्पित है।

सुकु की वात पर जैसे स्नेह, प्यार, विश्वास के स्वर्ग-धरती-पाताल उफन पड़े, “जायेगा मेरे साथ।”

नारानदा के आश्वासन पर लडके का स्वर वच्चे जैसा हो उठा, “अगर पहले से ज़रा-सा भी जानता।”

फिर फर्श पर लकीर खीचना। जबकि इससे भी थाह नहीं मिलती। सुकु की मुट्ठी खुली और उँगलियाँ धूल-भरे फर्श की दरार में फँस गयी। शान्ता की आँत्रों में जाने कहीं से एक बूँद चमक उठी, बालू के कण की तरह, निर्मल पानी की तरह। कहीं जैसे दर्द की खान है। वर्गगत नफरत की घघकती आग। आग की ज्वाला। और जननी के सजल स्नेह से भीगी, ताड़ के पत्तों से बने पत्ते की हवा घर के अन्दर तितली की तरह फरफराने लगी। टूटे पत्ते की डडी से जाने कैसी कैच-कैच की आवाज। और पखा

कमर कमकर फिर मग्राम के अकुर फूटेंगे तपते सूर्य की उम्मीद में। काँसे की एक थाली भात की तरह सूर्य (क्राति के प्रतीक के तीर पर मूर्य का उगना घिसी-पिटी उदित है, फिर भी वे लोग इसे सोचे बिना नहीं रह सकते) धीरे-धीरे आगे बढ़ेगा, वँटवारा करके खाने के लिए। और यह विराट देश मिर उठा सारे अग-प्रत्यगो के साथ उठेगा। यही तो स्वप्न है। यही तो गौरा और सुकु, निवारन, नारानदा और शान्ता की जिंदगी है।

विल्डिंग के तिमजिले का कमरा, बेलियाहाड़ा के माये पर हवा में निशान की तरह, अनियंत्रित आयेग से थरथर काँप रहा था। “हम लोगों को एक स्टडी-मर्कल खोलना चाहिए।”

शान्ता की इस बात को पूरा करने के लिए और भी कितना कुछ जरूरी है। लडकी पागल की तरह बोलने जा रही थी। तिल-तिल करके तिलोत्तमा¹ बनाने के लिए छह कारीगर अपनी जली जिन्दगी के शोक-दुख-आनंद और आग के पंचमेल अनुभव में, अपने हाड-मांस की मिट्टी को पीनकर, छानकर, घोलकर एक दुर्लभ मूर्ति बनाने में डूबे हैं। रह-रहकर वे मार्क्स, लेनिन, स्तालिन की बातें कर रहे थे। और इस विशाल देश की बात। एक सही रास्ता पहचानने-खोजने में, तिमजिले के कमरे में एक सूक्ष्म बिन्दु पर सारी अनुभूति केंद्रित कर, इन्द्रियों के अर्घ्य से सीचने में मगन हैं। आँखें सुइयो की तरह चुभ रही हैं। विपण्ण धूल, फटे कागज और मुर्दा रोशनी में वे जैसे कोई खोयी कील या आलपिन मरम्मत के लिए खोज रहे हैं।

लीफलेट के ढेर पर हवा लोट-पोट मचा रही है। नारे कमरे में दो-चार लीफलेट और फटे कागजों के टुकड़े उड़ते फिर रहे हैं। शान्ता के बालों में तिनके। तूफान की-पी गध। जबकि उन्हें होश तक नहीं। उनके सीने के बायीं ओर हृत्पिंडों में न्वचछद उतार-चढ़ाव, रक्त की सफाई-धुलाई। और शाति एक आश्चर्यजनक शाति। झर रही थी सुकु की बातों से। क्राति जैसे एक शिशु का जन्म है।

उसके बाद विराम। बातें टूटती, गलती जा रही थी। कान के पाम

1 अद्वितीय सौन्दर्य की प्रतीक, एक मिथिक नारी।

टिका हुआ आम्ता का स्थिर हाथ । मारामबा की बहाली मूँछों की वरार में
 आग की काल बिन्दी । गोरा की सपना वलम बालो बड़ी-बड़ी जाँसें । मुकु की
 नाक की कोर पर बकाम का पसीना ज्योती जैसा पसीना । निवारन क चीन
 में कच्ची आग । और शिशु की तरह बात मन्दू का बिकना बेहरा । बुझा
 की बिलडी हुई हँसी विभिन्न खुशी से ताली बजाकर जैसे नाच रही हो ।
 रात-भर के कठिन मन्त्रेपण में उम्होंने पृथी का आविष्कार किया था
 जाति की टेढ़ी-मेढ़ी कठिन यात्रा करते हुए । और जब सकुद भाठ की तरह
 सुबह के समय खूबी । छाति । जाति जैसे कमस क पत्ते पर बूँब जैसी मिन
 निभा रही है तिमझिने के घुसर कमरे में ।

माँ की छाती से निकलन वाली सज्जेद वृक्ष की धार-सी धोर अभी नहीं
 हुई है । हृत्पारे सुनो रंजिया के वलाम और मङ्कड़वाते मम्पट वराबी के
 भसन फिरन सायक क्लिपुट बेंधेग यमी मी बमबादड़ की तरह मूस रहा
 है और टर्पा-टर्पा कर रहा है । पुनिंस खोबर सी० आर० पी० बालो
 की संगीतें और भारी भरकम सिपाही-बूट ठोक ऐसे धक्क ही खँधरे क परदे
 में से कन्नी काटते हुए, बूटना ठमते हुए बमत हैं । बड़ी-बड़ी जाँसों को
 भसीटते हुए । घामन दो बड़-बड़े कुत्ते बू सूँच रहे हैं । बनेघाटा की मन्दगी
 में सड़ी मछली और मरी बाय के पेट में नाक धुनेबकर बू सूँच रहे हैं दोनों
 कुत्ते । और सारे बेसियाहाट्टा की जान पार्नी की रीढ़ की हड्डी की
 तरह अभी हुई भूख की असीम टाकत की तरह विस्डिग मूँह बाये हुए ।
 सफ़्त सिबास में एक वगमी पुनिंस भासा जोधर सबा हाप सन्वी बीभ
 निकालकर गर्म हवा छोड़न सया । कोल बम्पनी की बिस्कुट की याड़ी
 टम्पो ठसा और एम्बुलेंस क नेककास के बीच से राइकस की नसी निकाल
 कर जाने किसने नाइटयाड किमोर क गसे पर बूट जमा बिया सात ।
 बिस्ताते ही मोली गार पुँवा । अस्वी बास कहीं हैं सब जल्दी
 अस्वी ।

किमोर में इस सतर में तरह में पाँच रखा है । तेरह साल की उम्र में
 ही पथरीली रातों में जागते रहना और पहुरा दना सीख गया है । ए० बी०
 के साथ मङ्कका छाया की तरह रहता है । छाया या काया ? ए० धी० के
 मबा बरीर की छाया में हाड़ मांस के माय में जिस शिशु ने बसेरा

वनाया है, क्या यह वही किशोर है ? इम कच्ची उम्र में ही लडके ने, बडी-बडी आँखों में नींद की मरस नमें तोड़, जाने कब धनुष की डोरी बांधी थी । कहता है, पिंजर की हड्डियाँ खोलकर दुश्मन का कलेजा छेद देगा । फिर भी लगातार तीन रात जागने के बाद शायद जरा झपकी आ गयी थी, नीने की खोलल में फँसे नीले नपने ने शायद पतंगे की तरह पखों की आवाज की थी । और नन्हें लडके को झपकी आयी थी । झपकी आयी थी धूल की गन्ध उडाकर तिमजिले के छोटे-से कवूतरखाने में । जली हुई मोमबत्ती के काले पलीते के पिघले मोम पर लीफलेट के 'शहीद' शब्द के ऊपर । पुराने निपिद्ध इश्तहार की वू में ।

'सखिया' और सडी-गली मासल 'हिंसा' के निष्ठुर शब्द लेकर कहीं जैसे भाग फूफकार उठी । साँप के फन की तरह । पतली चिरी जीम में । जहरीला डक । किसी निष्ठुर रमणी का बदमूरत काला तिल, तिल पर बाल सरसराने लगा । 'खा, खा, वेअकल खा । फँस-स-स-स ।'

दोनों हाथों से वेलियाहाट्टा का नरम शरीर जकड लिया । खून की गर्मी ने शहीद-गन्ध फैला दी । गरम सीसे की गोली से वे लोग वेंलेघाटा में कल्लगाह का जला हुआ चेहरा उकेरना चाह रहे थे । एक इमान की आँसू-नाक जलाकर-झुलसाकर, वेंलेघाटा के सीने पर उसका चमडा तानकर फैला देना चाहते थे । नगीत की नोक पर उसका सिग काटकर उसके नीचे लिख देना चाह रहे थे 'जो सूअर के बच्चे, हरामी की आँलाद क्रांति करने चलेंगे, उन्हें इम तरह ।'

गभीर वेंलेघाटा में रहने वाले सरल-सीधे इसानों की घर-गृहस्थी में प्यार और नफरत एक ही डठल में लगे जुडवाँ फूल हैं "भागिये । भागिये । कामरेडो भागिये ।" 'कामरेड' शब्द के धीमे उच्चारण में तेरह साल के लडके ने सारी जिन्दगी का प्यार, प्यार की गहरी निष्ठा उँडेलकर अपनी मातृभूमि भारत के नीने से, अपने ही रक्त के लाल कणों से भीगी एक मुट्ठी हरी घास उखाड ली । वह घास लडके की ढीली मुट्ठी में, विजयदा की काली-कलट्टी सूखिया-ग्रस्त लडकी की मगलकामना में वेंलेघाटा के जले हुए सीने पर फैल गयी । और वेंलेघाटा शहीद की इज्जत लेकर स्थिर हो गया । वेलियाहाट्टा, पुतलीकल का वेलियाहाट्टा—वही जो ज्वाबो

की पुतली बनाता है। इंसान के सपनों से रची गयी पुतली। बगियाहाट्टा की क्रस्मपाह की धसी आंस उकरी नहीं जा सकी क्योंकि मेंडकों के मूड की तरह बसी जपटी बस्ती में एक कामा यन्त्रा गया सड़का बार-बार 'उँवा-उँवा' करके चिल्ला पडा। भूसे पेट पर सात मारकर मजबूत ईसाग अभी भी घामा घाते हैं। दिस्तगी करते हैं।

बप्रदव बसियाहाट्टा का ऊँचा गिर। किमोर नाम के लड़के के खून में भीगा हुआ बनेपाटा पापाण की तरह लडा रहा। पाम क घर की किमी एक तिड़की से बेमसादेन की विसो जमी क्रिस्मत बाभी मौ न लड़क का नाम लेकर बास से पुकारा 'मुन्ना रे।

और रिबास्वर की गभी हिसहिसा उठी।

तीन बन्दर खाकर बीस गिरने से पहले मुहु के घसे का साइरन फट गया, "अध्मल माओ मुम-मुम जीयें।

सत्तर की मरी आस उघड़कर बिस्त्रिब में हुर्याकांड। अकबार के बदरम पीस पानों में संघर्ष की पुनिसी रिपोर्ट। और तिमजिसे के अड्ड में खून के फासे घाघ। और अन्त में सुबह हुई। बाजई। मज्जेद मोम की तरह एक बूंद आँसू को तरह घास पर जमक उठी। भेड़ी की मम हवा में मुबह की मग्न।

किताब की भाषा की बजल में मुहु बुड़ो और गिबारन को एक छतार में समाया गया था। जाल्ता को बचान में निवारन पकड़ा गया था। अब तक वाल्टा सरगार्गी कॉमोनी के गिरापव शेस्टर में पहुँच गयी होमी। अककठरे की तरह रैन का कामा रंग मोरा मारानबा और मडू को पेट के भीतर लेकर बेचैन हो रहा था। और तमाम ईसानी धामा-आकाशाओं को अपनी आँख की पुतलियों में सिय मुकधरों की छतार में पईच-पईच जिन्या फेफ़ल स्वाभाविक गति स फूल पिचक रहे थे। मुहु भी यही कहता था "दुश्मन की बुनेट के सामने लड़ हाकर मरा फफड़ा अगर एक बार भी हिला तो मैं कमूनिज नहीं हूँ। या समझना मेरा इंसान नहीं है।

हाइ-मांस में पार्टी को जिन्या रकमे की गिबिड़ आस्था समेटे पाँचों की बेह बेनेचाटा की धरती पर बह गयी। फिर भी बेसबाटा की बचान पर कोई शिकवा नहीं। मिट्टी की गहरी परतों में यह सारी कहानी प्राचीन

शिला की तरह स्थिर। बारूद की गन्ध नाक के सिरे पर नचाते हुए जैसे किसी ने हू-हू करती एक खाली हवा उगल दी और भात के लिए तरसते शरीर के कोपों में ज्वार लाकर भी वेलियाहाट्टा गभीर है। भयानक रूप से गभीर।

जबकि वेलियाहाट्टा का धू-धू करता मैदान, बालूचर का उदास उदार सीना, नैडा घम्टी के जले हुए चमड़े के नीचे अनगिनत सकेड¹, जालकाटी², कटोरी वाले माल³ और प्लास्टर पेटो⁴ ए० बी० ने डम्प किये थे। वेंटरी के काले बक्ने के भीतर चार ताजे माल अपने हाथ से बनाकर, तपसे के डेड हाथ वाले क्यूतरखाने में पटी खटिया के नीचे छिपाते हुए बगल की खोली की मौमी को बुलाकर नुकु ने कहा था, “कमरा साफ करने जाओ तो दूधर खींचतान मत करना।”

लडके जब-तब आते थे। एक पतली किताब खोलकर एक-दूसरे के हाथों से लेते हुए पढ़ते थे। मुना है, इमान का दुख मिटाने का सीधा साफ रान्ता किताबों में लिखा है। मौमी के कपाल पर लगी सिन्दूर की बिन्दी पसीने की बजह से पमीज जाती थी। पसीना छूटता था लडको की बातों से। उनके हावभावों ने, “पेट का लडका न होने से क्या हुआ, पर तुम लोगों का पार नहीं पाती। जरा बतता तो सही, क्यों?”

सीने के भीतर बारूद का कारखाना। और जन्म की नाल काटने वाले दुख-दर्द की बात लेकर भी पुतलीकल का वेलियाहाट्टा नुकु, निवारन, बूडो और फिशोर की लाश की तरह स्थिर। हवा नहीं है। ऊँही भी एक पत्ता नहीं हिल रहा है। वैन के इजन की दबी आवाज उठ रही है लगातार। और कूरियर की जवानी समाचार पाकर ए० बी० शायद पागल की तरह बिल्डिंग की ओर दौड़ता आ रहा है—जने हुए शरीर को पटकते हुए। शायद दाँतों की दरार में आखिरी पेटो फाड़ देगा।

किस जमाने में जगल-झाड़-झखाड़ साफ करके इतान ने यहाँ सिर उठाया था, जानें। वेलियाहाट्टा के कठिन रहस्य का किस पता है? कारखाने के मजदूर-मजदूरनियों का बेलेघाटा। मस्ते का बेलेघाटा। पुराने गीतों का बेलेघाटा “जिमका न हो पूंजी पाटा—बह रहे बेलेघाटा।”

घाने में लाया गया। पुराने कागजों के बडल, चन्द मोटी-मोटी कापियाँ, डटे, मगिनें, राइफनें, फोन, बॅचे—सभी कुछ गाली-गुप्तार की चोट से उलट-पुलट गया। कन्वल डालकर थोड़ी देर तक पीटा गया। उसके बाद कचूआ। पाँव के तलवे पूड़ी की तरह, गोद की तरह रात-भर में फूल गये। रात कटी लॉकअप की पेशाब की गंध और मच्छरों के डक और बेजान बुझार-मरी नींद के बीच।

उसके बाद जिरह। इटैरोगेशन। गिद्ध की चोच की तरह अफसर की नाक। लिपा-मुता चेहरा। चेहरे के एक-कोने में घुँघली अनास्था और सदेह के घिनौने दाग। चाँदी के पुराने रुपये की तरह चमकती हुई लालची आँखें। और खरखराती हुई जीभ से गालियों की बौछार।

चोटियों की तरह सभी अंगों पर से रेंगती हुई मौत आ रही थी। गोरा की रीढ़ की हड्डी, फूले हुए पाँव के तलुए, उपाडे गये नाखूनो की उँगलियों से मरमराती हुई दिमाग की ओर बढ़ रही थी। सियालदाह के पतले-दुबले, बीमार कुली के माथे पर ढाई मन की आलू की बोरी की तरह भारी माथा वेनेघाटा थाने के लॉकअप में गेंद की तरह, रबर की गेंद की तरह, मौत लेकर उछलने लगा। और क्या! एक किस्मा खत्म होने लगा, दुरमुट ने पिटी हुई एक आम्था, पच्चीस-छत्तीस साल की एक जिन्दगी। लॉकअप की गजी दीवार, छिपकली की जीभ जैसे रोशनदान, जूँएँ और गाय के चमड़े के बूट की आवाज, गोरा के इर्द-गिर्द हाथ उठाये नगे नाच रहे थे। स्मृति के घागे, गाठें, जालकाटी लाँघते हुए गोरा जैसे बेलमुडा मैदान की ओर बढ़ रहा है, जहाँ पेड़ के नाम पर एक टाँग में खडा बकफूल का पेड़ जम्हाई ले रहा था गहरे आलस से। होमियोपैथी का बक्सा जिस बीमारी को जिन्दगी-भर दूर नहीं कर सका था, उसी बीमारी के साथ टक्कर लेकर गोरा जैसे दस-बीस लडको ने सोचा था 'इसका मतलब है जिन्दगी। मुल्क का चेहरा बदलना पडेगा।' सफ़ेद होठों पर विटामिन की कमी से बने घाव को फँलाकर माँ कहती थी। "देख, तेरी बुआ का लडका एम० ए० पास करके कॉलेज में पढा रहा है। हम लोगो में भी तो जरा उम्मीद जगती है।" गोरा उस वक्त उस नारी की ओर सीधी रेखा में देखता था "में भी वैसा कुछ बनूँ, उसके बाद गरीब-दुखियों को थोडा-बहुत देखूँ, यही न?" और

सेइस नम्बर की छारखस्त बीबार के सहारे चलकर लौनड़ा समाचार जब फुटनों पर टूट पड़ा तो गोरा को बर्ष में धारण करने वाली माँ के सफ़ेद पाव सारे बदन-भर में फैल गये और पूर्वी अगाम के विनापी स्वर में फूटे :
 "किस्मत में यह भी रहो !"

नहीं जानगी, नहीं समझेगी वेट के सड़ने से क्यों वह जोखिम उठाया था ?

बीच में एक आवाज हुई हुई से हवा चीबने ली। सॉर्रप। गोरा चांद मुहस्ते के बड़े उम्र के एक किरामी की तरह भोले-माले बेहरे का एक इंसान उसके सामने था। बीच में टेबुल की बमकठी बानिठ। उस बमकठे रंग के ऊपर कुली हुई एक कापी और आदमी का उमटकर रखा हुआ चामा। चामे की कासी बंडी और आतिशी काँच। चामे ने गोरा के कुत्रार से तपते छड़ब चहरे और पावे के कटे दाग की धार देखा पा।

पहले मुँहें रखते ये न ?

'हाँ।'

"सौबिये चारमीनार पीते हैं न ? बंगवासी से पास किया कनिज मुनियन के मठा रहे अचानक मुनियन क्यों छोड़ बी नहीं छोड़ी ? अच्छा अच्छा आपका यीमनेल क्या कनिज में हूँ किस बात से पहले प्रेरित हुए यानी हूँ मुस्क की हामत तो बाइई दयनीय है एक बदलाव।

तरीक आदमी जैसी बातें परनी के पीते से मपी मुसकान पैन के निभसे हिस्से में सोने के यानी की अस-खस आवाज चामे के बिनमुमा कामे रम के अन्दर से निकल आया एक जोड़ी ब्रूट एकदम अचानक।

कोर में कौन-कौन थे ?

"मैं कोर मेम्बर नहीं हूँ।

'ए० बी० का सेक्टर कहाँ है ?

'सड़क पर मेडाम पर।

'ठेरी माँ को छोड़ दिया है बयारा टैं-पें की तो ।'

कमर से ऊपर पूरा कपड़ा उठाकर, अँधकोप सहित यौनीय गोरा के मुँह के सामने लाकर अऊसर (एस० बी०) अपनी जाँघ पर बप्यड़ मारने लगा "पी सासापी मुत पी।

पीड़े की तरह आदमी का बेहूष और माँकों के आगे कच्चे मांस की

तरह झूलते हुए अडकोप, सारी दुनिया को अलग कर कुत्सित जुल्म की तरह, बदसूरत मेढक के पेट की तरह हिलने लगे ।

उसके बाद सब तेजी में जैसे हृदबडाहट में घटित हुआ । फोटो खीचना, हाथों की छाप, नाप-जोख, जन्म के निशान की खोज, सी० आर० एम० । तीन-चार थानों में खींचतान—लाल बाजार, लार्ड सिन्हा रोड । और एम० बी० की चमकीली तोड़ । फरेवी सौम्य चेहरा । और धराफत ।

उनके बाद जे० सी० । जेल । कारागार । जेलखाना । पिंजरा । पिंजरे का पछी । किसने कहा था “कम्युनिस्ट का असली इम्तहान है कत्लगाह, जेलखाना और गोलियों की बौछार—“मन्दू या सुकु ने ? बूडो या सोना ने ? या कि नवो ने ?” ठीक याद नहीं आता । कठ के भीतर काग पर किमने बात नचायी थी और नारानदा कहते थे “जिन्दगी-भर मजदूरो के झंडे के नीचे रहना पड़ेगा, तब न ?”

केस-स्टेबुल के डडे के आगे पहली गिनती देते हुए, उकड़ू बैठे गोरा से नारानदा की भेंट हो गयी । नारानदा का गोरा से पहले ही प्रेमीडेंसी जेल में चालान कर दिया गया था । जेल के सातखाते में । अडतालीस के कामरेड लोग भी वहीँ रहे थे । और सैतालीस से पहले ए० बी० के एनाक्रिस्ट पिता ने एक गोरे साहब को सातखाते की सीढी पर थैले से पीटा था । सातखाते की मीढियों में बदित्व की यातना में अधकार बना रहता है । और दुमजिले के लम्बे हॉल में दौड आती है आजाद हवा । हवा में पुराने जमाने की गध । रात गहरी होने पर वह गध सीने में लिये दो-एक अघेड उम्र के कामरेड हिजली के शहीदों की वन्दना करते हैं —

‘हम लोग तो भूले नहीं शहीद ना ही यह बात कभी है भूलना

तुम्हारे कलेजे के खून से रगा है जो अँधेरा जेलखाना ।’

दो फटे कम्बल, कम्बलो में अनगिनत छेद और थाली-कटोरी बगल में लिये गोरा सातखाते में हाजिर हुआ था । सातखाते के दाहिनी ओर बड़ा चौका । हजार आदमियों के पेट का जुगाड इसी बड़े चौके से किया जाता है । सजायापता कँदी और फालतू में पसीने से तर बदन । सात सच्चियों के उठनो-छिलको से बना शोरवा, शोरवे की विचित्र वू । पीछे दीवार ।

एक फ्लेटर में तीन रातें बिता कर, मोनुमेंट तक जूलूस में चलते हुए

पक्षियों की पक्षिप्रां निगनी थी उम लडके ने। और नौहारदा के साथ वानचीन में उमने जाना था 'सशोधनवाद एक घिनौना कीड़ा है।' लिहाजा दांतों के बीच में तिनके के तरह शब्द को काटने पर जाने फैंसी एक सीधी लडाई की उपलब्धि होती त्रिप्टु को।

जबकि भगीरथ की गंगा डम मुल्क की घरती पर छिपी वाढ फैलाती है, अन्त मन्विला नदी की तरह जेल के चढे हुए तेवरो के बीच उथल-पुथल। फटे मीने में मुक्ति के जयगान के बीच कही जैसे तपस्या और आराधना का शान शीतल मोता बहता है। नारानदा ने कत्र जवान खोली थी। वाहर की ताल में ताल मिलाते हुए। वाहर की पार्टी। वहाँ भी सग्राम। घरती पर मौत के माथ जमकर जूझना, दुश्मन का मुकाबला और मही रान्ते की तलाश की लडाई। जेल के भीतर भी वही लडाई। जेल तोडने के लिए लडाई को पुकार। और जनता का मुक्ति आदोलन खडा करने की मोच में एक पक्षि में बैठकर गिनती देते हैं। जेल-पार्टी टूट रही है। और दांत पर दांत जम रहा है। भाले की तरह दीवार लाँघकर सवाल फन उठा रहे हैं। मिनती भाभी मुलाकात करने के लिए आयी थी "घाता ने हम सबको लेकर ममिति बनायी है, सिनाई-ऊडाई करके चला रही है देखो, चीडी के दो बहल से अधिक नहीं ला पायी।" गोरा के माथ इटरव्यू करने आयी मोना की माँ "अपने बाप को तो तू जानता है। बोला, औरत थाना-पुलिन क्या जायेगी माँ तो रोकर ही परेशान मत होना। विजय छूट गया है। वकील लगाकर विजय तुम लोगो का केस लडेगा उमके लिए एक बलब भी बनाया है क्या नाम है भला।"

"मीनू का क्या समाचार है? खुकु फैंसी है? छिरि भाभी?"

"अच्छी हैं, नब अच्छी हैं मिफ्रं सिफ्रं मीनू का कोई पता नहीं है।" मुलाकात के अन्त में गोरा की आँखें जलने लगी, एक असहनीय जलन।

यूँ मन को समझाने के अलावा कोई चारा नहीं है। मगर भीतर-ही भीतर थोर भी दो-चार जने फुँफकार रहे थे। भूख-हडताल लेकर सब-कुछ फट पडा।

मातवाते के राजनीतिक वदियों की मर्यादा की माँग पर भूख-हडताल की पुकार। लगातार हडताल। पेट पर रम्सी बाँधने वाली

सड़ाई। इस पर सातसाते में उधम-धुधम मचो हुई है। जेल-कमेटी टूटने टूटन की हुई। भीतर आकर जान कौसी टूट-फूट शुरू हुई है। एक वस भीर भी सड़ा हो गया है। दीवार स पीठ सटाकर लड़े होकर कह रहे हैं 'जेल के अन्दर भी खातमे का अभियान चलगा भूख-हड़ताल भिखारियों की सड़ाई है। नये बाबा माधी की बरबू मारानवा की देहाती मूँछों की बरार में ईमानदार हूँसी 'अगह समझकर लड़ाई। यह जेल है। भूख हड़ताल यहाँ बबरबस्त हबियार है।

यह जेल है। जेहल। पना खामो अतार समझकर जल जटो कार खाना समझकर, बी बसास सोप हर बकत कहते रहते हैं। चोरी-उठाई पीरी करके महीने में दो-एक बछा घात हैं साम में कम-से-कम चार छह बार तो जकर। जेल उनके भिए कारखाना है और कम्बुनिस्टों के लिए ?

—बिम्बबिघामय। यूनिसिटी।

ठेरह नम्बर जाम का पाँचु बाठ मुनकर खुस हुआ था। बहुत खुस। पाँच की सिखाई-पड़ाई बजावे की बुकान तक है। कान तक हूँसी नीचकर यह बात पाँचु ने बताया थी। उसके बाद अचानक धंभीर हो गया था 'मो पाँच घर लटककर तब दो दाने जुटाती थी सिखाई-पड़ाई कहीं स होनी थोराबा ? पढ़ने के लिए माँ कइती थी। मगर होम संभालते ही मैं काम में छुट गया। माटर के पीछे। नापबोल में सब जानता हूँ। मगर हाँ तुम एक पंक्ति पढ़न के लिए कहो तो बस ।

पहली गिनती स पहले मारानवा उठे। कपड़ का टूबड़ा सकर सुराकी में मिसा बरा-सा तल उस पर डाला। पसीता। पसीता बलाना आसान काम नहीं है। मारानवा माहिर है। नीचु की तरह दोनों पास फूसाकर बीड़ी सुलमाने में लबातार फूँक मारने की तरह फूँक मारनी पड़ती है। उसके बाद कपड़ा धुआने सजता है। उस धुएँ के भीतर दोनों आँसू साल क्रिय मारानवा फूँक मारत रहते हैं, 'थोरा डिम्बा रख दे।" तब तक थोरा ने साल चाम का ईठबाभ डिम्बे मे डाल दिया है। इस तरह ब सोप रोब भाग जलात हैं। और सोचते हैं ईसान को भाप बलाये रखने के लिए क्रिठनी कसरत करनी पड़ती है ! पाँचु के पास एक बार तमासी में दिया

सलाई निकली थी। वस। सीधे बेस-टेबुल। कोई और होता तो लेंग जमादार मेल में डाल देता।

इमीलिए लत्ते में आग। बीडी की फूंक। लगातार। तभी न ल चाय। उम चाय की चुस्की लगाकर नारानदा का दिल खुल जाता था साफ हो जाता "विश्वविद्यालय का मतलब क्या है? दुश्मन के जुल्म पस्त नहीं हो रहे हैं, और जिस यत्न में तमाम जनता को दबाकर रखते उसका नट-बोल्ड-स्कू सभी की पहचान कर रहा हूँ इम्तहान दे रहा हूँ वेइन्तहा वरदाशन का और मन की ताकत का। इसके अलावा यही वक्त है, सारी कित्तारें पढ डालो, समझो और जान लो सभी कुछ।"

और काले पांचू को वडा-सा 'अ' लिखकर और उस पर अभ्यास के लिए देकर गुरोरा ने भाटपाडे के खभे के ऊपर दूरबीन की तरह दो आंखें लगा दी। लोगवाग आवाजें करते हुए चलते-फिरते हैं। गाडी हॉर्न वजता है। अचानक मीनू का चेहरा कटी गरदन की तरह ल गया एक पतली चोटी लेकर। मीनू का कोई समाचार नहीं है।

चीनी चौके में सटे, नमाज पढने के चबूतरे पर नारानदा किसी साथ घनिष्ठ होकर बातचीत कर रहे हैं। अचानक गुरोरा को ईसामसीह उन पक्के वारह शिष्यों की याद आयी, जिनमें से एक ने उन्हें पकड दिया था। और विल्डिंग का घिराव हुआ था नारानदा का समाच पाकर। अभी तक उस आदमी का नाम छिपा है। मगर । उन वारहों से एक ?

जिन्दगी में इस तरह की कितनी गठिं पड गयी हैं। और इनको ले मजे में हो-हो हैपते हुए सारे कंदी फाइल में जमा हैं। कभी-कभी अवसन्न आती है जेलखाने के शोड पर नीम के पेड की टेढी छाया की तरह। दो होंठ सी जाती है जिन्दगी-भर के लिए। उस समय पुकारने पर भी गो के मुंह से कोई आवाज नहीं निकलती। उस समय गुरोरा वहकता हुआ ज कहीं चला जाता है। सिर्फ पडे रहते हैं दो घुटने, एक दुबला कधा, वेजा सा लम्बा हाथ। कानूनी सजा के मुताबिक। दीवार और सगीन के गे जाल के भीतर।

